सूर्यपुराणादि

२२५ रत्न

खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन बम्बई

श्रीः

सूर्यपुराणादि

(२२५ रत्न)

जिसमें

परमगुह्य ज्ञान, ध्यान, नीति, शिक्षा और अतिललित

चित्रविचित्र सुधासम हरिकी कथा है

खेमराज श्रीकृष्णदास बम्बई प्रकाशन

संख्या.	रत्न.	पृष्ठांक.
४९	दशदोषाभिधान	,,
५०	शठलक्षण	,,
५१	शिवस्तुति अष्टक	१०८
५२	संकटमोचनहनुमानाष्टक	१०९
५३	भद्रनारायणाष्टक	१११
५४	पुष्पवीननलीला	११२
५५	प्यारेकाविदेशपयानवर्णन	११३
५६	हनुमानयुद्धप्रशंसा	,,
५७	वर्तमानदशा	,,
५८	वर्तमानदानउपहास	११४
५९	पुरातनकथा	,,
६०	लँगड़ी रंगतकी	११६
६१	रागलावणीछंदचौपैया	११८
६२	आषाढ़मास वर्णन	११९
६३	सावनमास वर्णन	,,
६४	हारचोरनलीला	१२०
६५	विरहिनी विलाप	,,
६६	रागलावणी छंदचौपैया	१२१
६७	शिक्षा ककावत्तीसी	१२२
६८	श्रीरामचन्द्रजीकी विनती	१२४
६९	श्रीकृःष्णचन्द्रजीकी विनती	,,
७०	श्रीविष्णुजीकी विनती	,,
७१	चीरहरणलीला	१२५
७२	जलविहारलीला	,,
७३	चुगुलखोरोंके कवित्त	१२६
७४	बाँसुरीलीला	,,
७५	नागलीला	१२८
७६	विद्या वत्तीसी	१२९
७७	प्रलम्बासुरवधलीला	१३२
७८	दावानल पानलीला	,,
७९	पनघटलीला	१३३
८०	चकई भौंरा खेलन लीला	,,
८१	अघासुरवधलीला	१३४
८२	माटीखानलीला	,,
८३	भोजनकरनलीला	,,
८४	पयछोड़ावनलीला	१३५
८५	वृन्दावन वर्णन लीला	,,
८६	कर्णछेदनलीला	१३६
८७	जानुपाणिविहरण लीला	,,
८८	शिक्षावत्तीसी	१३७
८९	शिवस्तुति	१४०
९०	श्रीधरकृत कुंडलिया	१४१
९१	राधा जूकी प्रथम मिलनलीला	१४४
९२	ब्रह्माजीकी स्तुति	,,
९३	भजन कीर्त्तन	,,
९४	श्रीरामचन्द्रजीकी बारहमासी	१४५
९५	भरतजीकीबारहमासी	१४७
९६	वेणीमाधवजीकी बारहमासी	१५०
९७	श्रीकृष्णचन्द्रजीकी बारहमासी	१५१
९८	कौशल्याजीकी बारहमासी	१५४
९९	युगलकिशोरजीकी बारहमासी	१५६
१००	गोपीवलदाऊजीकी बारहमासी	१५७
१०१	कुबरीसंगविहार वर्णन बारहमासी	१५९
१०२	राधाजीकी बारहमासी	१६२
१०३	ललितासखीकीबारहमासी	१६४
१०४	बालमुकुन्दकृत बारहमासी	१६५
१०५	विरहिनीकी बारहमासी	१६६
१०६	भांगके गुण	१६९
१०७	ब्रह्मचारीके लक्षण	१७०
१०८	परमेश्वरसे क्षमा माँगना	,,
१०९	नामकरणलीला	,,
११०	गणेशस्तुति	१७१
१११	बजरंगचालीसा	,,

संख्या.	रत्न.	पृष्ठांक.
११२	महादेवलीला	१७४
११३	श्रीराममल्ललीला	१७६
११४	श्रीकृष्णचन्द्रजीकी जन्मपत्री	१७७
११५	प्रभाती	१७९
११६	गंगालहरी	१८०
११७	यमराजका श्रीविष्णुसे गंगापर फिरियाद करना	१८१
११८	गर्भचिंतामणि	१८३
११९	रेखता बालमुकुंदकृत	१८५
१२०	आरती श्रीगणपतिजीकी	१८६
१२१	आरती लक्ष्मीरमणकी	१८७
१२२	आरती श्रीकृष्णचंद्रजीकी	१८८
१२३	त्रिगुणआरती शिवजीकी	१८९
१२४	आरती दुर्गाजीकी	,,
१२५	आरती श्रीलक्ष्मीजीकी	१९०
१२६	आरती सत्यनारायणजीकी	१९१
१२७	आरती पार्वतीदेवीकी	१९२
१२८	आरती जानकीनाथकी	१९३
१२९	आरती लक्ष्मण बालाजीकी	१९४
१३०	आरती राधावरकी	,,
१३१	आरती श्रीरामकी	१९५
१३२	आरती शिवजीकी	,,
१३३	आरती शिवजीकी दूसरी	१९७
१३४	आरती शिवजीकी तीसरी	,,
१३५	आरती दुर्गाजीकी	१९८
१३६	आरती दुर्गाजीकी दूसरी	२००
१३७	आरती बजरंग बालाकी	,,
१३८	आरती जगन्नाथजीकी	२०१
१३९	आरती शिवजीकी	२०२
१४०	आरती बजरंगकी	२०३
१४१	आरती रामचन्द्र जीकी	,,
	पुनः आरती श्रीरामचन्द्रजीकी	२०५
१४२	आरती श्रीवेंकटेशजीकी	,,
१४३	आरती रघुनाथजीकी	२०७
१४४	रामजीकी गौरी	२०८
१४५	राघोजीकी गौरी	,,
१४६	राग गौरी	,,
१४७	राग गौरी	२०९
१४८	देवीअष्टक	,,
१४९	रुद्राष्टक	२११
१५०	पेटरत्न	२१२
१५१	भरणी दिक्शूलनिवारण	,,
१५२	स्तुति दयालुदेवी जीकी	२१३
१५३	हिंडोललीला	२१४
१५४	होरीलीला	,,
१५५	श्रीयुगलबिहारलावनी	२१५
१५६	मनिहारिन लीला	२१६
१५७	पावस विरहिनी	२१७
१५८	विरहिनीविलाप	२१८
१५९	पुरुषोपकारार्थपशुबुद्धि	,,
१६०	चौमासा	२१९
१६१	वियोगमें संयोग	२२०
१६२	गंगानाममहिमा	२२१
१६३	सखीवनविहार	,,
१६४	जलविहारलीला	,,
१६५	वनविहारलीला	२२२
१६६	लक्ष्मीनारायणकी ध्वनि	,,
१६७	चन्द्रप्रस्तावलीला	२२३
१६८	सामुद्रिकलक्षणकथन	२२५
१६९	स्तुति बंबादेवीकी	२२६
१७०	पूर्वदिशाके सुख	२८८
१७१	पूर्वदिशाके दुःख	,,

संख्या.	रत्न.	पृष्ठांक.
१७२	दक्षिणदिशाके सुख ...	,,
१७३	दक्षिणदिशाके दु:ख ...	२२९
१७४	पश्चिमदिशाके सुख ...	,,
१७५	पश्चिमदिशाके दु:ख ...	२३०
१७६	उत्तरदिशाके सुख ...	,,
१७७	उत्तरदिशाके दु:ख ...	२३१
१७८	हुलासके सुख ...	,,
१७९	लोभके लक्षण ...	२३२
१८०	प्रीतिवर्णन मूर्खता ...	,,
२८१	नीति	,,
१८२	कलियुगवर्णन ...	,,
१८३	गर्भिणीधर्म ...	२३३
१८४	गर्भिणीप्रश्न ...	,,
१८५	गृहस्थाश्रमके सुख ...	२३४
१८६	गृहस्थीके दु:ख ...	,,
१८७	खेतीके सुख ...	२३५
१८८	खेतीके दु:ख ...	,,
१८९	कालिकास्तोत्र ...	२३६
१९०	रसनिरूपण ...	२३९
१९१	बागवर्णन ...	२४०
१९२	श्रीरामचन्द्रजीके चरणवर्णन	,,
१९३	श्रीजानकीजीकेचरणवर्णन	२४१
१९४	श्रीरामनामवैभव ...	,,
१९५	श्रीरामचन्द्रजीकाब्याहवानक	२४२
१९६	श्रीरामचन्द्रजीकानेजा वर्णन	,,
१९७	श्रीरामसेना पयान ...	२४३
१९८	शब्दालंकार छेकाबृत्ति अनुप्रासआदिवर्णावृत्ति	,,
१९९	अन्तवर्णावृत्ति ...	२४४
२००	वत्त्यनुप्रास ...	२४५
२०१	हेतु अलंकार ...	,,
२०२	द्वितीय हेतु अलंकार ...	२४६
२०३	विभावना अलंकार ...	,,
२०४	असंगति अलंकार ...	२४७
२०५	अधिक अलंकार ...	,,
२०६	अन्योन्यालंकार ...	२४८
२०७	यथासंख्यालंकार ...	,,
२०८	परसंख्या५लंकार ...	२४९
२०९	सन्देहालंकार ...	,,
२१०	संभावनाअलंकार ...	२५०
२११	लोकोक्ति अलंकार ...	,,
२१२	अमृतध्वनि ...	,,
२१३	श्रीकृष्णचन्द्रजीका नखशिख वर्णन ...	२५१
२१४	श्रीकृष्णचन्द्रजीकी छबिवर्णन	,,
२१५	श्रीराधिकाजीका ध्यान..	२५२
२१६	श्रीराधाकृष्णसनेह वर्णन .	,,
२१७	अधरवर्णन ...	,,
२१८	रदनवर्णन ...	२५३
२१९	प्रेमतरंग	,,
२२०	उद्योग	,,
२२१	पुरुषार्थ	२५४
२२२	शिक्षा	,,
२२३	वसन्तविहिरनी ...	,,
२२४	विवाद	२५५
२२५	निर्वेद	२५६

इति सूर्यपुराणादि (२२५) रत्नोंकी सूची समाप्त.

श्रीः

अथ सूर्यपुराणप्रारंभ

श्रीगणेशाय नमः

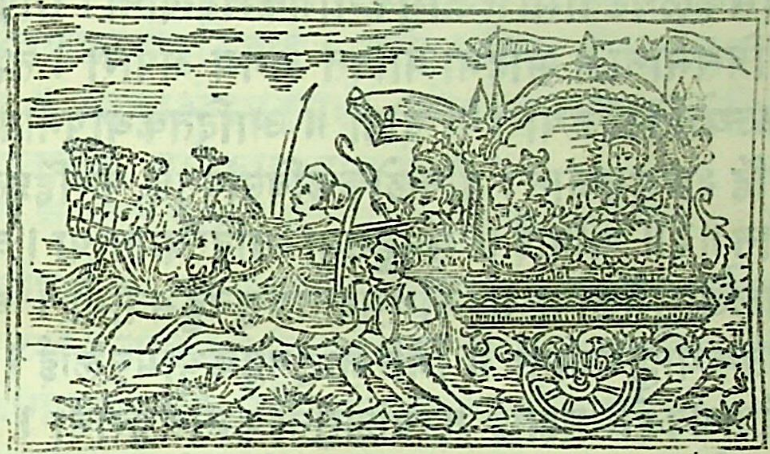

दोहा—वंदौंचरणहृदयधरि, भक्तिप्रेमलवलीन ॥
महिमाअगमअपारहै, सोबहुज्ञानप्रवीन ॥१॥
वंदौं चरण जोरिकर, श्रीपति गौरिगणेश ॥
तुलसिदास अतिप्रेमसे, वर्णत कथा दिनेश॥२॥

चौपाई ॥ सूर्यदेवतासुमिरौंतोहीं । सुमिरतज्ञानबुद्धि देमोहीं ॥ ज्योतिरूपआदितबलवाना । तेजप्रतापसुअग्नि समाना ॥ तुमआदितपरमेश्वरस्वामी । अखिलनिरंजन अंतर्यामी॥ वर्णिनजाइज्योतिकीलीला । धर्मधुरंधरपरम सुशीला ॥ ज्योतिकलाचहुँओरविराजे । जगमगकानन

कुंडलछाजे ॥ नीलवर्णछबिहयअसवारी । ज्ञाननिधान धर्मव्रतधारी ॥ परमपुनीतअदितअविनासी । अजनुअ-नादिसकलघटवासी ॥ जासुकथामैंकरौंबखाना । सोपूरुष है अग्निसमाना ॥ महिमाआदित अगम अपारा । तीनहुँ लोकज्योतिउजियारा ॥ दोहा ॥ आदितकथापुनीत है, गावहिं शम्भुसुजान । तीनलोकछबिउदितहै, करहिंप्रताप बखान ॥३॥ चौपाई ॥ सुनहुउमाआदित्यप्रतापा । वर्णों विमलजासुमैंजापा ॥ नाथमहातमसुनहुभवानी । कहौं पुनीतकथाशुभवानी ॥ गिरिजासुनहुकथामनलाई । मैं तोहिंअर्थकहौंसमुझाई ॥ बांझसुनैइकमासपुराना । मन वचकर्मसुचितधरिध्याना ॥ नेमधर्मसोंकैरअहारा । द्वा-दशवर्तकरैइतवारा ॥ कुशाबिछाइकरैबिश्रामा । हर्षितलेइ सूर्यकोनामा ॥ इतनीटेकधरैतियजबहीं । होहिंदयालुद-यानिधितबहीं ॥ वृथावचनभाषौंनहिंतोहीं । मनवचकर्म जोपूछौमोहीं ॥ निश्चयतबप्रसन्नबलवाना । पाँचपुत्रहोइँ अग्निसमाना ॥ तिनसोंजीतिसकैनहिंकोई । विद्यावंत गुणीबड़होई ॥ दोहा ॥ बाँझकथामनलाइकै, टेकधरैव्रत ध्यान । निश्चय होवें पाँचसुत, योधाअग्निसमान ॥४॥

इति श्रीसूर्यमाहात्म्ये महापुराणे बाँझपुत्रपावनोनाम प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

चौपाई ॥ सूर्यकथाहैअंमृतवानी । मनसुस्थिरकरि

सुनहुभवानी ॥ कुष्ठवर्णहोइजाकरअंगा । सोयहकथाकरै
सुप्रसंगा ॥ रविदिनभोजनकरैअलोना । पुष्पसुवासचढ़ावै
दोना ॥ विप्रबुलाइकैहोमकरावै । वहीभस्मलेअंगलगावै ॥
निश्चयकुष्ठवर्णछुटिजाई । धनि महिमा है सूर्यगुसांई ॥
दोहा ॥ जाकाअंगसकुष्ठहो, सोयहसुनैपुराण । निश्चय
सूर्यप्रतापते, पावैकायादान ॥ १ ॥

इति सूर्यमाहात्म्ये महापुराणे कुष्ठिकायादानपावनो नास द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

चौपाई ॥ सूर्यकथामैंकहौंबुझाई । मनवचकर्मसुनहु
चितलाई ॥ जाकेवर्णअंगमहँहोई । स्थिरकथापढ़ैनरसोई ॥
जाकोगाढ़परैअतिभारी । सोयहकथाकरैअनुसारी ॥ पाँच
वरतनरकरइतवारा । मनवचकर्मकथाअनुसारा ॥ अगर
सुचंदनलेपनकरई । निशिदिनध्यानसूर्यकरधरई ॥ निश्चय
वर्णसकलमिटिजाई । धनिमहिमाहैसूर्यगुसाँई ॥ दोहा ॥
जाकेवर्णसुअंगमहँ, सोनितसुनैपुराण । धन्यधन्यआदि-
त्यकी, महिमाकरोंबखान ॥ १ ॥ चौपाई ॥ सूर्यकथामैं
कहौं बुझाई । मनसुस्थिरकरसुनुचितलाई ॥ जोनरहोय
अंधदोउलोचन । सो यहकथासुनैदुखमोचन ॥ निशिदिन
करै अलोनअहारा । विविधभांतिकरनेमअचारा ॥ पीपर
तरूतरसुनैपुराना । पावैनयनअंधबलवाना ॥ अंधहुलोचन
निश्चयपावै । जोयहकथासुचितलवलावै ॥ दोहा ॥ अंधा

लोचनपावही, जोजानेप्रभुएक । पुलकितप्रेमपुनीतमन, धरैकथापरटेक ॥२॥ मनवचकर्मसुप्रीतिदृढ़, भोजनकरै अलोन । रविदिनहर्षितसुचितमन, पुहुपचढ़ावैदोन॥३॥

इति श्रीसूर्यमाहात्म्ये महापुराणे अंधालोचन पावनोनाम तृतीयोऽध्याय: ॥३॥

चौपाई॥ यात्राकरिनरचलैविदेशा । सोयहपढ़ैपुराण सुदेशा ॥ निश्चयतासुसकलसिधहोई । लाभभवनचलि आवै सोई॥ जाको गाढ़परै अतिभारी । सो यह कथा करै अनुसारी॥ निश्चयऋणहुसकलमिटिजाई। धनिमहिमाहै सूर्यगोसांई ॥ दोहा ॥ यात्राकरिनरजबचलै, तबयहपढ़ै पुरान । निश्चयसकलमनोरथ, पुरवहिंश्रीभगवान ॥१॥ चौपाई॥ सुनहुउमामैंकहौंबुझाई । मनवचकर्मसुनहुचित लाई ॥ ऐसीमहिमाआदितदेवा । जासुकरहिंसुरनरमुनि सेवा॥ मेटैंगाढ़सकलतनुतासू। पुलकप्रेमहियहर्षहुलासू॥ दीनानाथनिरंजनसाँई । महिमामुखतेवर्णिनजाई ॥ जो नरकरैधर्मव्रतदाना । सो न तुलैयहि कथा समाना ॥ तेज प्रताप वर्णिनहिं जाई । सूरजकथापढ़ैमनलाई ॥ कहैंशंभु यहकथापुनीता । रविप्रतापतेभयउअजीता ॥ दोहा ॥ असमहिमाआदित्यकर, वर्णौंप्रेमउछाह। सुनहुउमाअति प्रेमसे, प्रभुकीरतिअवगाह ॥२॥ चौपाई ॥ कथापुनीत कहौंशुभवानी। छठोमहातमसुनहुभवानी॥ कार्तिकचैत्र

पुण्यबहुभारी । साजहिंअर्थसकलनरनारी ॥ चंदनअगर
कपूरकिभाती । पूजानाथकरहिंबहुभाँती ॥ जोउरमनोका-
मनाराखै । पुलकध्यानधरिसुखतेभाखै ॥ सोकारजपुरवहिं
भगवाना । ऐसेहैंप्रभुज्ञाननिधाना ॥ दोहा ॥ लीलाअगम
अपार है, कृपासींवबलवान । वर्णहुँकथापुनीतअति, सुनु
सुस्थिरधरिध्यान ॥ २ ॥ चौपाई ॥ सुनहुउमाप्रभुचरित
अपारा । नाथकथावर्णौंविस्तारा ॥ सिंहलद्वीपनगरका
नाऊँ । तिहिमेंबसहिंपरीक्षितराऊ ॥ महापुनीतधर्मउप-
कारी । तासुभवनइकसुताकुमारी ॥ सोनितकरैसूर्यकीपूजा ।
सेवैसूर्यऔरनहिंदूजा ॥ प्रेमसेभक्तिकथामनलावै । निशि
दिनटेकसूर्यजपलावै ॥ इहिकाइकपरसंगगुसाँई । सेवैसुर
जहिमनचितलाई ॥ तासुभवनप्रभुकरहिकलेवा । तीन
भुवनपावैंनहिंभेवा ॥ एकसमयअसअचरजभयऊ । कन्या
सुरसरितीरहिंगयऊ ॥ मज्जनकरनलगीसोइबाला । हृदय
विराजत मोतिनमाला ॥ तेहिअन्तर नारदऋषिआये ।
ताहिदेखिमुनिनयनलुभाये ॥ ठाढ़भयेमुनिसुरसरितीरा ।
लियउछीनकन्यकाचीरा ॥ कन्याजलमेंकरतिपुकारा ।
अंबरदीजिय ऋषे हमारा ॥ कहनारदसुनु कन्याबाता ।
हमसेकरहु पुरुषकरनाता ॥ सुनु मुनि तुम्हर ज्ञान बौराई ।
ऐसेवचनकहौकहुँजाई ॥ मोर्साकन्यालाखपर्चासा । ऐसो

वचननकहोमुनीशा॥ अबविनतीममसुनहुसुवानी। अंबर देहुहमहिंमुनिज्ञानी॥ दोहा॥ नग्ननारिजलमेंखड़ी, तुमहिं कहौं करजोर। करिकरुणा करुणायतन, अंबरदीजैमोर ॥४॥ चौपाई॥जबकन्याबहुबिनतीलाई। तेहिक्षणमुनितब गयउलजाई॥ अंबरदैमुनिभवनसिधाये। तेहिअवसरतहँ शंकरआये॥ सोमुनिमुनिहिशापवशकीन्हा। सोआदित सोकहबेलीन्हा॥ जहाँकरतहाँमैंअसनाना। मुनिअंबरलैगे अज्ञाना ॥ ताहिसमयआयेशिवभोरा। संगउमाजसचंद्र चकोरा ॥ भक्तिसहितप्रभुनायउँमाथा। पूँछिकुशलतब त्रिभुवननाथा ॥ कुशलकहाशिवमनमुसकाई। बैठेउप्रभु तहँकहाबुझाई ॥ पूँछाप्रभुहिशिवहिकरजोरी। नाथसुनहु इकविनतीमोरी ॥ काअपराधकीन्हमुनिभारी। सोप्रभु मोसोंकहोविचारी ॥ तबप्रभुकहासुनोहोभोरा। कन्या प्राछितसेवकमोरा ॥ सोजुसुनामुनिकरअज्ञाना। दिष्टि विलोकेमनकरिध्याना ॥ यहकारणमुनिशापजोदयऊ। तेहितेअंगवर्णमुनिभयऊ ॥ इतनासुनिमनशिवमुसकाने। दिष्टभुलानेउमनअज्ञाने॥ सुनतवचनक्रोधितमनभयऊ। कन्यासहतबमुनिपहँगयऊ ॥ दोहा ॥ मुनिसोंकहावचन तब, क्रोधकियेमनलाइ। जसकौतुकतुमकीन्हेऊ, मोहिं कहहुसमुझाइ ॥५॥ चौपाई॥मुनिकरजोरिसुवचनसुनाये।

धरिपदकमलसूर्यगुणगाये ॥ कहमुनिप्रभुसुनुबातहमारी । मोसोंचूकभईअतिभारी ॥ यहअपराधक्षमहुप्रभुमोरा । विनवौंनाथदोउकरजोरा ॥ तबप्रभुकहासुनहुममवानी । इहाँकेलोगसकलगुरुज्ञानी ॥ तातेमुनिममलेहुजुशापा । जसकीन्हेउतसभुगतहुपापा ॥ दोहा ॥ तीनभुवनकेस्वामि हैं, ज्योतिकीन्हपरकाश । हर्षिकथाजोगाइहै, लहैसो रविढिगवास ॥ ६ ॥

इति श्रीसूर्यमाहात्म्ये महापुराणे राजापरीक्षितकन्या नारदशापदेनोनाम चतुर्थोऽध्यायः ॥४॥

चौपाई॥ पंपापुरइकनगरकनाऊँ। हलधरविप्रनृपतिवहिठाऊँ ॥ नगरवसैमानहुकैलासा । धर्मकथातहँहोईप्रकाशा॥पूजासूर्यकेंदिनराती।निशिदिनटेकधरैबहुभांती॥ अग्निकोटचारौदिशितहां श्रीसूरजकोआश्रमजहां । तहां तड़ागअखंडसुहावा । चारौं घाट सुवर्ण बंधावा ॥ तहां थंभइकबड़ाविशाला । सौयोजनसोरहेउपताला ॥ वोहिथंभआदितकरवासा ।प्रातहिथंभसोलागुअकासा॥ यहिविधिआदितआवहिंजाहीं । कथापुनीतसुनहुमनमाहीं ॥ मैंतोहिं अर्थ कहौं समुझाई । आदितकथा पढ़ै मनलाई ॥

दोहा—धनिआदित परमेश्वर, महिमा अगमअपार ।
तीनभुवनतमभागई, भयेसकलउजियार ॥१॥

कुष्ठीध्यानजुलावही, पावैकाया दान ।
असप्रभुअंतर्यामी, कृपाकरहिंभगवान ॥२॥
कपटछोड़िमनलावही, मनवचकर्मऽनुराग ।
जनसनअस्तुतिकरहिं, प्रसवहोइबड़भाग॥३॥
सबगुणआगरशीलसो, जगमहंरूपनिधान ।
मनवचकर्मतेहर्षित, सज्जनकरहिंबखान ॥४॥

चौपाई॥ गिरिजासुनहुकथामनलाई । पूरबदिशि जहं उगहिंगोसाँई ॥ ताहिदिशाइकश्रीपुरदेशा । तहंके राजा-रूपमहेशा ॥ करैसदाआदितकीपूजा । वहिसमान कोउभक्त न दूजा ॥ यहिविधिसकलनगरउजियारा । तहां शैलइकबड़ विस्तारा ॥ सहसकोश पर्वतपरमाना । तहां वसहिंआदि तबलत्राना ॥ दोइ पहरतहंकरहिंनिवासा । फिरिपश्चिम-दिशिप्रेमहुलासा॥ मनवचकर्मकथागुणगाई । सूर्य्यचरित मैंतुमहिंसुनाई॥ सुनिगिरिजाचकितभइवानी । तेजप्रताप-सुनतहरषानी ॥ धनिआदितजिनकैयहलीला । धर्मधुरंधर परमसुशीला ॥ जोनरकथासूर्यकी गावै । चढ़िविमानबै-कुंठसिधावै॥ सूर्यकथाहैअमृतसानी । प्रस्तुतिहर्षितकरहिं-बखानी॥छंद॥तुमप्रभुस्वामीअंतर्यामीज्योतिकलाछबिउ-दितमहा।रूपनिधानाश्रीभगवानाकरहुकृपाहमअधममहा ॥ छबिज्योतिविराजैकुंडलछाजै तवप्रतापहै त्रयभुवना ।

महिमाप्रभुतोरीहृदयधरोरीलेतनामपातक हरना ॥चौपाई
गिरिजाकहैदोउकरजोरे । इक संदेहऔरमनमोरे ॥ उत्तर
दिशिकहंउगहिंगुसांई।सोमोहिंनाथकहौसमुझाई॥ कहन
लगेशिवकथा रसाला ॥ जेहिविधिउत्तरउगहिकृपाला ॥
उत्तरदिशिकरकथाकहानीम । नसुस्थिरकरसुनहुभवानी
तहां शैलइकबड़विस्तारा।सौयोजनसोउच्चपहाराझंपेभानु
किरणिनहिंधावै॥यहिविधिपुरअंधियारतनावै।तहांवास-
कलियुगकरहोई ॥ तबसोंपापमलिछहोयसोई।यहिविधि
कबहुं न ऊगहिंभानू॥मैंतोहिंअर्थकहौंपरमानू। एकसमय
अचरजअसभयऊ॥नारदमुनितहँवांचलिगयऊ।देखान-
गरसरकलअंधियारा ॥ धर्मकथाकरनादविसारा॥ फिरि-
फिरि नगर सकल मुनि देखा॥पाप सिवाय और नहिंलेखा।
मनमें नारद करहिं विचारा ॥ आयेकहांनगर अंधियारा ।
असकहिनारदकोपेउजबही॥नगरहिशापदीन्हमुनि तबहीं।
कुष्ठीहोउसकलनरनारी॥ धर्मकथाकरनामविसारी। कुष्ठ-
वर्णभेसबकेअंगा ॥ आठौंवदनसकलतनुभंगा । कोउ न
रहाकुष्ठसनबांचा ॥ सबकेकुष्ठवर्णभासांचा।व्याकुल भये
तहांनरनारी॥त्राहित्राहिकरतबहिंपुकारी॥शापितकरिसूरज
पहं आये॥उत्तरदिशिकरअर्थजनाये। सुनतकथा आदित
मुसकाने ॥ कहांगयेमुनिउतरभुलाने। शापितकरि उत्तर

कहं आये ॥ अब हमरे पहं बात जनाये । अबैकहहु मुनि पूछौं तोहीं ॥ विप्रशाप कबछूटैओहीं । कहनलगेमुनिना-रदजबहीं ॥ अंगवर्ण मुनिदेखातबहीं । अंगवर्णमुनिदेखा कैसा ॥ मानहुहंससरोवरवैसा । थकितभयेसबमुनिके अंगा ॥ निकसेवर्णसकलतनुभंगा । तनुमहंकुष्टजोमुनिके भयऊ ॥ व्याकुलहोयसूर्यसनकहेऊ । हेप्रभुअबमैंपूछौं तोहीं ॥ केतेअंगवर्णरहैमोहीं । कृपासिंधुप्रभुपरमअगाधा । वर्णभयोतनुकेहिअपराधा ॥ सोमोहिनाथकहौसमुझाई । जेहितेअंगवर्णमिटिजाई ॥ तबप्रकहासुनहुममवानी । वहां केलोगसकलगुरुज्ञानी ॥ सबकहंशापदीन्हतुमभारी । व्या-कुलभयेसकलनरनारी ॥ सबकरअंगभंगतुमकीन्हा । उत्तर जाइशापतुमदीन्हा ॥ दोहा ॥ अबमैंकहिहौंतुहिसन, कथा पुनीतअभंग । शापअनुग्रहकरहुतौ, वर्णमिटैतवअंग ॥ ८ ॥ चौपाई ॥ नीकवचननारदमनमाना । उत्तरदिशिकरकीन्ह पयाना ॥ द्वादशदिनमहंउत्तरगयऊ । नगरशापमेटनमन दयऊ ॥ दोहा ॥ नारदउत्तरजाइकै, शापअनुग्रह कीन्ह । तेजप्रतापादित्यकर, हर्षितवर्णैलीन्ह ॥ ६ ॥

इति श्रीसूर्यमाहात्म्येमहापुराणेनारदशापवर्णनो नामपंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

चौपाई ॥ असकहिमुनिआदितपहंआये । उतरदिशिकी कथासुनाये ॥ शापअनुग्रहकीन्हगुसांई । धनिप्रतापतव

वर्णि न जाई ॥ असमुनिआदितहर्षितभयऊ । दयालागि तबमुनिसोंकहेऊ ॥ अबजनिऐसेभर्मभुलाहू ॥ आशिर्वाद लेहु घर जाहू ॥ भईकृपामुनि परबहुभारी ॥ वर्णिनजाइ-ज्योतिअधिकारी । विदाहुयेमुनि गृहकोआये ॥ हर्षितहुये सूर्यगुणगाये । हर्षितमंगलगावहिं नारी ॥ धन्यसूर्यकहिं-सबहिंपुकारी । धनिआदितकायाके राजा ॥ कोटिविप्र-तहंनेवतिपठावा । प्रस्तुतिनारदसूर्यकी गावा ॥ अश्वमेध करनेमुनिलागे । तीनभुवनकेदारिदभागे ॥ सबकहंनारद-नेवतपठाये । रथचढ़िदेवतहांसबआये ॥ब्रह्मा विष्णु आदि त्रिपुरारी । आयेसकलसहितसुतनारी ॥ बहु प्रकारमुनि सबहिं जिवांये । हर्षितहोयसूर्यगुणगाये ॥ हर्षित मंगल-गावहिंनारी । ब्राह्मणवेदपढ़ैंजयकारी ॥ चंदन अक्षत पान-पकवाना । पूजाकरहिंघरहिंमुनिध्याना ॥ हर्षित होय सूर्य्यगुणगावैं । ताल पखावजशंखबजावैं ॥ दोहा ॥ यज्ञ कीन्हमुनिनारद, सोभावर्णिनजाइ ॥ तैंतिसकोटीदेवतहं, हर्षिकथागुणगाइ ॥ १ ॥

इति श्रीसूर्यमाहात्म्येमहापुराणे नारदयज्ञसोभावर्णननामषष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

चौपाई ॥ जोनरधरैकथापरध्याना । ताकरहोयपरम कल्याना ॥ जोयहकथापढ़ैमनलाई । तापरआदित होयँ-सहाई ॥ धनिप्रतापआदितबलवाना । तेजप्रतापतुअग्नि-

समाना ॥ दोहा ॥ गिरिजपूँछैंशम्भुसन, सूर्यचरितमन-
लाइ । दक्षिणदिशिकहँऊगहीं, नाथ कहोसमुझाइ ॥१॥
चौपाई ॥ कहैंशम्भुसुनुशैलकुमारी। सूर्यचरितमैंकहौंबि-
चारी ॥ कहनलगेशिवकथाबुझाई । जेहिविधिदक्षिणउ-
गहिंगुसांई ॥ दक्षिणदिशिइकनगरअनूपा । जेमलविप्र-
तहांकेभूपा ॥ हर्षितभजनकरैंदिनराती। जहांरहैंआदित-
बहुभांती ॥ यहिविधिप्रभुकरज्योतिविराजै। अनहदना-
दघंटध्वनिबाजै ॥ तैंतिसकोटिदेवतातहां । जगन्नाथको-
आश्रमजहां ॥ दक्षिणदिशिमेंकाशिप्रयागा । तहांअहैय-
कविमलतडागा ॥ तहँबलभद्र सुभद्रा संगा । जहांबस-
हिंश्रीसुरसरिगंगा॥ कृपासिंधुप्रभुपरम अगाधा । निशि
दिन भजन करैंअवराधा ॥दोहा॥ दक्षिणदिशापुनीत है,
सुनहुउमाचितलाइ ॥ आगिलचरितजुहोइ है, सो मैंक-
हौं बुझाइ ॥ चौपाई कलियुगमस्त होइजबजैहै । मानुष-
कोतनुमानुषखैहै ॥ तब प्रभु लेअवतारकलंकी । मानु-
षतबहाइहैंनिकलंकी ॥ दक्षिणदिशिरविऊगहिं जाई ।
आगिलअर्थ कहौंसमुझाई ॥ धर्मकथाचलिहैबहुभांती ।
नेम धर्मकरिहैंदिनराती ॥ विप्रजिवांयआपतबजेइहैं ।
निश्चयमनासूर्यकेगइहैं ॥ लक्ष्मीघरघरकरहिंनिवासा ।
धर्मकथातहँहोइप्रकासा॥ वृथावचनकोईनहिंभाषै।निशि-

दिनध्यानसूर्यपरराखै ॥ धर्मविचारसूर्यतहँकरिहैं । द्वादशकलाज्योतिलेवरिहैं ॥ दोहा ॥ द्वादशकलासेऊगिहैं, आदिततबहींआइ । पूर्वजन्मकेपातकै, कथापढ़त छयजाइ ॥चौपाई ॥ आमिलअर्थप्रभुटेकि सुनावा । सुनिगिरिजाकेमनअतिभावा ॥ मग्नभई सुनिशिवकीवानी । हर्षिसूर्यगुण करहिबखानी ॥ त्रिभुवनजेहिनावेमाथा । सोप्रभुनाथअनाथकोनाथा ॥ जोयहकथापढ़ैमनलाई । बाढ़ैधर्मपापक्षयजाई ॥ दोहा ॥ जोयह कथामनलाइकै, टेकैधरैव्रतध्यान । जोईच्छा करिपढ़ैनर, सो पुरवहिंभगवान ॥

इति श्रीसूर्यमाहात्म्ये महापुराणे कलंकीअवतार वर्णनो नामसप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

अथ व्रतविधानप्रारंभः ।

चौपाई ॥ कार्तिकमासजोप्राणीरहई । तीनपत्रतुलसीदललहई । अगहनमासध्यानजोधरई ॥ शक्करचाटिकेभोजनकरई । पूसमासजोप्राणीरहई ॥ तीनदूबकेभोजनकरई । माघमासकरसुनहुविचारा तिलखड़ाकोकरैअहारा ॥ फाल्गुनमासनोयहिविधिरहई । दहिखंडीकेढिगहोरहई ॥ चैत्रमासकोसुनहुविचारा । घृतगंडूषभरिकरैअहारा ॥ वैशाखमासजोप्राणीरहई । आमिलतासचाटिसोरहई ॥ ज्येष्ठमासकरसुनहुविचारा । तीनअंजलिजल-

करै अहारा ॥ आषाढ़मासजोप्राणीरहई । तीनमिरचको भोजनकरई ॥ सामनमासयहीव्यवहारा । कपिला मूत्र-गंडूषअहारा ॥ भादौंमासजोयहिविधिरहई । गोबरखंडि-केढिगहोरहई ॥ क्वारमासकोसुनहु विचारा । चंदनखंडि-केकरैअहारा ॥

इति श्रीसूर्यमाहात्म्ये महापुराणे व्रतमाहात्म्यं समाप्तम् इति सूर्यपुराणं समाप्तम् ।

श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ गणेशपुराण प्रारम्भः

दोहा—एकरदनगजवदनके, पगवंदौंकरजोरि ॥ कृपा-करहुशिवनंदन, बुद्धिबढ़ैजेहिमोरि ॥१॥ व्यासआदिनरपुंगव, नारदआदिमुनीश । दिनकरब्रह्माशेषगुरु, सबकहँनावोंशीश ॥२॥ चौपाई ॥ राजायुधिष्ठिरउवाच ॥ सुनोस्वामितुममदनगोपाला । सदाकरौसंतनप्रतिपाला ॥ विपतिहमारिविलोकहुस्वामी । कृपासिंधुउरअंतर्यामी ॥

छलकीन्होंदुर्योधनराजा। जीतिलीन्हममराज्यसमाजा॥ वनहिनिकारिदीन्हदुखदाई। काननफिरौंदुसहदुखपाई॥ तेहितेप्रभुविनवौंकरजोरी। केहिविधिपावौंराज्यबहोरी॥ कृष्णकहासुनुवचननरेशा। तुवहितलागिकहौंउपदेशा॥ पूजोगणपतिमनचितलाई। तेहिपूजेसबदुखमिटिजाई॥ विघ्नहरन हैजाकरनामा। तेहिपूजेपैहौविश्रामा॥दोहा॥ कृष्णवचनसुनिधर्मसुत, बोलेपदशिरनाइ॥ गणपतिकवनसुनाथहैं, सोमोहिंकहौबुझाइ॥३॥ चौपाई॥ सुनौभूपपरमारथवादी। गणनायकहैं देवअनादी॥ शिवकोतनयविदितत्रैलोका। तिन्हैंपूजिजगहोइबिशोका॥ सुनिकहधर्मतनयकरजोरी। नाथसुनोइकविनतिमोरी॥ गणपति आदिदेवतुमकहेऊ। शंभुतनयकेहिभांतिसोभयऊ॥यहसमुझाइकहोयदुनाथा।बारबारनावौंपदमाथा॥ हँसिकहकृष्णसुनोतुमभूपा। गणनायककीकथाअनूपा॥ आदिदेवकोउपारनपावैं।वेदपुराणहुमुनिजनगावैं॥ आदिकल्पतेजगविस्तारा॥ तबतेगणपतिपूजिभुवांरा॥दोहा॥ तीनलोक सबपूजते, सुरनरआतमशेष॥ शंभुतनयजेहिभांतिभो, सोअबसुनोनरेश॥४॥ चौपाई॥ एकसमयगिरिवरकैलाशा। सहितउमाशिवकरतविलासा॥ करिकछुरामकथागुणगाना। महादेवतबगेअसनाना॥ बैठी-

गिरिजासदनसुहाये। ताहिसमयनारदऋषिआये॥ उठिकै उमात्रिनयबड़िकीन्हा। आसनदैचरणोदकलीन्हा॥धन्य-भाग्यहैआजुहमारा। कृपाकीन्हमुनिद्यांपगुधारा॥ केहि-कारणआगमनतुम्हारा। कहौऋषीश्वरकरतविचारा॥तब-बोलेनारदमृदुबानी। वचनएकममसुनहुभवानी॥दोहा॥ बहुदिनबीतेब्रह्मपुर, मनमहँभयेउदास॥ शिवदरशनके-कारणे, चलिआयोकैलास॥५॥ चौपाई॥ शंभुकहांग-येशैलकुमारी॥ सातुमहमसोंकहोविचारी। बोलीवचन-उमाहितकारी॥ मज्जनकरनगयेत्रिपुरारी॥ तबनारदबो-लेमृदुबानी। सुनौएकआचरणभवानी॥ नरशिरमालश-म्भुउरजेऊ। तुमजानहुतिन्हकरकछुभेऊ॥ उमाकहाप्र-भुमैंनहिंजानों। मिथ्यातुमसोंकहाबखानों॥ तबनारदक-हवचनरसाला। तुम्हरेशिरकेहैंजयमाला॥ तुमसेशिव-कछुअंतःराखा। जोयहकथाकबहुँनहिंभाषा॥ जबआ-वैंशिवकरिअस्नाना। तबतुमपूंछेउसकलविधाना॥दोहा॥ असकहिनारद नाइशिर, चलेभवनहर्षाइ॥ मुनिवरकेरे-वचनसुनि, बैठिउमाबिलखाइ॥६॥ चौपाई॥ यहिअंत-रशंकरचलिआये। देखीउमाविषादबढ़ाये॥ तबशंकर-बोलेमृदुबानी। केहिकारणदुखकीन्हभवानी॥ उमाकहा-शिवपदशिरनाई।संशयएक अहैममसांई॥ तुम्हरेहृदय-

मुंडकीमाला । सोकेहिकेशिरआहिकृपाला ॥ तबशंकर-बोले मुसकाई । कौनेतुम्हरीमतिभरमाई ॥ मुण्डमालमम-हृदयभवानी।कथातासुकीसुनोसयानी ॥ जब जबजन्म-तुम्हारोहोई। रामकृपासोंब्याहौंसोई ॥ समयपाइजोत्या-गहुदेहा । तबतुमशिरकेमालजुएहा ॥ दोहा॥ जितनेज-न्मतुम्हारिभे, देहतजेकरिभोग॥ तबतवशिरकेमालकिय, प्रियातुम्हारे सोग ॥ ७॥ यहसुनिगिरिजावचनउचारी । सुनहुवचनममनाथपुरारी ॥ तुमअवतारभयोप्रभुएका । काविकारममजन्मअनेका ॥ मोरेमनप्रभुभयउअँदेशा । सोसमस्तमोंहिंकहौमहेशा ॥ तबशंकरकहगिरासुनाई । हृदयसुमिरिनिजप्रभुरघुराई ॥ बीजमंत्ररघुनायककेरा । सोममहृदये करतबसेरा॥ तातेमोरहोइनहिंनाशा । बीज मंत्रदियअलपप्रकाशा ॥ बीजमंत्रतुमजाननिनाहीं । ताते-जन्मधरेविपुलाहीं ॥ तबगिरिजाबोलीकरजोरी। विश्वना-थसुनुविनतीमोरी ॥ दासी जानिकृपाअबकीजे । बीज-मंत्रहमहूँकोदीजे ॥दोहा॥ शंकरबोलेवचनतब, सुनहुउमा-ममवानि॥ विपुलजीवबसशैलपर, केहिविधिकहौं वखानि ॥८॥ चौपाई॥ जोयहमंत्रसुने कोइपावै। ताकेकालनिक-टनहिंआवै॥ अजर अमरसोहोइभवानी । तातेकेहिविधि कहौंबखानी ॥ तबगिरिजाकहगिरासुहाई । देहुजीवप्रभु

सकलभगाई ॥ तबशंकरचितयेकरिक्रोधा । भागेजीवस-
कलचहुँरोधा ॥ आदिपिपीलजहांतहँजाइ । सर्वजीवउड़ि
चलेपराई ॥ जीवरहितगिरिदेखिकृपाला । बैठिबिछाइना-
गरिपुछाला ॥ जेहितरुतरबैठेसुरनाहा । तहँवसिकीरदीन
यकराहा ॥ दोहा ॥ तेहिमें अंडाएकधरि, कीरसोगयोउड़ाइ ॥
जोभावीसोनामिटै, सुनोयुधिष्ठिरराइ ॥ १ ॥ चौपाई ॥
बीजमंत्रशिवउमहिंसुनावा । अंडजीवहुनिकेचितलावा ॥
कहतसुनतअंडासुखभयऊ । बारहवर्षबीतितबगयऊ ॥ जो
जोमंत्रउमहिंशिवदीन्हा । सोसोसबअंडजसुनिलीन्हा ॥
द्वादशवर्षजुगयेसिराई । माताकहँआईअलसाई ॥ सोवत
जानिगिरीशकुमारी । तबतेकीरदीन्हहुंकारी ॥ यहिअंतर
कहिकथासिरानी । उमाजगाइकहाशिववानी ॥ जहँ लगि
सुनाकहौसबगाई । अंतर लखिशिवकहाबुझाई ॥ कथा
पुनीतइमकहाबखानी । हुंकारीकोदीन्हभवानी ॥ उमाकहा
प्रभुमैंगइसोई । देखहुनाथजीवकोहोई ॥ तबशंकरचितये
धरिध्याना । सुनाबीजखगकीरनिधाना ॥ करत्रिशूललै
उठेरिसाई । कीरदेखिउड़िचलोपराई ॥ भागोखगव्याकुल
अतिसोका । भरमतफिरै सकलत्रयलोका ॥ जहँ जहँ खग
शरणागतभाषा । शिवद्रोहीकाहूनहिंराखा ॥ दोहा ॥ पाछे
शिवधावतफिरे, कियेक्रोधदुखमूल । जोभावीसोनामिटै,

छूटैनाहिंत्रिशूल ॥१०॥ चौपाई ॥ जबअतिकीरविकल मनभयऊ। उड़तउड़तव्यासाश्रमगयऊ॥ व्यासनारितेहि समयप्रभुवारा। ऋतुमज्जनकरिसूर्यनहारा ॥ ताहिसमय आईजमुहाई। वदनपंथखगगयउसमाई ॥ पाछेशंभुपहूँचे जाई। भयदेखाइत्रियमाथनवाई ॥ कहैंशंभुसुनुऋषिकी नारी। चोरहमारोदेहुनिकारी ॥ मुनित्रियकहैनाथनहि जानों। कहाँचोरमैंकहाबखानों॥ तबहींबोलेशंभुसुजाना। उदरतुम्हारेचोरसमाना॥दोहा॥ देनिकारिरिपुमोरहै, करौं वचनविश्वास ॥ नहितो अबहींमुनित्रिया, करौंतुम्हारो नाश ॥११॥ चौपाई॥ यहिअंतरव्यासऋषिआये॥ देखि शंभुपदशीशनवाये॥ समाचारसुनिकहेमुनीशा। वचन हमारसुनोजगदीशा॥ त्रियाजानिप्रभुवधनहिंकीजे। बाल-कहोयसोआपहिलीजे ॥ मुनिकेवचनसुनतअतिहेतू। भये प्रसन्नतबैवृषकेतू ॥ तबमुनिसोंहँसिकहेमहेशू। देनपुत्र तोहितजोअँदेशू॥ होईपुत्रमहाविज्ञानी। तासु चरित्र तिहूँ पुरजानी॥ हाथजोरि मुनि विनतीकीन्हा। भयेप्रसन्नशंभु वरदीन्हा ॥ वरदैशंभुगयेकैलासा। मुनिहिपुत्रकीउपजी आसा ॥ दोहा पूरेदिनबालकभयो, शुकतेसुनहुभुवाल॥ शुकाचार्यअसनामतेहि, राखेउव्यासकृपाल ॥१२॥ चौ-पाई॥ इहाँशंभुआयेकैलासा। बैठेहृदय लागिअतित्रासा॥

देखतशिवाक्रोधभोभारी । तबहिंउमासोंकहाविचारी ॥
तुम्हरेसंगनकाज हमारा । जाहु जहाँ मनरुचैतुम्हारा ॥
तबगिरिजाशिवआयसुपाई। उठिकै चलीचरण शिरनाई॥
शिवशिवभाषतउरअभिलाखा। गईजहाँतहँपुत्र विसाखा॥
मातालखिगुहकीन्हप्रणामा । कहुजननीआईकेहिकामा॥
सबप्रभावजबउमासुनावा।षट्मुखहृदयशोचतबआवा॥
करिविचारबोलेसुनुमाता । राखौं इहांक्रोधकरताता ॥
पितावचनमोहिंमेटिनजाई । कठिनकर्मकीन्हेतुममाई ॥
दोहा॥ शिवप्रभावकोसमुझिकै, कहीषडाननबात ॥ मातु तपस्या करहुतुम, सिद्धिकरहिंगेतात ॥१३॥ चौपाई ॥
सुतकेवचनसुनतमनभाई । उमाचलीकिष्किधहिआई ॥
तेहिगिरिपरइकगुहासुहाई।तहांजायसोतपनलभाई॥ यहि विधिकालबीतिकछुगयऊ । सुनोभूपआगेजसभयऊ ॥
एक समयनिजदेहनिहारी ।उबटनकियगिरिराजकुमारी॥
तनुकरमैलजुछूटसुवारा । सोउठायमनकीन्हविचारा ॥
बालकरचिकीन्हेउहरिध्याना। तनुमहजीवकरोभगवाना॥
हरिइच्छासोभये नरेशा । गणनायकतहँकीन्हप्रवेशा ॥
तनय शीशकरपरशेउजबहीं। कीन्हसजीवरमापति तबहीं
॥दोहा॥ तनयसजीवनदेखिकै, मन आनँदतबकीन्ह॥ अति ज्ञानीसुतहोहुतुम, माता आशिषदीन्ह ॥१४॥ चौपाई॥

सुतसों बोली वचनभवानी। सुनोतातमानोममबानी॥ गुफा द्वारधरिबैठहुजाई। हमयहँकरिशिवतपमनलाई॥ भीतरआननपावैकोई। जोहमकहैं सुनोसुतसोई॥ बालक बैठद्वारपरआई। उमा करततपशिवमनलाई॥ यहिविधि बीतिगयेकछुकाला। आगेसुनोकथानरपाला॥ जबतेउमा शंभुकहँत्यागी। बैठिसमाधिअधिकअनुरागी॥ आसन डिगोशंभुतबजागे। मनअनुमानकरन तबलागे॥ कहाँ गईधौंशैलकुमारी। तनुकिजीव विनुभयेदुखारी॥दोहा॥ गिरिजाहेरनकारणै, शंभुगयेतज्रिधाम॥ वनमहँगिरिखो-जतफिरे, मन नलहैविश्राम॥१५॥ चौपाई॥ षड़जनाम पहँगयेमहेशा। बाढ़ोहर्षविषादअँदेशा॥ दंड प्रणामपुत्र जब कीन्हा। आशिर्वादतबैशिवदीन्हा तबशंकरबोलेमृदु वानी। दीखताततुमकतहुँ भवानी॥ अहोतातमैंमृषान भाषौं। तुमविनुआयसुकिमिकरिराखौं॥ गईविपिनतप करनगोसाँई। सुस्थलनाजानोंमाताई॥ सुनिशंकरसँग तनय लगाई। खोजतचलेविपिनसमुदाई॥ यद्यपिशिव जानतसबबाता। हरिइच्छाराखतसुरत्राता॥ खोजतक-तहुँउमैनहिंपावा। तबशिवहृदयक्रोध होइआवा॥दोहा॥ डमरूपटकेउभूमिपर, तीनलोकअकुलान॥ धेनुरूप होइ धरणितब, विनयकीन्हबहुआन॥१६॥ चौपाई॥ कौन

भाँतिमैंचूकिउँसेवा। तेहितेक्रोधकीन्हतुमदेवा॥ शंकरकहे-उधगणिसमुझाई। शैलसुता कहँदेउबताई॥ तबधरणीबोली मृदुबानी। किष्किंधागिरिबसैभवानी॥ मुनिशंकरसँगत-नयलगाई। खोजतचलेविपिनसमुदाई॥ गुफामध्यइक देखिकुमारा। शिवपूछातिहिंवचन उचारा॥ गुफामध्यहै मातुहमारी। करतितपस्या शिवअधिकारी। यहसुनि पेलिचलेत्रिपुरारी॥ बालकदेखिक्रोधभयोभारी॥दोहा॥ गुफाद्वार धरिठाढ़भे, करगहिशक्तिहिजोहि॥ विनामातु कीआयसू, जानदेहौंतोहि॥ चौपाई॥ यहसुनिपेलिचले प्रियपाहीं। बालककोपकीन्हमनमाहीं॥ क्रोधवंतसुतग-रजाभारी। शिवपरतीक्षण शक्तिपवारी॥ आवतशक्ति देखिखरधारा। तेजशक्ति सोकाटिनिवारा॥ लखिशंकर शरतेजअपारा॥ बालकधनुषकाटिशिवडारा। मातुसु-न्योमारैममबारा॥ गुफासोंनिकसीशक्तिअपारा॥ मारत तनयनमानतहारी। क्रोधवंतभेत्रिपुरारी॥ जौ लौंशिव शिशुहतैप्रचारी। तौलोंशिवयहयुक्तिविचारी॥ देखायुद्ध भयंकरनाना। कोपेशिवभये अनलसमाना॥ गहित्रिशूल तेहिनाथप्रचंडा। उड़िगामाथपराब्रह्मंडा॥ यहिविधिबा-लकमारि महेशा। तनयसमेतगुफामेंपेशा॥ जबहींउमा शंभुकहँदेखा। उठतभईतबप्रीतिविशेखा॥दोहा॥आसन

दैपदपद्मगहि, चरणोदक तब लीन्ह ॥ शंभुबैठिशुचिआ-
सनै, बहुविधिआशिष दीन्ह ॥१८॥ चौपाई ॥ उमाशंभु
सनकह मृदुवानी।सुनोनाथतुमसबसुखखानी॥ गुफाद्वार
शिशुहमबैठाये।तासोंकेहिविधिआवनपाये॥ सुनतवचन
तबबोलेशंकर । तिनसोंकीन्होंसमर भयंकर ॥ विषमयुद्ध
तिन्हहमसनकीन्हा । ताको मारियहांपगदीन्हा ॥ सुनि
गिरिजाउठिबाहर आई।सुतलखितुरतपरीमुरझाई ॥सुनो
नाथयहतनयहमारा । जेहिविधिजियेसोकरौ विचारा ॥
तबपूछाशिवउमहिंभुवारा। केहि प्रकारभातनयतुम्हारा॥
दोहा॥ शंभुवचन सुनिपार्वती, जोरिपाणिशिरनाइ। जेहि
विधिउपजोबालवर, सकलकहीसमुझाइ॥१९॥ चौपाई॥
सुनिशंकरबोलेमृदुवानी । विनामाथकिमिजियैभवानी॥
क्रोधितलागित्रिशूलप्रचंडा । उड़िगामाथपराब्रह्मंडा ॥
बोलीउमासुनोमभवानी।कृपासिंधुउरअन्तरज्ञानी॥आजु
कोभयोतनयजहँहोई । मातापीठीदैकरसोई ॥ तेहिबालक
कामाथमँगावहु। कृपाकरौममतनयजियावहु॥ तबशिव
दूतनलीन्हबुलाई । सकलकथाकहितिन्हैंसुनाई ॥ आजु
कोभयोतनयलैआवहु । जननीपीठिदियेजहँपावहु ॥ सो
सुनिदूतदशोदिशिधाये । हेरिखोजिपुनिशिवपहँआये ॥
दोहा॥ कहैंशंभुसनजोरिकर, सकलदूतशिरनाइ ॥ तेहि

प्रकारकाबालकै, हेरिरहेनहिंपाइ ॥२०॥ चौपाई ॥ पुनि
बोलेगणगिरासुहाई। सुनोनाथकरिनी यकजाई ॥ सोबा-
लकपाछेहैनाथा। आज्ञाहोयतोआनौंमाथा॥ आयसुपाइ
दूतबहुधाये। करिसुतमाथकाटिलेआये ॥ माथलायजोड़े
सोइग्रावा। प्रगटठाढ़भयेहोइसजीवा॥ पुत्रदेखिमातासुख
पाये। आशिषदैशिवहृदयलगाये ॥ तनयदेखिसुखकीन्ह
भवानी । शंकरसोंबोलीमृदुवानी ॥ करिनीकोसुतदेहुजि-
याई । ऐसेनाथबहुतदुखपाई ॥ तबशिवकिरकिटमाथमँ-
गावा । कृपाकीन्हहरतिन्हैंजियावा ॥दोहा॥ किरकिट
कोआशिषदियो, जियैविनहि सोशीश ॥ तबगिरिजाप्र-
स्तुतिकिये, धन्यधन्यजगदीश॥२१॥ चौपाई॥ उमासंग
लैदोऊबालक। चलेजहांजगकेप्रतिपालक॥ पहुँचे हरिपुर
सहितसमाजा । तहांविष्णुबैठेसबराजा ॥ तेंतिशकोटि
देवतहँसोहे । हरिकोरूपदेखमनमोहे॥ शंभुजायपदवंदन
कीन्हा । उमासहितचरणोदकलीन्हा ॥ सुरनरमुनिउठि
कैकरजोरी । सबपरशिवकेप्रीतिघनेरी ॥ शिवसुत युगल
देखि सुखधामा । परदक्षिणकरिकीन्हप्रणामा ॥ बालक
देखिसुरनसुखपावा। हरिआशिषदैनिकट बुलावा॥ हरिके
करमोदकयकरहा । दोउबालकसोंप्रभुहँसिकहा ॥ जोसुत
तीनिलोकफिरिआवै । आवैवेगिसोमोदकपावै ॥ शरजन

मातुरतहिशिरनावा । चढ़िरथवेगवायुसमधावा ॥ दूसर सुतुयावरविधिकीन्हा। उठिहरिकैपरदक्षिणदीन्हा॥दोहा॥ देखातबबुधिवंतगण, देवनजयजयकीन्ह ॥ करमोदकअतिमोदसों, तेहिबालककोदीन्ह ॥२२॥ चौपाई ॥ यहि अंतरषटमुखचलिआये । हरिके चरणशीशतिननाये ॥ देखामोदकबालकहाथा। शरजनमाकोपेरणनाथा॥ मोदकलीन्हवदनपरमारा । एकदंतगाटूटिभुवारा ॥ तबहरि हँसिकहगिरासुनाई। षडमुखकहाकीन्हलरिकाई ॥ वहबालकककेकहेकसजाता । दांतटूटिगाकायहबाता ॥ तबगुह कहायुगलकरजोरी । नाथसुनोयकविनतीमोरी ॥ सबसंसारदौरिमैं आवा । बैठरहासोमोदकपावा ॥ हरिकहतुमसोंआगेआवा । तेहिकारणइनमोदकपावा ॥ यहसुनि गुहबडिशंकाकीन्हा। तबहरिचरितदिखावैलीन्हा॥ हँसिकै जबहरिवदनपसारा । तीनलोकतबदेखकुमारा ॥ देखिषडाननलज्जितभयऊ । तबहरिगुहैप्रबोधतभयऊ ॥दोहा॥ पुनिसबदेवनजोरिकर, प्रभुहिकहासमुझाइ ॥ सो बालक बुधिवंत है, कृपाकरोसुखदाइ ॥२३॥ चौपाई ॥ देवगिरा सुनिप्रभुमनभाये। तेहिबालककोनिकटबुलाये॥ सावधानहैसुनहुनरेशा । नामधरोहरितासहिगणेशा ॥ जानागणपतिदेवअनादी। विधिहरिहरहियआशिर्वादी ॥पूज्यनित्य

तुमह्वोहुगणेशा । जोपूजैतेहिमेटुकलेशा ॥ जो मेरेचरणन मनधरई । सोप्रथमहिंतुवपूजाकरई ॥ यहसुनिदेवनजय जयकीन्हा । सुमनबर्षिबहुपूजादीन्हा ॥ स्वामीकार्तिक बड़ेलजाई। परे चरणगणपतिकेआई॥ क्षमाकरौगणनाथ गुसाँई।चूकपरीसोमेटहुभाई॥ गणपतिगुहैलाइउरलीन्हा। शोचमिटाईआशिषादीन्हा ॥दोहा॥ पूजि गणपकरजोरिकै, धरि चरणनशिरनाइ ॥ अस्तुतिकरतअनेकविधि, सुनोयुधिष्ठिरराइ ॥२४॥ चौपाई॥ तुमत्रैलोकनाथप्रभुएका। मायावशप्रभुजीवअनेका ॥ जेहिकाजसतुमआयसुदीना। सोतेहिभाँतिरहैलवलीना ॥ जोप्रभुहमपरदयाकरेहू । तौ प्रसन्नह्वैयहवरदेहू ॥ प्रथमहिंनाथभक्तितवपाऊँ । पुनिदूसरवर देहु जो भाऊं॥ जोकोइममपूजामनलावै । मनवांछित फलसोप्रभु पावै ॥ बोलेशम्भुविहँसि मृदुवानी । सुनेहर्षिशिवसतीभवानी ॥ पुनिप्रभुपदवंदन करिसेवा । निजनिजलोकगये सबदेवा । शंकर प्रभुपदउरमहंराखी ॥ विदाभयेविनतीबहुभाखी ॥ दोहा ॥ गुहगणपतिप्रभुचरणगहि, चलेआशिषापाइ । गिरिजासहितमहेशतब, गमनकीन्हहर्षाइ ॥ २५ ॥ चौपाई ॥ पहुँचे विश्वनाथकैलासा । सुतनसहितशिवपरमहुलासा ॥ कहेउँ कथा मैं सकलनरेशा । यहि विधिसों शिवतनयगणेशा ॥ पूजें-

नितगणमतित्रयलोका। तिन्हैं पूजि जग होय विशोका॥ तेहितेपूजहुगणपतिराजा। मिलहितोरसबराजसमाजा॥ यहसुनिधर्मतनयशिरनावा। धन्यकृष्णयहकथासुनावा॥ अबजानेउँगणनाथपुरारी। सुनतकथाछूटादुखभारी॥ औरौएकलालसामोरे। कहौकृष्णविनवौंकरजोरे॥ प्रथमहिकेहिपूजागणनाथा। सोसमुझाइकहौयदुनाथा॥ दोहा॥ धर्मतनयकेवचनसुनि, कहाकृष्णविहसाइ। यहसबसादर भाषिहौंसुनहुभूपमनलाइ॥ २६॥ चौपाई॥ प्रथमवरत राजानलकियऊ। ताकेसबसंशयमिटिगयऊ॥ सुनत वचनकह धर्मकुमारा। नलपरकवनपरादुखभारा॥ सुनिहँसिकृष्णवचनपरकासा। सुनहुभूपसुन्दरइतिहासा॥ नवौखण्डका राजाभयऊ। तेहिं कछु काल राज्य सुख कियऊ॥ एकसमयविपत्तिपरिआई। छूटाराज्यदेश समुदाई॥ नारिसमेत विपिनकहुँगयऊ। तापरतियाविछोहिलभयऊ॥ कतहूँभूपकतहँगइरानी। महाविपतिकिमिकहौंबखानी॥ दमयन्तीबहुकरैविलापा। मूर्छितपरी महासंतापा॥गतमूर्छाउठिचलवनमाहीं। महाविकलतनुसुधिकछुनाहीं॥ फिरतविपिनइकआश्रमदेखा। बैठे ऋषितहँपूज्यविशेखा॥दोहा॥ दमयन्तीमनधीरधरि, गहे

ऋ षिनकेपांय। करजोरेठाढ़ीभई,आरतवचनसुनाय॥२७॥ चौपाई॥ सुनहुनाथममवचनविशेखा ॥ तुमकहुँराजानल कोदेखा ॥ ऋषिनकहानहिंदेखेउँमाई । सुनतवचनरानी मुरझाई ॥ भईसचेतआगेचलिरानी । नदीएकतहँदेखिस-यानी॥ तहां अप्सरामज्जनकरहीं । मंगलगानसुनतदुखट-रहीं॥दमयन्तीतहँवांचलिआई। पूंछातिनसोंप्रीतिलगाई॥ केहिकीपूजाकरौसयानी। कहोचरितताकोवरवानी॥ गण नायककीपूजाकरहीं ॥ जेहिपूजेसंकटदुखटरहीं । त्रिया पुरुषव्रतकरेजुकोई ॥ मनवांछितफलपावैसोई ॥ दोहा ॥ दमयन्तीनिजदुखकहे, सकलभांतिसमुझाइ। सुनतअप्स-राप्रीतिसों,बोलोंवचनसुहाइ॥२८॥चौपाई॥ गणपातिको व्रतकीजैरानी। मिलिहैभूपसत्यममवानी॥ दमयन्तीगण-पतिव्रतसाजा। तिनकेसँगपूजागणराजा॥ पूजिअप्सरा-सुरपुरगई।रानीहृदयविचारतभई॥बहुदुखविपिनअकेली रानी।जाउँपितागृहअसजियआनी॥ तबउठिचलीपिता-गृहआई।शोकसहितकछुदिवसगमाई॥ श्रीगणनाथकृपा-तबकीन्हा। आनिपासराजैतबदीन्हा ॥ रानीराजाभेयक-ठांई॥व्रतप्रभावसबबातजनाई॥सोईव्रतराजानलकियऊ ॥ ताकरसबसंकटमिटिगयऊ॥ वैसेराज्यभयेतबराजा। छूटे ताकेशोकसमाजा ॥दोहा॥ कथाबढ़ै केकारणे, सूक्ष्मकही

समुझाय। औरौकथा गणेशकी, सुनोयुधिष्ठिरराय॥२९॥ चौपाई॥ मान्धाताकोशलपुरराजा। धर्मनीतिसहसकल समाजा॥ ताहिसमयनिशिचरअवतारा। धुंधसुतातेहि नामभुवारा॥ तेहिसबलोकजीतिवशकीन्हा। सुरनरनाग सबहिंदुखदीन्हा॥ सर्वदेवमिलिकरहिंविचारा। केहिवि- धिजाइनिशाचरमारा॥सुरगुरुकहावचनसुनुमोरा। नृपति मान्धातावरजोरा॥ तासोंकरियेयुद्धविचारा। इहिविधि जाइनिशाचरमारा॥सुरगुरु सहित देवतहँआये।मान्धा- ताको कथा सुनाये॥ राजाकहाकहौगुरुमोहीं। केहि बल सेमारौंसुरद्रोही॥ सुरगुरुकहाभूपसुनिलीजे। गणपतिकी पूजामनदीजे॥युक्तिदेवगुरुदीन्हबताई।तेहिविधिसोंपूजा मनलाई॥दोहा॥ कृपाभईगणनाथकी, बलसमूहहैजात। मान्धातापरसनभये, धुंधसुताहनितात॥३०॥ चौपाई॥ यहइतिहाससकलजगजाना।तातेमैंसंक्षेपबखाना॥ गण- पतिउहैकृपाकरिनाना।धुंधमारिअसनामबखाना॥ और कथासुनुधर्मकुमारा।कांत्रापतिसोंसुरपतिहारा॥गुरुउप- देशसुरेशहिंदीन्हा। तबगणपतिकरपूजाकीन्हा॥ व्रतके फलपायेउनभारी। मारेउकंत्रासुरनप्रचारी॥ औरकथा सुनुधर्मकुमारा। जोसुनिकटैसकलदुखभारा॥ महादेव कहंसंकटभयऊ। त्रिपुरासूरमहादुखदयऊ॥ गिरिजालेन

त्रिपुरमनभयऊ। तबशिवगणपतिपूजाकियऊ ॥ मारादैत्यमहाबलभारी । तबतेनामपरोत्रिपुरारी ॥ पुनिव्रतकीन्ह षडाननवीरा । सावधानहोसुनुमतिधीरा ॥ तारकअसुर भयउपरचंडा । जीताकोपिसकलब्रह्मण्डा ॥ गुहगणपति पूजाअनुरागी । हतेहुतारकहिवार नलागी ॥दोहा॥ अपर कथाअबभाषऊं, चितदेसुनहु नरेश । रुक्मिणिसुतके कारणे, पूजेदेवगणेश ॥३१॥चौपाई॥ व्रतफलतेप्रद्युमन सुतजायो । अतिआनंदभीष्टफलपायो ॥ पुनिव्रतकरि पूजागणराजा । रत्नजटितआरतीसुसाजा ॥ चीररोपित-पुनि कहेउनरेशा । पुत्रदानतबदीन्ह गणेशा ॥ त्रियासहितप्रद्युमनघरआये ॥ रुक्मिणितनयदेखिसुखपाये । औरौसुनहुधर्ममतिधीरा ॥ सोसुनिकटैसकलअघपीरा । महिषावतीनगरसुखधामा ॥ नीलध्वजराजाकरनामा । तेहिपुरवासकरैद्विजएका ॥ ताकेएकपुत्रअविवेका । धेनुवत्सपुरकेरचरावै ॥ ब्राह्मणभिक्षा मांगिलेआवै । इहिविधिसोंकछुकालवितावा ॥ बहुरि त्रियागणपतिहिमनावा । व्रतप्रभावसों संपतिपावा ॥ कछुकज्ञानबालककहँआवा ॥ दोहा ॥ नीलध्वजकीसभा महँ, बालकआवैजाइ । ताहिदेखिकैभूपसुन, प्रीतिकरहिं अधिकाइ ॥३२॥ चोपाई ॥ जादिनसभानबालकजावै ।

राजहिनींदनभोजनभावै॥ बहुअधिकारीद्विजसुतजाना। अतिअभिमान हृदयमनआना॥ एकदिवसब्राह्मणिव्रत कियऊ। गणपतिकीपूजामनदियऊ॥ तेहिअन्तरताकर सुतआवा। मातासोंतबवचनसुनावा॥ क्षुधालागिमोहिं मातुबहूता। जननिकहाधरुधीरजपूता॥ गणपतिकीपूजा करिलेहूं। तापीछेतोहिभोजनदेहूँ॥ तबवहबालकउठा रिसाई। माताकेसन्मुखचलिआई॥दोहा॥ गणपतिकी प्रतिमाहनी, लातनदीन्हगिराइ। मूरतिपटकीक्रोधकरि, पुनि बालामुखखाइ॥३३॥चौपाई॥ मूरतिपूजिपटैकछु- टोना।पूजाछाड़िबैठुइककोना।यहकहिगयेउसभानृपकेरी॥ भलअनभलनाहींमनहेरी॥ तबवाकीमाता अकुलानी। पूजासाजउठायसुआनी॥ थापितकैपूजामनलावा। कर जोरेगणपतीमनावा॥जोगणपतिद्विजसुतपदमारा।ताकर फलअबसुनहुअपारा॥ जबब्राह्मणिसुतगोनृपद्वारे। सभा सूनिलखिमहलसिधारे॥ भीतरजाइसोकौतुकदेखा। शयनकियेदम्पतिकोलेखा॥ देखिकैद्विजसुत अतिभय माना। भ्रमवशबिसरेपगकेत्राना॥ दोहा॥ अपनेपदकी पानहीं, छोड़ेभूपअवास। राजाकीपगपनहिलै, आयेनिज पितुपास॥३४॥चौपाई॥ भोरभयेनीलध्वजजागे। चरण त्रानलखिकहबेलागे॥ काकेपदकीहैंपदत्राना। रानि

कहाप्रभुमैंनहिंजाना ॥ सुनीकिब्राह्मणसुतकीआही । नीलध्वजबोलेमनमाहीं ॥ तुरतै बालकपकरिमँगावा । पुनिचंडालनभूपबुलावा ॥ कहतेहिद्विजसुतआनमँगाई । याहिविपिनमहँमारहुजाई ॥ बालकलैचण्डालसिधाये । समाचारपुनिमातापाये ॥ तबगणपतिकोकीन्हेसिध्याना । करजोरेविनवेविधिनाना ॥ कृपाकरौगणपतिलखिसेवा । विप्ररूपधरिप्रगटेदेवा ॥ गयेजहांनीलध्वजराजा । देखिविप्र निजअस्तुतिसाजा ॥ करिप्रणामनृपशीशनवावा । आशिषदैद्विज वचनसुनावा ॥ दोहा ॥ द्विजसुतकीन्ह नपापकछु, कहिमृदुमीठीबात । निरपराधसुनुराजवह, बालककरियन घात ॥ ३५ ॥ चौपाई ॥ सोसुनिराजातुरतबुलाये । विप्रजानिकैशीशनवाये ॥ द्विजबालकनिज मंदिरगयऊ । देखि मातुउरआनंदभयऊ ॥ धन्यदेवगणनाथगुसांई । दीन्हों बालकमोर छुड़ाई ॥ नृपघरआवेजायसोबालक । तैसी प्रीतिकरैनरपालक ॥ सोबालकमतिमंदगुसांई । गणपति महिमानहिंनबुझाई ॥ सोकारणसुनुधर्मकुमारा । जस बालककोभोव्यवहारा ॥ एकदिवसनृपकोसुततहवां । ब्राह्मणिसुतचलिआवाजहवां ॥ मुखमज्जनकरिभूपकुमारा । जलभाजनलियब्राह्मणिवार ॥ भइअनकृपानाथगणकेरी । ताकरफलअबसुनोबहोरी ॥ मुखमज्जनछूरीतबभयऊ । जल

केपात्रमाथहोइगयऊ॥ राजपुत्रतहँभयेअलेषा। यहकौतु-
कपुरवासिनदेखा॥दोहा॥ द्विजसुतदेखचरित्रयह, मनमहँ
अतिभयमान। ठाढ़विसूरहिमनहिमन, काहकीन्हभग-
वान ॥३६॥ चौपाई॥सबैकहायहभयेअलेषा। जायभूप-
सोंकहियविशेषा॥ ब्राह्मणितनयकुँवरकहँमारा। महाराज-
काकरियविचारा॥ सुनिकैभूपविपुलदुखमाना। कहा-
रिसाइहतौतेहिप्राना॥ मारौशठहिवारजनिलावहु।
ताकरमुख निमोहिंदिखावहु॥ सुनतवचनसबमारन-
धाये। समाचारतबमातापाये॥ व्याकुलह्वैसुमिरेगणदेवा।
जोरिपाणिविनवैकरिसेवा॥ अहोनाथगणनाथगोसांई।
बालकदानदेहुमोहिधाई॥ मोहिंसबभांतिभरोसतुम्हारा।
धावहुनाथनलावहुबारा॥ आरतिहरनकृपाअबकीजै।
संकटकाटिपुत्रमोहिंदीजै॥ आरतगिरासुनीगणराई। धरि-
द्विजरूपप्रगटभयेआई॥ ब्राह्मणिकहँगणपतिसमुझावा।
तुवसुतकर्मकरेफलपावा॥ हमकहँकीन्हेसिचरणप्रहारा।
सोफलभुगतैअधमगँवारा॥दोहा॥ ब्राह्मणिजानेगणपती,
परीचरणकरजोर। अस्तुति करतअनेकविधि, सुनहु-
वचननृपमोर॥३७॥चौपाई॥ यह बालकहैपरमअजाना।
तापरकृपाकरोभगवाना॥ बोले गणपतिगिरासुहाई।
देहौंबालकतोरछुड़ाई॥ यहकहि गणपतिआयेतहँवां।

संकटमेंद्विजसुतहैजहँवां ॥ चंडालनसोंकहगणनाथा । केहिकारणकाटौशिशुमाथा ॥ सबदूतनसमुझावाभेवा ॥ राजकुमारहताइनदेवा। बोलेगणपतिवचनविशेषा ॥ राज कुमारहताइनदेवा । बोलेगणपतिवचनविशेषा॥राजकुँवर मैंखेलतदेखा । धायेतबराजापहँआये ॥ माथनाइकैकथा सुनाये । सुनि मन अचरज कीन्हभुआरा ॥ कहांबोलावहु विप्रकुमारा । आयसुपाइसुसेवकधाये ॥ नृपसुतवेगिभूप पहँलाये । देखितनयनृपअतिसुखपावा ॥ दूतनसोंतब वचनसुनावा । तेहिजननिमारहुवेगिसिधावहु ॥ ब्राह्मणि तनययहांलैआवहु ॥ दोहा ॥ सुनितबधायेविपिनकहँ, जातनलागीबार । ब्राह्मणिकोसुतसंगलै, आयेजहांभुआर ॥३८॥चौपाई॥ देखि भूप अतिआदर कीन्हा । सँग बसायचरणोदकलीन्हा ॥ यहिकावधनचहादुइवारा । बाचिजाइसोकवनविचारा ॥यकिकीमातुयोगकछुजाना। तासोंबालकबचैनिदाना॥असविचारिकेदूतपठाये।ताकी- मातैतुरतबुलाये ॥ आईब्राह्मणिदेइअशीशा । प्रथमैं भूप- नवायउशीशा ॥ ब्राह्मणितनयदेखिसुखपाये। तबहींराजा वचनसुनाये ॥ कछुचेटकतुमजानुसयानी । सोविधिहम- सोंकहहुबखानी ॥ कहब्राह्मणीसुनोहोराजा । मैंपूजौंगण- पतिमहराजा ॥ दोहा ॥ गणपतिकीपूजाकरौं, ध्यानधरौं

मनलाइ। परसनहोतेभूपसुनु, सकलकष्टमिटिजाइ ॥३९॥
चौपाई ॥ सत्यसत्यराजाकरिमानी । ब्राह्मणिसोंबोला
मृदुवानी ॥ केहिविधिपूजौंगणपतिगाई । तबब्राह्मणिकहि
सबसमुझाई ॥ कनकवसनभरिविपुलमँगावा । ब्राह्मणि
कोदैपदशिरनावा ॥ तनयसमेतपरमसुखपाई । आशिपदे
ब्राह्मणिघरआई ॥ गणपतिकीपूजातबभयऊ । सबसुख
भयोसबैदुखगयऊ ॥ व्रतप्रभावनीलध्वजराजा । सुतपत्नी
सुखसंपतिभ्राजा ॥दोहा॥ तातेसुनहुधर्मसुत, व्रतकरिपूजु
गणेश । विघ्नहरणकेनामते, मेटतसकलकलेश ॥ ४० ॥
चौपाई ॥ मुनिकैकथाजोरिकैहाथा । धर्मतन्यतबनायउ
माथा ॥ धन्यधन्यतुमधन्यमुरारी । मोपरकृपाकीन्हअति
भारी ॥ गणपतिकीसबकथासुनाई । मोरतनुकेपापमि-
टाई ॥ अ प्रभुकृपाकरोमनलाई । ताकीविधिकहियेसमु-
झाई ॥ हरिबोलेसुनुराजभुवारा। व्रतविधिकहोंसकलसुख-
सारा ॥ भादौंमासचौथिजबआवै । तादिनव्रतआरम्भ
करावै ॥ व्रतारंभकैकरिअस्नाना । बहुरिकरैपूजाभगवाना ॥
काहुदेवकोकरैननिंदा । मनमहंसुमिरैबालगोविंदा ॥ रवि
अस्ताचलकोजबजावै । तबगणपतिपूजामनलावै ॥दोहा॥
गोगोवरसोंलीपकै, चौंकेचारुपुराइ । कलशधरैवेदीरचै,
अक्षतदूबचढ़ाइ ॥४१॥चौपाई॥ पाटाधोयधरैसोइआगे ।

पूजैगणपतिमनअनुरागे ॥ मूर्तिकनककुंकुमकीहोई । कीपषाणपूनरिकीसोई ॥ तेहिमूरतिकीपूजाकरई । माल चढ़ाइपुष्पशिरधरई ॥ धूपदीपआरतिकरिनाना । विधि सोंआनिधरैपकवाना ॥ यहसबकरिआचमनकरावै । तांबूलपुनिआनिचढ़ावै ॥ जोविधिबारहमासकिहोई । तेहि विधिसोआवहिदेसोई ॥ पाछेकथासुनैमनलावै । जबलगि चंद्रउदयकरिआवै ॥ चंद्रअर्घ्यदेकरैप्रणामा । करैविसर्जन पुनिसुखधामा ॥ पुनिब्राह्मणहिंदक्षिणादेई । आशिर्वाद ताहिसनलेई ॥ त्रियापुरुषव्रतधारैकोई । मनवांछितफल पावैसोई ॥दोहा॥ यहिविधिव्रतधारणकरै, पूजैदेवगणेश । जोविधिबारमासकी, सोअबसुनौनरेश ॥४२॥चौपाई॥ भाद्रचौथिपूजामनलावै । सुमनतरोईकेरमँगावै ॥ घृतके संगहोमजोकरई । तीनिजन्मभवसागरतरई ॥ मासकुवार चौथिजबआवै । दूपहरीकेफूलमँगावै ॥ घृतसंगहोमकरै जोकोई । सबबिधिसेपावैफलसोई ॥ कार्तिकमासचौथि जबआवै । उरददालिघृतहोमकरावै ॥ पूजापूरणताकी होई । सकलसिद्धिफलपावैसोई ॥ अगहनमासचौथिजब आवै । भटकटइयाकेफूलमँगावै ॥ घृतसेहोमकरैसुतपावै । रिपुनाशकदुखनिकटनआवै ॥दोहा॥ पूसमासकीचौथिको, वंशपत्रघृतहोम । वश्यहोइराजाप्रजा, सिद्धिहोइसबकोम

॥४३॥चौपाई॥ माघचौथिअँधियारीआवै।व्रतकरिसांभरिनोनमँगावै ॥ घृतसँगहोमकरैजोकोई । राजावश्यताहिनितहोई ॥ फाल्गुनकृष्णचौथिकीराती । अमिलतासकीआनैपाती ॥ सेंधाघृतसोंहोमकरावै । पटमोहिनीभूपसोपावै॥ चैतमासचौथीजबआवै। तबनिबुवाकेबीजमँगावै॥ घृतसँगहोमकरैजोकोई । बाँझतियापुत्रवतीहोई ॥ मासवैसाखचौथिजबआवै । राईकेबलिसुमनमँगावै ॥ घृतसँगहोमकरैनरकोई । होइसिद्धिफलपावैसोई ॥ ज्येष्ठचौथिअँधियारीआवै । सुमनसेवतीकेरमँगावै ॥ घृतसँगहोमकरैचितलाई । ताकिबुद्धिहोइअधिकाई॥ मासअषाढ़चौथिजबआवै । कमलफूलकरलेइमँगावै ॥ युक्तिसमेतहोमजोकरई । सोप्राणीपुनिदेहनधरई ॥ श्रावणमासचौथिजबआवै । कुसुमसेहरुवाकेरमँगावै॥ सावधानहोमतघृतजोइ । दनुजदेवताकेवशहोई ॥दोहा॥ यहिविधिबारहमासकी, कहीभूपसमुझाइ । विधिसोंपूजेगणपतिहि, सकलकष्टमिटिजाई ॥४४॥चौपाई॥ सुनिकैकथाधर्मशिरनावा । धनिगोपालयहकथासुनावा॥जोविधिकृष्णकहाव्रतनीती। तेहिविधिसोंनृपकीन्हप्रतीती॥ गणतिकीभईकृपाअपारा। माराशत्रुलागिनहिंवारा ॥ सुखसहहर्षिराज्यतबकीन्हा । गणपतिकीदायालखिलीन्हा ॥ गणपतिकेरिबातचित-

आई ॥ जोमनसाकरसोफलपाई । ऋधि सिधिसंपति-सुखनअपारा ॥ धरणिधामसुतसंपतिदारा । नारीपुरुष-करैव्रतकोई ॥ सकलसिद्धिफलपावैसोई । जोयहकथा सुनैअरुगावै ॥ अंतकालसुरपुरवहजावै ॥दोहा॥ श्रीगण-पतिकीकथायह, संस्कृतमध्यविशाल । यथाबुद्धिभाषा रची, जड़मतिमोतीलाल ॥ १ ॥

इति श्रीगणेशपुराणं संपूर्णं श्रीगजाननार्पणमस्तु ।

श्रीः

अथ श्रीकरुणाष्टकप्रारंभः

श्रियैनमः ॥ छंदमत्तगजेंद्र ॥ नाथविनयसुनियजुदया-निधिजानिस्वदासकृपाकरियेजू ॥ ज्योंजुविभीषणपैसुढरे रमणेशहुपैअबत्योंढरियेजू ॥ कीजियनाथअजामिलकी

सुधि मोअघकोनहियेधरियेजू ॥ मैंअघमोचनजानिगह्यों पद सोकरियेअघकोहरियेजू ॥१॥ छंददुमिला ॥ शबरी परनाथकरीकरुणा वहकौनकुलीनकहौंकिनजू॥ तुमवानर भालुनिहालकियेकितवेदिकयागकियेतिनजू॥गतिगीधहि दीन्हिसुकीन्हिक्रिया नितहीनितमांसभख्योजिनजू॥ रम-णेशपुकारतआरतहै सुनियेबहुबीतिगयेदिनजू॥२॥ जिहि पापहत्योहरिवालिवही अघनाथसुकंठकैनितजू ॥ पुनि सोइविभीषणकीन्हिकुचाल कृपालुननेकधरीचितजू॥ नहिं दासनकोअपराधगिन्यो तुमदीनदयालुकियोहितजू ॥ अतिआरतदीनपुकारतहै रमणेशकिवेरगयेकितजू ॥ ३॥ छंदचंद्रकला ॥ कुबरीप्रभुकौनकुलीनरही जिहिसोंरति कीन्हिस्वलोकपठाई॥ उपनैनभयोकबग्वालनको जिनकी ब्रजमेंनितजूठनिखाई ॥ शुभसाधनव्याधकियोकहँजाहि पठायहुधामविमानचढ़ाई ॥ अतिकोमलचित्तसदाअस क्यों रमणेशकीवेरधरीनिठुराई ॥ ४ ॥ कबगोपवधूपति धर्मव्रतीजिनसोंकरिप्रीतिदियोनिजधामा ॥ नयतीजुअ-जामिलभक्तकियो गणिकाकबजाइवसीशुभठामा ॥ भरि अंकमिल्योजिहिसोंउठिकै नहिंनाथहतोधनवानसुदामा ॥ रमणेशकिनाथसुनौविनती फुरकीजियआजुदयानिधिना-मा ॥५॥ दुर्योधनकेपक्कवानतजे छिलकानिजभक्तसुगेहम खाये ॥ यहबानितुम्हारिसदाअजुहै निहकिंचनहीतुमको

निलभाये ॥ हरिदीनदयालुगरीबनिवाज सुलोकहुवेदचहूं युगगाये ॥ रमणेशविभोअतिदीनअहै नमिलैजगमासम खोजलगाये॥६॥ अपराधगनौममतौजुसुनौ तजिकेपति-धर्मभईतबमीरा ॥ शुचिताजगमेंसुप्रसिद्धभली करमाक-लिमेंब्रजमेंजुअहीरा॥रइदाससुवैदिकपूजकहै कबनेमगह्यो वनमेंबसिकीरा ॥ रमणेशहुयाचतहैहरिसों रघुवीरहरौमम संसृतिपीरा ॥७॥ तुमहींगतिहौतुमहींपतिहो तुमहींजननी तुमहींधनहोजू॥ तुमहींगुणअवगुणग्राहकहो तुमहींभगिनी युवतीजनहोजू ॥ तुमहींममभित्रपितातुमही तुमहींतनुहो तुमहींमनहोजू॥ रमणेशकरैकहँलोंविनती तुमहींममसर्वस जीवनहोजू ॥८॥ दोहा ॥ यहकरुणाअष्टकपढ़ै, जोजन नितमनलाइ । सीतापतिदशरथसुवन, ताकीकैंसहाइ॥

इति श्रीकविरमणेशकृतंकरुणाष्टकंसंपूर्णम् ॥ श्रीसीतारामचंद्रोजयति ॥

विनती-सवैया

आजुलगेबहुकीन्हउपाइ तहांकबहूँसुखनेकुनपायो । योगविरागकियेतपतीरथ भांतिअनेकनरूपबनायो॥जन्म अनेकगयेरघुनाथ नरूपतुम्हारहियेमहँआयो॥ देखिदशा अपनीदशहूँदिशि हेरिरहेशरणागतआयो ॥ १ ॥ अंग विभूतिलगाइकेचामबिछाइके ध्यानकरचोकबहूँ ॥ मूँड़ मुड़ाइबनाइसुवेष कहावतसिद्धिफिरचोतबहूँ॥ ऊरधबाहु

तपादिकियेतहँ मानकहँअपमानकहूँ ॥ श्रीरघुवीरदयातुम्हरी विनवौंरघुनाथदुखीअबहूँ ॥ २ ॥ डूबतहौंदुखसिंधुमँझार सियावरजूगहिबाँहउबारो। जोनगहोकरजातबहोतवआपुहिकोजुपरिश्रमभारो ॥ तातेनकीजेबिलंबदयानिधिनाथपुकारतहौंचितधारो। श्रीनृपराजकिशोरप्रभो करुणाकरिकेरघुनाथनिहारो ॥ ३ ॥ रागधनाश्री ॥ रघुवरराखहुविरदतुम्हारी ॥ मैंअतिअधमअधमअधमनते आयोशरणतुम्हारी ॥ वाल्मीकिआदिकभाषतहगिशरणागतअघहारी ॥ जोमैंपापकीन्हअघमोचन शारदसकैनउचारी ॥ तातेअबतवशरणैआयों श्रीवररमण विहारी ॥

अथ सनेहलीला प्रारम्भ

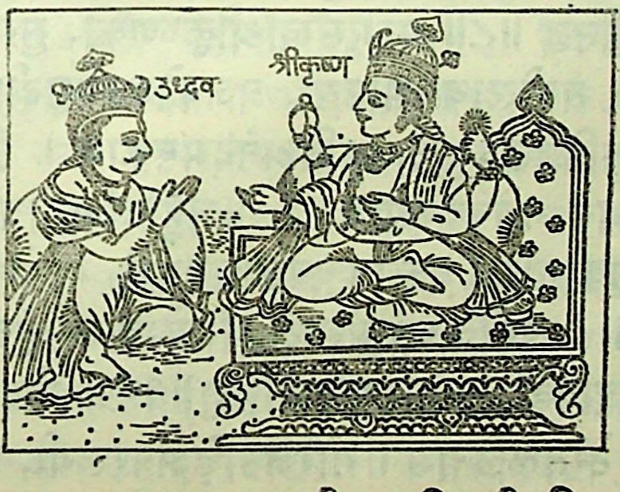

दोहा ॥ एकसमयव्रजवासकी, सुरतिकरीहरिराय। निज

जनअपनोजानिकै, उद्धवलियेबुलाय॥१॥ श्रीकृष्णवचन ऐसेकह्यो, उद्धवतुमसुनिलेहु। नंदयशोदाआदिदै, जा ब्रजकोसुखदेहु॥२॥ ब्रजवासीबल्लभसदा, मेरेजीवनप्रान। तातेनिमिषनबीसरौं, मोहिंनँदरायकीआन॥३॥ हमउनसों ऐसोकरयो, आवैंगेरिपुजीति। अबतोरेकैसेबनैं, पिता मातुसोंप्रीति॥४॥ उद्धववेब्रजयोषिता, उनकेमेरोध्यान। तिन्हैंजायउपदेशद्यो, पूरणब्रह्मसुज्ञान॥५॥ पागोअपने अंगको, कीटमुकुटपहिराय। श्रुतिकुण्डलमालादई, अपनो वेषबनाय॥६॥ अरुअपनोरथसाजिके, सूतसारथीदीन्ह। उद्धवचरणप्रणामकरि, रथआरोहणकीन्ह॥७॥ विद्यावंत विवेकयुत, शीलवंतगुणशुद्ध। चतुरचिह्नजानतसबै, यो प्रवीनश्रीउद्ध॥८॥ परमसखाश्रीकृष्णको, सुरगुरुशिष्य प्रवीन। तातेलायकपाठयो, ब्रजकोआयसुदीन॥ ९॥ रथहिजोतिउद्धवचले, अतिअनंदमनकाम। दिनकरघर प्रापितभये, गयेनंदकेग्राम॥१०॥ चहुँदिशिगोधनआवहीं, वृषभानूकीगाय। बच्छवचनलागतभले, मानोथानसुराय॥११॥ अपनीअपनीमंडली, मिलेग्वालकेवृंद। मुरली मधुरबजावहीं, गावहिंगुणगोविंद॥१२॥ गोदोहनमोहन त्रिया, टेरतलैलैनाम। गोरजउड़िअंबरलगी, छबिपावत नँदग्राम॥ १३॥ तबउद्धवरथहांकिकै, गयेनंदकीपौर।

नन्दयशोदादेखिकै, सन्मुखआयेदौर ॥१४॥ उद्धवरथते उतरिकै, मिलेनंदकोधाय। नयनसजलजलसोंभरे, आनँद उरनसमाय॥१५॥ करगहिलैगृहकोचले सुतसनेहकेभाय। अशनवसनबहुविधिदिये, निजमन्दिरपधराय ॥ १६ ॥ अरुचंदनबहुपुष्पजल, धूपदीपइत्यादि । विधिपूर्वक पूजाकरि, सुखशय्याकुसुमादि॥१७॥ नंदयशोदाप्रेमसों, पूंछनलागेबात । शूरसेनकेपुत्रकी, कहोपरमकुशलात ॥ ॥१८॥ जिनकेपटबालकहते, बन्दिपरेबेकाज। केतिकदिन दुःखितभये, दुष्टकंसकेराज ॥१९॥ भलीभईसैनासहित, कृष्णकियोहतकंस। तादिनतेसुखपावहीं, मातुपितायदु-वंश ॥ २० ॥ जाकेअष्टादशत्रिया, रामकृष्णसुतदोय। सरबरितावसुदेवकी, कहाकोनपैहोय॥२१॥ देवनकेमंगल भये, श्रीवसुदेवजनमंत । घरघरप्रतिसबसुरनके, दुंदुभि बजेअनंत ॥२२॥ पटरानीदेवकसुता, सुकृतपरमकृपाल। ताकेगृहप्रगटतभये, श्रीकृष्णकंसकेकाल ॥२३॥ उद्धव तातकीजिये, उनकोसुमिरनध्यान। अबकीधौंकबदेखिहौं, अनँदबधायेकान॥२४॥ सुफलकसुतआयेइहाँ, रामकृष्ण लैजान। तबतेतनुगतिदोभई, यहांदेहहांप्रान॥२५॥ नयन-यशोदाजलभरे, कंठश्वासनहिंलेत। कहिकहिबातैं पुत्रकी, हीयोभरिभरिदेत॥२६॥ निमिषनिमिषमहँझगरते, मोसों

दोउआत । अबकौंधौंकबदेखिहौं, चोरिचोरिदधिखात ॥२७॥ मोतिनकीमालागरे, राजहंसगतिदोर । यहअंगन कबदेखिहौं, रामकृष्णकोजोर ॥२८॥ पीतांबरकोओढ़नो, अरुबाजतमृदुबेनु । अबकौंधौंकबदेखिहौं, वनहिंचरावत धेनु ॥२९॥ कनोभूखेहोतहैं, प्रातकालकीबान । तहांकहौ कोराखिहै, घृतसोंरोटीसान ॥३०॥ बातकहौंइकदिवसकी, तुमसोंहितूसुनाय । गोदहिकर्तबनाचलै, चितैचितैरहिजाय ॥३१॥ उद्धवपयफलनलग्यो, हूंदौरीतजिअंग । पीछेते मेरोलला, दधिकोभाजनभंग ॥३२॥ मोहिंदेखिअतिरिस भई, थोरेदधिकेकाम । ऊखलसोंआनँदघन, मैंबांधेगहि दाम ॥ ३३ ॥ तादिनतेखटकतसदा, मेरोयहअविवेक । ऐसीकहाँकोसंभवै, सुतसोंअवगुणएक ॥ ३४ ॥ तबउद्धव ऐसेकहैं, सुतकेसुनोसंदेश । उनकोनाहिंनबीसरो, याब्रजको आवेश ॥ ३५ ॥ तुमहिंपायँलागनकह्यो, जलसौंनयन भराय । मैयामाहिंनबीसरी, बड़ोकियोपयप्याय ॥३६॥ जादिनतेआयेइहां, छांड्योगोकुलगाँव । तादिनतेकोउना कहै, कान्हकान्हबलिजावँ ॥३७॥ जबहमतुमतेबिछुरके, आयेमथुरामाँझ । मैंकबहूंनाहींपियो, घियाप्रातअरुसाँझ ॥ ३८ ॥ अरुतुमबाबानंदसों, ऐसीकहियोजाय । वेतुम नीकेराखियो, धौरीधुमरीगाय ॥३९॥ मनवचकर्मसहेत

धरि, करिहौंपूरणकाम । आवेंगेदिनपांचमें, हमभैया बलराम ॥४०॥ राजपाटसिंहासनो, खानपानसुखदेत । याब्रजसुखपावतभले, वनमेंवटसंकेत ॥४१॥ बातकहत बीतीनिशा, तमचरकीन्होगान । मानोगर्जनमेघकी, घर घरदधीमथान ॥४२॥ उद्धवउठियमुनागये, कीन्हयमुन अस्नान। सेवासुमिरनसबकियो, जोअपनोउनमान ॥४३॥ करिकृतआयेघोषमें, उद्धवभरआनंद । याब्रजसुखपावत भले, पूरणपरमानंद ॥ ४४ ॥ अपनेअपनेधामते, बाहर निकरींग्वार। रथदेख्योश्रीकृष्णको, नंदमहरके द्वार ॥४५॥ यूथयूथएकैभईं, कीन्हींयाहिविचार । यहनाहींसुतनंदको, हैकोऊप्रतिहार ॥४६॥ उद्धवपैगोपीगईं, कीनोवंदनपान । शीशनाइआदरकियो, सखाकृष्णकोजान ॥४७॥ उद्धव ब्रजआयेभले, कहौकृष्णकुशलात। वहांजाइकीन्हींभली, कहुकछुउत्तमबात ॥४८॥ तुमसाँचेउत्तमसखा, मनवच कर्मसहेत । प्राणनकोहरिलेगये, पिंडदानतुमदेत ॥४९॥ उद्धवहमतोबावरी, करैंकवनसोंप्रीति। वहांजाइछांड़ीसबै, नंदगाँवकीरीति ॥५०॥ याब्रजकबहुँनआइहैं, मैयाकेहित काज। ब्रजयुवतिनकेनाभये, भयेवहांकेराज ॥५१॥ हम श्रवणनछाँड़ीसुनी, मोरपक्षवनपात। सुरभीसाँचीचित्रकी, नाहिंदेखसकुचात ॥५२॥ तबउद्धवऐसीकही, सुनौसकल

ब्रजनार। बातकहोपरब्रह्मकी, आतमतत्त्वविचार ॥५३॥ वेतुमपरकरिहैंकृपा, प्रभुताजानिपरम्म। तजियेनातोगाँ-वको, भजियेपूरणब्रह्म ॥५४॥ छायामायारहितहै, नहीं होतउनमान। हरितुमसोंऐसोकह्यो, भजियेश्रीभगवान ॥५५॥ जापदकोयोगेश्वर, लगेरहतअनुराग। साधनसोइ कीजैसदा, नामधरेवैराग ॥५६॥ नयनमूँदिमुखमौनगहि, त्रिगुणरहितनिजधाम। तुमसबहीमेंदेखिहौ, आपहि आतमराम ॥५७॥ मधुकरअंतरकठिनहै, कठिनबात कहिजात। भूखमरैदिनसातलौं, सिंहघासनहिखात ॥५८॥ यद्यपियोगप्रसिद्धहै, तोतुमह्वालैजाव। बहुरयोंनाहिन पाइहौ, ऐसोउत्तमदाव ॥५९॥ उद्धवतातेदेखिहौ, तत्त्वरूप तनुमाहिं। साहमकोसिखवतकहा, तुमहींसाधतनाहिं ॥६०॥ यहतौउनकोचाहिये, जिनकेअंतरराय। दादुरतौ जलबिनजिवै, मीनतुरतमरजाय ॥६१॥ हैंदोउएकैठौरके, दादुरमीनसमान। वेजलबिनमारुतभषैं, वेबिछुरततज प्रान ॥६२॥ उद्धवइतनोअंतरो, ब्रजमथुराकेलोग। विमुख करैंवारूपको, जारिदहैसोयोग ॥६३॥ पठयेआयेकवनके, कवनमित्रकोजानि। यहांतुम्हारोकौनसों, कहोकवनपहि-चान ॥६४॥ वचनवचनबाढ़ीव्यथा, नहिंजानतपरहेत। मधुकरदाहेअंगपर, कहालोनघसिदेत ॥६५॥ तनकारेमन

साँवरे, कपटीपरमपुनीत । मधुकरलुब्धीवासके, निमिष एककेमात ॥६६॥ तुमतौस्वारथकेसगे, नहींबेलिसेभाव । भावैयहगह्वरबढ़ौ, भावैजरिबरिजाव ॥६७॥ तुमतोचरणा जनिछुवौ, ऐसीगतिकेर्वार । मधुकररसअतिलालची, नहिं जानतपरपीर ॥६८॥ रहतनिकटनितश्यामके, तातेनिपट नपीर । बिछुरोगेहरिसंगते, तबजानोगेवीर ॥६९॥ उद्धव हरिबिछुरनव्यथा, तुमपैबीतीनाहिं । बिछुरोगेजबश्यामते, तबजानोमनमाहिं ॥७०॥ हमतुमतेकैसैकहैं, मधुकरसुनो सँदेश । नाहरिजातिनपांतिके, कहाकरोउपदेश ॥७१॥ कितविधनासिरजोहमैं, कितदियोब्रजकोवास । कितमि- लापश्रीकृष्णसों, कितबिछुरनकीआस ॥ ७२ ॥ नयन हमारेमधुकरा, आननकृष्णसरोज । ब्रजछांड़ेतादिवसते, वैरीभयामनोज ॥ ७३ ॥ मनमोहनवेनामहैं, मोहननयन विशाल । मोहनपढ़िकछुमोहनी, लैमोहीब्रजबाल ॥७४॥ सबअंगमोहनरूपहै, मोहनवेणुरसाल । मोहनमूरतिमाधुरी, मोहनवचनमराल ॥७५॥ वचनवचनमोहीत्रिया, हमतुम केतिकबात । सुरनसहितसुरयोषिता, थकितधामनहिंजात ॥ ७६ ॥ एकसमयनिशिशरदकी, मोहनवेणुबजाइ । बैन सैनदेसांवरे, लीन्हींसबैबुलाइ ॥ ७७ ॥ अरसपरसहमसों मिले, कुंजनकियोविहार । सोसुखनाहींबीसरै, सुमिरत

वारंवार ॥७८॥ एकसमयजलकेविषे, करतकेलिअस्नान। चीरचोरतरुपैचढ़े, वयशुदाकेकान्ह ॥७९॥ बहुरचोनाहिं नबीसैर, भुजबलकीअनुहारि। राखिलियेब्रजकुलसबै, नखपरगिरिवरधारि॥८०॥ एकसमयवनकेविषे, कुंजकुंज वनधाम। हरिहमसोंक्रीडाकरी, पलपलपूरणकाम॥८१॥ एकदिवसइकगोपिका, गईगेहकेद्वार। दधिचोरतसोंकेहरी, चलेचपेटामार॥८२॥एकदिवसहरिआमिले,मोहिंसांकरी पोर। मटुकीपटकीभूमिपर, हँसिहारकोतोर॥८३॥ ऐसी दिनदिनकीकथा, वर्णतनाहींओर। हमरीवेजानतसबै, मोहनचितकेचोर॥८४॥ लीलागोकुलगांवकी, हमजानत मनमाहिं। उद्धवतुमश्रवननसुनी, नयननदेखीनाहिं॥८५॥ जोतुमलायेयोगको, यदुपतिकेपरधान। हरिरसकीसींची सबै, नहिंभावतरसआन॥८६॥ पतिव्रताहूरूपकी, साखि भरतसबगाउँ। यदपिभजेकोउभूपको, तोव्यभिचारीनाउँ ॥८७॥ सीपरहतसागरविषे, मनमिलापनहिंलेत। मधुकर यहउत्तममतो, स्वातिबूँदसोंहेत॥८८॥ मानसरोवरतेउड़ैं, आनभूमिचलिजाहिं। विधिवाहनक्षुध्यारथी, तोउच्छिष्ट नखाहिं॥८९॥ जलनाहिंनथोरोकछू, सागरनदीनिवान। स्वातिबूँदचातकपियै, औसबजूठसमान॥९०॥ येदोउ नयनविराटके, निगमकहतहैंनीत।उड़िचकोरअंतरकियो,

दिनकरअरुशशिमीत॥९१॥ वेलिहोतवर्षासमय,करतवृक्ष सोंप्रीति। प्राणगयेछोड़ेनहीं, अपनीउत्तमरीति ॥९२॥ हम तोनरदेहीधरी,इतनीजानतनाहिं। रसतजिभजियेयोगको, भंगहोतव्रनमाहिं ॥९३॥ करतेआयेसोकरत, ऊंचनीचसों संग। हमकबहूंनाहिंनकिये, इष्टभावव्रतभंग॥९४॥ यद्यपि कुबजाचतुरहै, तहूंकंसकीदास । भवनगवनकीनोंहरी, तुमसेसेवकपास॥९५॥अपलक्षणतेनाडरो,बड़ेभूपकेपूत। कांवेसाँचेरावरे,कांतुमसाँचेदूत ॥९६॥ याहिकोठनलागत हमें, सुनोश्यामकोहेत । वहाँजायकुबजारमी, हमैंयोग सिखदेत ॥९७॥ जोकछुलिखोलिलाटमें, बिछुरनमिलन सँयोग । दोषकवनकोदीजिये, जानतहैंसबलोग ॥९८॥ देहधरीजाकारणे,लगिहैंताकेकाम।मनघटयहरससोंभरो, नहींयोगकोठाम ॥ ९९ ॥ मोरमुकुटकटिकाछनी, कुंडल तिलकसुभाल । पीतांबरक्षुद्रघंटिका, उरवैजंतीमाल ॥ १०० ॥ करलकुटीमुरलीगहे, घुंघरवारेकेस । वेहमरे नयननवसे,श्याममनोहरवेस॥१०१॥तबउद्धवऐसीकही, धन्यधन्यव्रजनारि । प्रेमभक्तिरसवशीकिये, श्यामभुजा उरधारि॥१०२॥ यहलीलातुमकारणे, गोपवेशऔतार । निर्गुणतेसद्गुणभये, तुमतेकरनविहार ॥ १०३ ॥ निगम जाहियोंषतरहे, अगमनपावतअंत । सोतुम्हरेजूठनगहे,

श्रीपतिश्रीभगवंत ॥ १०४ ॥ योगेश्वरपावैं नहीं, सिद्धि समाधिलगाइ । सो तुम्हरेरसवशभये, वनवनचारतगाइ ॥१०५॥ कहतसुनतऐसीकथा, वहाँरहेषट्मास । तबउद्धव आज्ञालही, हरिचरणनकीआस ॥१०६॥ नंदमिलेयशुदा मिली, मिलेगोपिअरुग्वाल । वंदनकरिकरिसबहिसों, उद्धवचलेउताल ॥ १०७ ॥ नंदकहीयसुदाकही, गोपिन कहाबहारि । वेरजधारनीरमिरहे, ब्रजकोनातोतोरि ॥१०८॥ अबकबहूँकरिहैकृपा, सेवकअपनेजानि । हरिहमतेनहिं बीसरो, पूरबहितपहिचानि ॥१०९॥ तबउद्धवआयेइहाँ, कृष्णचंद्रकेधाम । पाँयलागवंदनकियो, बोलतलैलैनाम ॥ ११० ॥ ग्वालबालसबगोपिका, ब्रजकेजीवअनन्य । तुमहिंपाँयलागनकह्यो, सुनहुदेवब्रह्मण्य ॥ १११ ॥ नंद यशोदाहेतकी, कहियेकहाबनाय । कीवेजानततुमभले, मोपैकहानजाय ॥११२॥ वेचिततेटारतनहीं, रामकृष्णकी जोर । मधुनायकमुरलीगहे, मूरतिमधुरकिशोर ॥११३॥ अरुगोपिनकेप्रेमकी, महिमाकहूँअनंत । मैपूछीषट्मास लौं, तऊनपायोअंत ॥११४॥ देहगेहसबछोड़िके, धरत रूपकोध्यान । उनकोभजनविचारिये, औसबकीकोज्ञान ॥११५॥ संतभक्तभूतलजिते, तेसबब्रजकीनारि । चरण शरणलागीरहैं, मिथ्यायोगविचारि ॥११६॥ उनकोगुण

निनगाइये, करिकरिउत्तमप्रीति। मैंनाहींदेखीसुनी, ब्रज-
वासिनकीरीति ॥ ११७॥ तबहरिउद्धवसेकही, हूँजानत
सबअंग। मैंकबहूँछोड़ोनहीं, ब्रजवासिनकोसंग॥ ११८॥
ब्रजतजिअंतनजाइहौं, मेरेतोयेटेक । भूतलभारउतारिहौं,
धरिहौंरूपअनेक॥ ११९॥उद्धवतुमजानौनहीं,प्रेमभक्तिकी
रीति । गोपिनकेसम्बन्धते, उपजैप्रेमप्रतीति ॥ १२० ॥
कृष्णभक्तसोंजानिये, जाकेअंतरप्रेम । राखेअपनेइष्टको,
गोपिनकेसोनेम ॥ १२१॥ यहलीलाब्रजवासकी, गोपी-
कृष्णसनेह।जनमोहनजोगावहीं,सोनरउत्तमदेह॥१२२॥
जोगावैसीखैसुनै,मनवचकर्मसहेत। रसिकरायपूरणकृपा,
मनवांछितफलदेत ॥१२३॥ गोपीअरुउद्धवकथा, भूपर
परमपुनीत। तीनलोकचौदहभुवन, वंदनीकशुभगीत ॥
॥ १२४ ॥ नाशतसकलकलेसओ सुखउपजतमनमोद ।
युगलचरण मकरंदमन, पावतपरमविनोद ॥ १२५ ॥
श्रीमुकुन्दमन मधुपजहँ, सकलसंतअनुराग। यशुदा
प्रेमप्रवाहमें, पड़े रहतबड़भाग ॥ १२६ ॥

इति श्रीसनेहलीलासमाप्ता

अथ दानलीला प्रारम्भ

दोहा—चलौसखीतहंजाइये, जहांबसतब्रजराज।
गोरसबेंचतहरिमिलैं, एकपंथदोकाज॥१॥

चौपाई॥ प्रभुपूरणब्रह्मअखंडा। जाकेरोमकोटि ब्रह्मण्डा॥ जबसद्गुणब्रह्मकहाए। मथुरातेवृन्दावनआए॥ जहंदेवलोकमुनिजेते॥ सबगोपपशुआलिनितेते। देवकी सुतनामधराए॥ वसुदेवहिरूपदिखाए। जबगोकुलइच्छा कीन्हीं॥ वसुदेवहिआज्ञादीन्ही। जिननंदभवनपहुंचाए॥ तहंनंदकेलालकहाए॥छंद॥ जन्मलियेवसुदेवके गृहनंदके बालकभए। छपनकोटियदुवंशमायायूथगोपीग्वालके॥ श्रीकृष्णकेसंगबहुतबालकगोचरावनवनगए। हर्षिगावहिं दानलीलासुनौसज्जनकानदे॥चौपाई॥ सबघरघरकीब्रज नारी। दधिगोरसबेचनहारी॥ मिलियूथमतोसबकीन्हो। यमुनातट मारगलीन्हो॥ आगे मोहन धेनु चरावैं। मधुरे

स्वरवेणु बजावैं ॥ जहं बाट मथनकीसोई । मुरलीसुनि आनंदहोई ॥ सब घाटउपरचलिआई । पहिचानिलिये यदुराई॥ एकबालककहन पुकारी।तोहिंसूझतनाहिंगंवारी ॥छन्द॥ तोहिंसूझतनाहिंगंवारिगूजरिकृष्णठाकुरघाटके । आइकाहेनकरोबिनतीअजहुंहैंवर्षसातके ॥ हृदयसमुझि विचारिग्वालिनिकृष्णछांड़िनकहांचली॥ दानदेहुनिवारि अपनोहरिभलेतुमहूंभली ॥ चौपाई ॥ मिलियूथगोपिका आई । पहिचानलियेयदुराई ॥ सुनिबातमबेमुसकानी । हम आजुसुनेहरिदानी ॥ हमकौनकहांतेआई । हमकोहरि चीन्हतनाईं ॥ तुमगोकुलकीब्रजनारी । तुमहौवृषभानु दुलारी ॥ तुमरेशिरगोरसभारा । हमहैंयमुनाघटवारा ॥ कछुदानहमारोलागै। हंसिकैमनमोहनमांगै ॥छन्द॥ तीन लोकमेंकौनजानेघाटयमुनातीरको । जातआतवत कुञ्ज वनमें रहतल लअहीरको॥दानदेववृषभानुलाड़िलि सुयश हमसों लीजिये । नंदकेसुतजानहसोंगर्वबहुतनकीजिये ॥ चौपाई॥तबग्वालसखामिलिघेरे। अरिकामटुकीमहंतेरे ॥ कोइहातडारिदधिकाढ़ैं। तब द्वंद्वचहूंदिशिबाढ़ैं॥ इकग्वा-लिनि उठीरिसाई।प्रभुकायहगतिचलाई॥ कछुमांगदही-भरि लीजै। नइदानकीरीतिनकीजै॥ जोकंसराजसुनिपैहै। तुमहूंकोउदेशपठैहै ॥छन्द॥ जोकंसराजकेराज्यमेंप्रभुनई

रीतिनकीजिये । नंदकेगृहद्वंद्वउपजेदुखपरेतनुछीजिये ॥ सदाआवतजातमथुरादानहमसोंकिनलिये । दहीमांगत छांछदुर्लभनीरयमुनापीजिये॥ चौपाई॥ जबग्वालिनिकहि असबाता। हंसिबोलेत्रिभुवनदाता॥ तुमतीनलोकमेंदेखो। हमकोजनिमानुषलेखो ॥ हमहींसबदैत्यसंहारा । इकका करैकंसविचारा॥ तुमकंसकोकरहुगुमाना । तेहिकालबरीं पिसमाना ॥ अबउग्रसेनभएराजा । हमहूँअबताहिनिवा- जा॥ हमसोंहठवादनकीजै। हँसिदानहमारोदीजै॥ छन्द॥ जाकोवेदपुराणगावैंमनमानैसोईकरै। परमअधीनबलहीन जोनरकंसकेडरसोंडरै ॥ दहीगोरसकोनबूझैदेखअभरण आपनो । जटितहारालालकंचनमांगमोतिनसोबनो ॥ चौपाई॥ कितमोतिनमांगबिराजै। कितपावननूपुरछाजै॥ हितकंठरत्नकेमाला । हीरामणिहूनँदलाला ॥ बाजूबन्द कंगनभलमोहै। नकबेसरसोंजगमोहै॥ शिरबेणीगुथींबहु- भांती। तहँलागिरतनकीपांती॥ मणिमाणिककंगनडोलै। मधुरीकटिकिंकिणिबोलै॥ कितपाटपीतांबरपहिने। कित षोडशभूषणकीने ॥ छन्द ॥ हृदयदेखिविचारिग्वालिनि कुंजवनकीबाटहै । लूटिलेइकोउसबैभूषणकोतुम्हारेसाथ है॥ इहांसबकोदामलागैहठनकीजैसु दरी। कंसतेहमडरत नाहींसुनतबातसबैडरीं॥ चौपाई॥ इककंगनलैजबदीन्हा।

हरिमोंविनतीबहुकीन्हा ॥ प्रभुथोरबहुतकछुलीजै । अब पारसबनकहँकीजै ॥ इकग्वालकराचतुराई । तिनऔघट नावछुपाई ॥ जबआइकृष्णसोंभाखा । प्रभुनावकहांकोइ राखा॥ अकुलाइउठींसँगसाथी । प्रभुसांझपरीयहिभांती॥ तबकृष्णजसबैसमुझावैं । अबनावकहांकोउपावैं ॥ छन्द ॥ औघटघाटजुभीग्यमुना रातको नहिं पथचलै । बाघसिंह वटपारवनमेंकवनतुमकोभलिकहै॥ झूठमायामोहपरिजन स्वप्नहैदिनचारिकै । कोउकाहुकेसंगनाहींअन्तदेखुविचा-रिकै ॥ चौपाई॥ जबग्वालिनिकेमनमाना । धिगजीवनकै जगजाना ॥ धिगजीवनधनपरिवारा । तुमहींप्रभुनाथ हमारा ॥ अबचरणशरणप्रभुदीजे । तनमनअपनोकरि-लीजै ॥ अबचरणशरणसबलागीं। हमहैंप्रभुपरमसभागीं॥ पथरातिपरीअंधियारी । जनिछांड़ियरातमुरारी ॥छन्द॥ जन्महमरासफलकरियेलाजतजचरणनपरीं।कुलकिलाज गमायग्वालिनजन्मजन्मसेवाकरीं । रहभिमोहनसंगहि-लिमिलिमणिनकेदीपकबरैं ॥ श्रीकृष्णराधेयूथग्वालिनि कुंजवनक्रीड़ाकरैं ॥ चौपाई ॥ यकरहसमंडलप्रभुठाना । सबगोपिनकेमनमाना ॥ कोइगंधधूपलेआवैं । नैवेद्यकि जुगुतिबनावैं ॥ तहँराधेजीपानखवावैं । कोइमाथेचमरडु-लावैं ॥ कोइतालमृदंगबजावैं । सुरनारदअमृतवानी ॥

रहसमंडलकरतबखानी । जहंबाजततालमृदंगा ॥ मधुरी ध्वनिवेणुउपंगा। करतालबजेकरिघोरी ॥ रहसमंडलकीघनघोरा । तहंमांझकिशोरकिशोरी ॥ दोउकृष्णराधेकी जोरी ॥ छंद ॥ श्रीकृष्णघंटबजाआरतियूथमिलिसेवाकरैं । गिरिजानंदप्रसादपावैं जन्मजन्मनदुखहरैं ॥ जोनरगावहिं दानलीलासुनहिंजोचितलावहीं ॥ सातो पावहिंप्रेमभक्ती विष्णुलोकसिधावहीं ॥

इति श्रीदानलीलासमाप्त

अथ करुणाबत्तीसी प्रारंभ

श्रीगणेशायनमः ॥ कबित्त ॥ गिरिकोउठायब्रजगोपको बचायलियो, अनलडबारयोपुनिबालकमंजारीको।गजको

अरजसुनग्राहतेछुटायलीनो, राख्योव्रतनेमधर्मपांडवकी नारीको ॥ राख्योगजघंटातरबालकविहंगमको, राख्यो पनभारतमेंभीष्मब्रह्मचारीको । त्रिधातापहारीनिजसंत सुखकारीमोहिं, एकहीभरोसोभारीऐसोगिरिधारीको ॥१॥ कमलानिवासनिजदासनकीपूरैआश, ताकेविशवासविष भष्योमीराबाईहै। केशवकमलनैनसंतनकरनचैन, सनहित भयोभूपमंजनकोनाईहै ॥ इंद्रजूकोहर्‌योमानसुदामाको दियोदान, भक्तजानिछानिनामदेवजीकीछाईहै । नंदके कन्हाईनिजसंतसुखदाई, बलदेवजूकेभाईसोहमारेहूसहाई है ॥२॥ काहूकेआधारसेवावणिजव्यापारनको, काहूके अधारथितवितखेतगाँवको । काहूकेआधारतनसारभ्रात बंधुनको, काहूकेअधारप्रियसारनिजनामको ॥ काहूके आधारविद्याबुद्धितनबलकोहै, काहूकेअधारहाथीघोड़ा धनधामको । मैंतोनिराधारमेरोहरिहीकरैगेपार, मेरेतो अधारएककेवलहरिनामको ॥३॥ केऊकर्मवादीकेऊअनु- भवप्रसादीभयो, केतनकीमतीभईन्यायसांख्यमतकी । केतेजगदानीयमनेमकोप्रमाणकरैं, केतेपरतीतकरैतीरथहू व्रतकी ॥ केऊब्रह्मचारीकेऊयोगीजटाधारीभये, वानप्रस्थ केतनकूंदयासांघसत्यकी । मैंतोहूंपतितमेरोकौनद्यौसह्वैहै गति, रमापतिराखोपतिमोसेहूपतितकी ॥४॥ केऊकरैसेवा

केऊराखतहैलेवादेवा, केऊकीग्षानताके खेतहीकोहीलाहै। केतेकर्मवासीकेतेदानहूकेआसीक ते, गानतानविषयकेवि-विधरसीलाहै ॥ केतेमहाकूरकेतेसबगुणपूरधार, केतेअति बांकेरणखेतमेंअरीलाहै। मतोमहाकूरताकेउद्यमनधुरएक, यशोमतिप्यारेकेरोहमारोवसीलाहै ॥ ५ ॥ केउप्रेमलक्षणा भगतिकोविचक्षणहै, नीकीभाँतिसेवाकरिजानैविधिज्ञान की। केऊतत्त्वबोधसेती आतमकोशोधकरै, साधैनित्ययोग गतिजानैगेधपानको ॥ केऊतनशासनासबासनाजेतनसहैं, केऊकैउपासनागणेशशिवभानकी । हूंतौहू अजानताके काहूसोंपिछाननाहीं, कोऊकछुजानैहूँतौजानूंनाथजानकी ॥ ६ ॥ जैसेखगबालककोराखिलयोघंटातले, लाक्षागृह बीचराख्योपांडवनसाथको। राख्योजुपरीक्षितकोमाताके उदरमाहिं, राख्योग्वालबालगिरिधारयोनिजहाथको ॥ पारथकेस्वारथकोसारथीभयेहोतुम, सखानिजजानकैजि-तायोहैभारथको । पावकप्रजारीतहांराखीहैमंजारीहूको, वैसीभाँतिराख्योनाथमोसेहूअनाथको ॥ ७ ॥ केउध्यान धारणासमाधिविषेलीनभये, मिलावेपरमात्मामेंआतम विचारिको। केतेनिषकाममनअजपाकोजापजपैं, केतेभजैं शंकरधतूरकेअहारीको ॥ केतेसकाममंत्रआठौयामजपैं, केतेलाभगतिदामकोगणेशसुखकारीको । तेरोध्यानज्ञान

तेरोआसरोतिहारो मोहिं, कोऊकछुध्यावो मैं तो ध्यावौं गिरिधारीको ॥८॥ लीलाहैअगाधव्रजवासिनकेहेतुसेती, धनाजूकीखेतीबिनबोयेनिपजाई है। भीषमकोप्रणऔर द्रौपदीकीलाजराखी, अशरणशरणकीर्तिवेदमध्यगाईहै॥ बूड़तबचायोव्रजकरगिरिधारयोनाथ, साहबननरसीकी हुंडीसकराईहै। करियेनबारअबसुनियेपुकारमेरी, मोपै व्रजराजगजराजकीसीआईहै॥९॥ दीनबंधुदयासिंधुमेट दुखद्वंद्वनके, ऐसेतोअनेकबिरदग्रंथनमेंकहीहै। गोपमेहते उबारेराजाबंधतेनिवारे, भारतमेंपार्थहितएतेशरसहीहै॥ नाभाऔकबीरगीधगणिकारुकरितारे, चीरबाढ़िद्रौपदीको जक्तयशलहीहै। बेरामांझधारमेरोदुःखवारपारदेके, एहो नाथदयानिधिमेरोहाथगहीहै॥ १० ॥ छंदमत्तगयंद॥ आरतनेकगुहारसुनीतबदीनदयालुकिरीतखरीकी। दौरतहै तजिकैनिजधामसुबातसुनीतबभीरपरीकी॥ मेरियबेरबि-लंबरहेसुकहातकसीरकरीजुहरीकी। धायसबेरसुनीजबटेर करीनहिंबेरसुबेरकरीकी॥ ११॥ तादिनटेरसुनीततकाल सहायककाजकेआनखरेहो। संतनहेतअनंतनपारजुआप सबैअवतारधरेहो॥ मेरीगुहारकरौनहिंकानसुकान्हबहो किनबानपरेहो। पौढ़रहेवटपातमेंनाथकिबौरभयोंकिजुराज

करेहो॥१२॥ कबित्त॥ तबतोहेभक्तनसहायकाजब्रजराज, कंसकोबिडारमतिधरीनाहिंमामाकी । बादलभरल्याये जुलाहाकेदयालुहोय, गवुहीजिवाइअरुछानछईनामाकी॥ संतनकोप्राणराख्योग्वालगनव्यालसेतीं, विपतिहरीसंपति अमितसुदामाकी। अहोबलबीरतुमद्रौपदीकोबाढ़्योचीर, हरैक्योंनपीरअबमोसेनिहकामाकी॥१३॥ द्रौपदीकीलाज काजद्वारकासोदौरआये, चीरकोबढ़ायटेकराखीसत्तशील की। पुत्रहेतुनारायणनामलेततकाल, काटेयमजालगति भईअजामिलकी॥मूठीएकचावलकीखातहीनिहालकियो, कैसीदशाभईउनब्राह्मणकुचीलकी । मेरेहूकरोवीढीलहोत होकहावमील. तबतोनकरीढीलटेरसुनीपीलकी ॥ १४॥ कबकोपुकारतहौंसुनतनीएकौबात, एहोनंदलालतुमकैसे प्रतिपालहौ। कहतेदया सोतोदयाऊनदेखियत, मेरीमति ऐसीआछेनीकेपशुपालहौ॥धारयोहैनृसिंहरूपतबैप्रहलाद काज, अबतोनलाजकछुगोधनमेंग्वालहौ । डारयोतेल काननमेंबसेजायकीधोंबन, शेषशैनलेटकीधोंपैठेधोंपताल हौ ॥ १५॥ बेरबेरटेरटेरजीभहूँशिथिलभई, हरौनाहिंमेरी पीरकैसेअभिमानीहो । कृपणभयेहोकीधौंमौनकोगहेहौ, कान्हदयाऊनआवैअबकैसेउनमानीहो ॥ कैसेकैउदारतुम होतहोमुरारगोपगोपिनके, प्यारेछाछदूधकेदानीहो। बकि

बकिथकोबानीकछुहूनचित्तआनी, जानीहमजानिबूझिकरौ आनाकानीहो ॥ १६ ॥ वेदऔपुराणनमेंकरतबखानऐसे, सतयुगबीचध्रुवप्रहलादतूठेहौ ॥ त्रेताहूकेबीचनीचकुलकी नकरीकानि, भीलनीकेहाथप्रभुभखेबेरजूंठेहौ। द्वापरकेअंत तुमद्रौपदीकीलाजराखी, पांडवनकाजदलकौरवकूंरूठेहौ॥ अबकलिकालमेंजोकरोनासहायमेरी, सबलोगहँसकैकहैंगे हरिझूंठेहौ ॥ १७ ॥ हमैंतुम्हैंबनैगाढ़ीअतिहीवयसबाढ़ी, ताकोकरोकौनसोनिबेरोअबन्यावरो । टेरतहूंभोरसांझ ताकीपरवानकछु, जानतहोऐसेजूंबकैहैकोईबावरो ॥ मैंतो महादीनतुमनायकहोदीननके, नामसोंप्रणामअबकरौकौन चावरो। वृद्धकोविचारकैमुरारीमेरीलाजराखो, मेरीलाज खोयेजाइयेबिरधरावरो ॥ १८ ॥ जादिनबहोतभईतबकी कहीजानतनहीं, सुनोकानदेकैज्योंहैबाततंतकी । भयेहो कठोरजोरकियोकहाचाहतहो, नंदकेकिशोरलाजराखो क्योंनसंतकी॥करोगेसहायकबदुःखितभयोहोंअति मोपै यदुरायहायपरीहैदुदंतकी । टेरतहोंबेरबेरभौंरमाँझमेरी अर्ज, एहोहरितोकोकछुखबरहैवसंतकी॥१९॥एहोयदुराय मैंकहतहौंसुनायअब, नीकेचितधारिप्रभुनेकनारिसायहो। हूँतोपरचोगैलताकीकियेहीबनेगीटैल, सबसोंबसायप्रभु मोसेनाबसायहो ॥ दयावंतकहावैतोदयाहूकोकाजराख,

मोसेअतीततीनलोकमेंनपायहो। खेयतहौंविपतियेघेरलई चहूंओर, मेरीकरहोसहायकौंधौंलोकनहँसायहो ॥ २० ॥ जगतकेस्वामीअंतजानिहू ' हावतहो, हरतनामेरीपीरएते अभिकूकेपर। सुदामाविभीषणकोक्षणमांहिराजीकिये,हरी करीयेवोकहामोसेएकटूकेपर ॥ मोपैपरीभीरतुमदेखतहौ विनापीर, ऐसेघनश्यामघनवृथाखेतसूखेपर। करनीसहाय तोवोवेगहीसहायकरो, पीछेकहाहोतकियेऔसरकेचूकेपर ॥ २१ ॥ कहाहैभयोजोतुमद्वारकाकेराजाभये, गोकुलके वासीखासीछाछिकेदिवय्याहो । कभूंमच्छवाराहनृसिंह परशुरामभये, कभूंभयेवामनआछेस्वांगकेभवय्याहो ॥ धेनुकेचरैयागुंजमालकेधरैया पुनि बंशीकेबजैयाअरुबनमें रहय्याहो । टेरतहौंप्रातरातबूझौनाहिमेरीबात, जानीहम तातभृगुलातकेखवय्याहो ॥ २२ ॥ कौरवकोवंशबोरचो कंसजूकोकंधतोरचो, गोपिनकोदधिचोरचोबड़ेवटपारेहो। वृन्दाअरुबकीबोरीकुबजासोंप्रीतिजोरी, दानदेतबलिबो-रचोचोरचीरवारेहो॥कबहूंकुलीनकीसहायकरीसुनीनाहिं, वेश्याअरुकीरगीधऐसेनकोतारेहो । जरासंधसेतीहारजाय द्वारिकापधारे, कौनकाजसारेहरिऔरकेबिगारेहो ॥२३॥ गौतमकीनारीताकीकथाबहुविसतारी, यद्यपिउधारीतनु छिद्रउघरायकै। दुःशासनद्रौपदीकेसभाबीचकेशऐंचे, तब

लाजराखलईलाजकोगमायके ॥ भयोबलहीनअतिहीअ-
धीरछीन, तबगजकाजहरिआयेवेगतुमधायके । दीनके
दयालुप्रभुयामेंतोसन्देहनाहि, करतसहायआपनीवेतन
तायके ॥२४॥ काहूकेतोहेतकरिखेतहूनिकायदीयो, काहू
परीप्रीतिकाजमेघभरिल्याये हैं । काहूके मजूरहोइछानहू
छिवायदई, नाईहोइनृपतीकोआरसीदिखाईहै ॥ काहूपै
दयालुहोइदारिद्रविदारदियो, काहूहेतसाहबनिहुंडीसक-
राई है । करीहौमजाकसोतोदेखतहोंआयसब, मोसूंतो
तिहारेनबातनईबनाईहै ॥ २५ ॥ जानतहौंभलीविधिबड़े
विशवासीपरछलकोकैरयाऐसोदेख्योकोइधूतना । पांडु
पुत्रहेतुकुरुक्षेत्रमेंमचायोयुद्ध, कौरोवंशबोरबेकोऐसेकोऊ
दूतना ॥ महानिरदयीकछुबातहूनजातकही, यदुवंशबोरबे
कोऔरकोउपूतना। अस्तनकोपानकरप्राणनकोपानकियो
पूतनासुपूतनापुकारतमोपूतना ॥ २६ ॥ दाससुदामाको
संपतिदीचुटकीभरि, चावलपैलहिलीने। सागकेपातपचो-
लीकेखाइ, तबैऋषिभोजनदीनेनवीने ॥ कंसकीदासीपै
चन्दनलैपटरानीकरीकैहौमानकरीने । कारजजोजगमें
यदुरायअकोगलियेविनकौनोकीने॥२७॥ याहीजगहेतुप्रभु
केतेअवतारधरे, ताकेअबपालवेकोकैसेमनमारोगे । एहो
जगजीवजगदीशपोषणभरन, विरदनिबाहनमेंकैसेदिल

चोरोगे ॥ विरदकेकाजनअधीरभयेजातहोसो, कहाश्रेष्ठ सेतीनेहतिनकासोंतोरोगे । धरिकेवराहरूपअवनीनिकारी आप, अबकहापृथ्वीकूंबिनाहीमोहबोरोगे॥२८॥ ब्रह्मारु महेशशेषनारदगणेशकहैं, भक्तनकेकाजहरिआपदेहधारी है। मंगलकरनदुखद्वंद्वकेहरनपुनि, पोषणभरनऐसेरटैंनर नारीहै ॥ विरदभक्तवत्सलसोवेदऔपुराणकहैं, जानतहों जाकेअबखोवेकीबिचारीहै। द्वारकाकेबासीजातकेमेवासी अबमेरीहोतहांसीयामैंहांसीतोतिहारीहै ॥२९॥ पीपासों पापीअजामीलसोसुरापीअरु,व्याधसोंअधमतारचोअह-ल्याउधारीहै। रांकाबांकाकीरतारेकेतकअहीरतारे हाथीसे हजारवारपुनिवारन्यारीहै ॥ कूबरीदासपीपाधनानामदेव छीपाऐसेतोअनेकतारेतारचोनागकारीहै।अधमअधमतारे केऊअधमीउधारे सबकाजसारेअबबारीहीहमारीहै॥३०॥ करुणानिधिकान्हसुनोविनतीसुनवेकेबिनाप्रभुकैसेसरैगो। दीनदयालुदयाकरियेविमलाकरियेतोपलाउघरैगो॥ मोसे कुपूतकेकामकृपानिधियायुगमेंकहोकौनकरैगो । तातेअ-नाथकोहाथगहोरघुनाथविनादुखकोनहरैगो ॥३१॥ करत अपराधभारेसांझतरकौरनिति अतिहीकठोरमतिबौरकौन कामहौं।आतुरअधीरतातेधीरजधरतनाहि ऊंचनीचबोलि गतिबकूंआठौंयामहौं ॥ अरचानजानूंकछूचरचाबूझतहौं

कछूहेतप्रातमेनलेतहरिनामहौं । सबतकसीरबलवीरमेरी माफकरौ कहैमाधोदासप्रभुतोरहीगुलामहौं ॥ ३२ ॥

दोहा-याकरुणाबत्तीसिको, पढ़ैसुनैनरनारि ।
ताकेसबदुःखद्वंद्वको, काटैंकृष्णमुरारि ॥ १ ॥

इति मुन्शीमाधोदासकृत करुणाबत्तीसी संपूर्ण ।

अथ नरसीमेहताकी हुंडी

चौपाई ॥ श्रीगणपतिकोपहिलेध्यावौं । जबनरसीकी हुंडीगावौं ॥ परमभक्तम्हेताहैनरसी । रामभजनमेंवृद्धिहै सरसी ॥१॥ निशिदिनरामकृष्णचितधरै । झूठीदंतकथा नहिंकरै ॥ जाकोहैजूनागढ़वासा । रामभजनमेंरहैहुलासा ॥२॥ जहँआयेसाधूजनदोय । बासोलेकररहियासोय ॥ प्रातजागपूंछतहैंतहां । कौनलिखतहैहुंडीयहां ॥३॥ एक

मसखरेकीनीहांसी । सुणज्योहोतीरथकावासी ॥ घरम्हेता नरसीकेजावो । चाहेजितनीहुंडिदिखावो ॥ ४ ॥ उनके धनकोछोड़ोनाहीं । बहुतेरीलक्ष्मीघरमाहीं ॥ जबसाधू पूछतघरआये । नरसीजीघरबैठेपाये ॥५॥ रामरामसाधू बोले जब । उठिप्रणामनरसींकीनोतब ॥ उज्ज्वलजलसों पांवपखारे । ऊंचेआसनपरबैठारे ॥६॥ पांवपखारलियो चरणामृत । धनधनअपनोभाग्यबखानत ॥ श्रद्धामाफिक करीरसोई । पायेसुखसाधूजनदोई ॥७॥ चलूकरीआराम करायो । नरसीपगचंपीकोआयो ॥ साधुनसोंपूछतहैऐसे । मोपरकृपाकीनप्रभुकैसे ॥ ८ ॥ साधूबोलेबातबनाय । नरसीजीसुनियोचितलाय ॥ संगनमिलेचलेनहिंसाथ । हमपासेरूपयासौसात ॥९॥ रोकरूपैयाघरमेंधरो । नगर द्वारकाहुंडीकरो ॥ शाचतनरसिकहाकहुंइनको । करमजाक भेजेहैंजिनको ॥१०॥ मेरेतोहरिनामअधार । येहीवणिज करौंव्योपार ॥ अबहरिकीअस्तुतीकरतहै । तोसुमिरेसब कामसरतहै ॥११॥ गजसहायकीनीततकाल । गरुड़छांड़ धायेगोपाल ॥ परसीशिलाचरणरजधारी । गौतमनारि अहल्यातारी ॥१२॥ पृथ्वीअसुरडुबोईजबै । धरिवराहतनु आनीतबै ॥ हिरणाकुशजबखरोरिसायो । हैनृसिंहप्रह्लाद बचायो ॥ १३ ॥ चारमासतुमबलिकेद्वार । आपुपधारे

श्रीकरतार॥ मारचोपापीरावणसई। लंकविभीषणकोतुम
दई॥१४॥ सुतसनेहहरिनामउचारचो। अजामीलसोपापी
तारचो॥ आठौयामपढ़ातीकीर। गणिकातारीश्रीरघुवीर
॥१५॥ जूठेबेरभीलिनीहाथ। आपअरोगेश्रीरघुनाथ॥
भेजीकंसपूतनाआई। बनीरूपअतिसुन्दरताई॥१६॥
श्रीमुखमेंजबअंचलदीनू। ताकोप्राणसोखतबलीनू॥ शक-
टासुरराक्षसजबआयो। बैठोगाड़ेबदनछिपायो॥१७॥
दीन्हीलातकन्हैयालाल। मारचोपापीकोततकाल॥ तृणा
असुरअतिगरदउड़ाई। नंदगांवमेंधूममचाई॥१८॥ लेकर
कान्हगयोआकाश। मुष्टीमारकियोतबनाश॥ बालपने
तुममाटीखाई। मातुयशोदामारनआई॥१९॥ देखमातु
मैंकछुहुनखायो। तीनलोकमुखमेंदरशायो॥ देखयशोदा
विस्मयभरी। पलमेंमायादूरीकरी॥२०॥ दोहा॥ पय
उफनातोदेखकर, गईयशोदादौर। पीछेदधिकीमाथनी,
फोरीनंदकिशोर॥२१॥रासभरीमाताजबै,सुतकोपकरचो
धाय। ऊखलसूंबांध्योतबै, नँदनंदनब्रजराय॥२२॥ दो
रूखनकेबीचमें, ऊखलखैंच्योजाय। नलकूबरपरकटभये,
टूटपरचोवृक्षराय॥२३॥ नारदजीकोशापहो, दूरभयो
ततकाल। चटविमानसुरपुरगयो, तिनकोकियोनिहाल
॥२४॥ वत्सासुरबच्छोभयो, रूपकपटकोधार। श्रीकृष्ण

वाकोमारियो, पटक्योपांवपछार ॥ २५ ॥ वरुणलेगयो नंदको, यमुनामाहिंडुबोय । पितासांचजानींतबै, कृष्ण छुड़ायोमोय ॥२६॥ चौपाई ॥ चोरेचीरजबैघनश्यामा । व्रजवासिनकेपूरणकामा ॥ ऋषिपत्नीकेकरकेतांवण । आप अरोगेयुगकेजीवण ॥ २७॥ जलयमुनाकोमोटोभाग । जामें नाथ्योकालीनाग ॥ वत्सग्वालब्रह्माहरलीना । नंदलाल फिररचेनवीना ॥ २८॥ वर्षएकलागीसबमाया । व्रजबासी कछुलखनहिंपाया ॥ कोप्योमघवाव्रजपरजबहीं । गोपी ग्वालबचायोतबहीं ॥ २९ ॥ धनधनव्रजकेगोपीग्वाल । सदाखेलेतुमउनसँगख्याल ॥ निशाशरदअरुबालासाथ । रासरमेश्रीगोपीनाथ ॥ ३० ॥ साथअक्रूरमधुपुरीआये । नगरलोकअतिहीसुखपाये ॥ कुबजासँगतुमरमेकृपाल । क्रीडाकीन्हीश्रीगोपाल ॥ ३१ ॥ हाथीहत्योकुवलयापीड़ । जिनकोकंसचढ़ायोभीड़ ॥ जानबूझकैभलोखिलायो । पकड़शुण्डकरिदूरबगायो ॥ ३२ ॥ मुष्टिचाणूरहतेद्वैमल्ल । कुस्तीकरिपारचोयकपल्ल ॥ पापीकंसहत्योमहराज । उग्रसेनकोदीयोराज ॥ ३३ ॥ आठभईतुमपैपटरानी । एकते एकअधिकमनमानी ॥ अंतर्यामिद्वारिकानाथ । उनकोहै शिरमेरेहाथ ॥ ३४ ॥ दोहा ॥ अतिसुन्दरिहैरुक्मिणी, लक्ष्मीकोअवतार । सतिभामाकोमानहैं, जाम्बवतीसूं

प्यार ॥ ३५ ॥ कालिंदीनागनजिती, भद्राजीसोंहेत । मित्रविंदाअरुलक्ष्मणा, कुलकोशोभादेत ॥ ३६ ॥ चौपाई ॥ पारिजातसुरपुरसूंल्यायो । सतभामाघरआनरुपायो ॥ भ्रमउपज्योनारदकोजबै । महलोंमहलपधारेतबै ॥ ३७ ॥ विपतिसुदामाकीतुमहरी । घरमेंऋद्धिसिद्धिबहुकरी ॥ अग्नि अजीर्णहोगईजबै । बनखंडीमेंचराईतबै ॥ ३८ ॥ यज्ञराज पांडवकोकियो । थालीमांजनकोतुमरयो ॥ जबजबबोल्यो जोशिशुपाल । थालीफेंकिहत्योततकाल ॥ ३९ ॥ जबे द्रौपदाकीनीभीर । वस्त्रबढ़ायोघटचोनचीर ॥ शापदेन पांडवकोआये । वनमेंऋषिकोबोतअघाये ॥ ४० ॥ दास विदुरकोमोटोभाग । अतिहिप्रीतिसोंपायोसाग ॥ भीषमको प्रणराख्योजबै । भीरपड़ीभारतमेंतबै ॥ ४१ ॥ परीक्षितकी तुमकीन्हिसहाय । गर्भवासमेंलियोबचाय ॥ भारतमेंअति युद्धमचायो । भारदूलकोअंडबचायो ॥ ४२ ॥ मित्राचार कियोहैपारथ । जाकोआयजितायोभारथ ॥ पांडवको अश्वमेधकरायो । अतीप्रीतिसोंहेतुजितायो ॥ ४३ ॥ मद्य पियोयादवमिलसबही । तोइच्छासोंप्रगटेसबही ॥ उद्धवको तुमज्ञानसिखाये । कृष्णरूपप्रभुधामसिधाये ॥ ४४ ॥ तेरे गुणकोकहाविचारा । सुरतेतीसनपायोपारा ॥ मैंहूँदीन औरनहिंहाथ । आपकहींजेदीनानाथ ॥ ४५ ॥ तुमअनेक

भक्तनकोतारे। संतहेतुबहुकारजसारे॥ मैंशरणागतआयों
तेरी।तुमपरतिज्ञाराखोमेरा॥४६॥गद्गदहोयप्रेममेंपाग्यो।
अबहुंडीलिखनेकोलाग्यो॥ नगरद्वारिकासिद्धिश्री। शुभ
सुथानजहाँबसैहरी॥४७॥श्रीसाहाजीसाँवलनाम।जिनको
नरसीकरैप्रणाम॥ तुमपरतापचैनहैयहां। अतिआनंद
चाहियेवहां॥४८॥ पानकपूरआरागणलीजे। डीलांका
बहुजतनकरीजे॥ डीलांपाछेसारीबात। मुदारगिणज्यो
डीलांसाथ॥४९॥ अपरंचसमाचारसोंकाम। हुंडीसिकार
दीजोदाम॥ हमराखासाधूजनपासा। साहथांगतुमदीजो
खासा॥५०॥ सातासहकारूपयालीना। नेमेजाकासाढ़ा
तीना॥पूणादोयचौगुणाकीजो।देखतसबैदामगिणिदीजो
॥५१॥ मितीमासअरुसंवतदीनू। लिखिसिरनामोकोटो
कीनू॥हुंडीसाधूलीनीजबै।नरसीउनकोबोल्यातबै॥५२॥
हाथेसांवलसाहकोदीज्यो। तुरतरूपयाअपनालीज्यो॥
काटिमैंजलपहुंचेतहां। नगरद्वारकासांवलजहां॥५३॥
जाकरभेंटैश्रीरणछोड़।पापगयेसबतनुकेकोड़॥तीरथवासी
पूछतजहां।सांवलसाहरतहैकहां॥५४॥कोइबतावोउनको
वास। सांवलपरहमहुंडीपास॥ लोगनगरकाऐसीकहै।
सांवलसाहयहांनहिरहै॥५५॥ कोउठगारेपासठगाये।
तुमसोहुंडीखोटीलाये॥ देरनकरोबेगितुमजावो। उसी

ठगारेकुंपकड़बँधावो ॥५६॥ उपजीजीवकोबड़ीउदासी । पाछाचाल्यांतीरथावासी ॥ कोसदोयतीनकजबआया। बैठे ताकवृक्षकीछाया ॥५७॥ गयाजीवसेवर्षउछाह । जबहीं आयोसांवलसाह ॥ रामरामकरबैठोआगे। हालहकीकत पूँछनलागे ॥५८॥ साधूबोलेमधुरीवाणी । कहाकहूँकछु अगतनजाणी ॥ सांवलपरहुंडीहमल्याये । जाकेदामकछू नहिंपाये ॥५९॥ अबपीछानरसीपरजावां । ईजतउसकी खूबगमावां ॥ जबबोलेतुमसारोकाम । सांवलसाहहमारो नाम ॥६०॥ बसूंद्वारकाअतहीछानै। कोइकहरिकोसेवक जानै ॥ हुंडीकाढ़ौरुपयालीजे । खरचोखावोजेजनकीजे ॥६१॥ जबसाधूजनभयेखुशाल। हुंडीकाढ़दीनततकाल॥ गांठीरुपियाबांधाजबै। सांवलकोपूछतहैंतबै ॥६२॥ कहा साखअरुकहापिछाण। नरसीकातुमकरोबखाण ॥ सांवल कहेसाधुसुणलीजे। नरसीमेरासखागणीजे ॥६३॥ मैसेवक नरसीकातनी। उसकीमोपरकिरपाघनी॥ उसकोबेच्योहू बिकजाऊँ। अधिकीऔरकहादरशाऊँ॥६४॥ मनमेंआयो अनँदउछाह । कागजलिखतहैंसांवलसाह ॥ सिद्धिश्री जूनागढ़वास । विराजमानहोहरिकेदास ॥ ६५ ॥ सर्व ओपमालायककरूं । तापरश्रीअष्टोत्तरधरूं ॥ जिनकोहै नरसीजीनाम । चरणकमलपरकरूंप्रणाम ॥ ६६ ॥ कृपा

तुम्हारीसुखहैयहां । अतिआनँदचाहियेवहां ॥ खानपान
चितनीकेआनूँ । मुदारडीलांपाछेजानूँ ॥६७॥ सदाकरतहो
हमपरदाया । जाहीभाँतिराखियोमाया ॥ हुंडीतुम्हरी
साधूल्याये । जिनकोदामदियेपरखाये ॥६८॥ हेतकरोतुम
अनँदअपार । हुंडीलिखजोवारंवार ॥ इसविधिकागज
लिखयोजबै । सौंप्योसाधूजनकोतबै ॥ ६९ ॥ यहदीजो
नरसीकेहात । एकजबानीकीजोबात ॥ दूजीचितमेंकभीन
आनो । सांवलकोसेवकहीजानो ॥७०॥ ऐसीबातपरस्पर
भई । बिदाहुयेसाधूजनसही ॥ फिरतफिरतजूनागढ़आयो ।
सैंदआगलीचितमेंल्यायो ॥ ७१ ॥ साधूजनकरआघो
कीनो । कागजसांवलतुमकोदीनो ॥ इसकासमाचारतुम
बांचो । मित्रतुम्हारोसांवलसांचो ॥ ७२ ॥ कागजलियो
जबैततकाल । बांचतनरसीभयेखुशाल ॥ धनधनसाधू
तुम्हरोहीयो । तुमसांवलकोदरशनकीयो ॥७३॥ इसविधि
करीभक्तकीसाह । हुंडीसिकारीसांवलसाह ॥ कबीरकेघर
बादलल्यायो । धनाभक्तकोखेतनिकायो ॥ ७४ ॥ राणे
विषकोप्यालोभरचो । चरणामृतकोनामजुधरचो ॥ मेल्यो
दासीहाथेजबै । मीराबाईपीगईतबै ॥७५॥ सुखउपज्यो
पीयतपरान । सहायकरीश्रीभगवान ॥ खीरआरोग्यश्री
यदुराय । नरसीकीहुंडीसिकराय ॥७६॥ सोरठा ॥ नगर

नागपुरवास, नामजेठमलजानिये । हरिभक्तनकोदास, संवतसतरासोदशऊपरै ॥७७॥ समयबैठगुरुवार, जेठशुक्ल पछअष्टमी। हरिगुणकियोउचार, जोबांचैसीखैगुणै॥७८॥

इति श्रीनरसी मेहताकी हुंडी समाप्त ॥

अथ हनुमानविजय प्रारम्भ

श्रीगणेशाय नमः ॥ दोहा ॥ स्वस्तिश्रीपतिपशुपती, गणपतिमृगपतिमाय । श्रीधर जगपति खगपती, वंदौं नगपतिराय ॥ विजयहनूवर्णनकरूं, हृदयघनूँआनंद । श्रीधरमारुतनंदको, दर्शनपरमानंद॥२॥ छंदकरखा॥ ॐ नमःशारदासुमतिमनमेंबसो कुमतिकेअंधकोफन्दतोड़ै । ह्रींनमःहाँकहनुमानमहावीरकी भीरकादुःखकासुखमोरै ॥ श्रींनमः सर्वदासंपदाआप श्रीलक्ष्मीनाथकेहाथपावै। क्लीं नमःक्लेशसंतापदुखदूरको विजयहनुमाननरनामगावै॥१॥

प्रथमजानासूँकामजगमेंकरैं दुःखकेहरणसुखकरणगन्ना । बुद्धिकेसिंधुश्रीगिरिसुता पुत्रकेचरणपदशरणकोधरणमन्ना ॥ गुरूपदकंजकरिंजमकरंदमन भ्रमरयूंसुमरकरशीशनाऊँ। कोटितेंतीसमिलिदानआशीशद्यो हृदयहनुमानकोध्यान पाऊं ॥२॥ जगतमेंजगमगेज्योतिज्वालामुखी जाहिपद पंकमेंशंकनाहीं। हनुमानहंकारटंकारकीशक्ति गुरुशिष्यकी भक्तितिहुँलोकमाहीं ॥ चलतहैमंत्रश्रीवचनईश्वरतणांटलत दुखरोगबहुखुलतभोगा । हृदयहनुमानकोध्यानसुखगान करमानसन्मानसबकरतलोगा ॥ ३ ॥ विजयहनुमान विस्तारसंसारमेंजीति गढ़लंकनिशंकगाऊं । बुद्धिकोहीन अतिदीनगुणतीनपणवीरमहावीरकीभीरपाऊं ॥ मातश्री अंजनीअंशईश्वरतणौं दानवरदानसुरईशदीयो । अरुण प्रतिबिंबकोउदितहगदेखकर फूलमखतूलज्यों ग्रासकीयो ॥४॥ वालिकीविपत्सूंवसेऋषिमूकपैतहां मनधीररघुवीर आये। जहांतुमआयकेभक्तिपदपायके मित्रसुग्रीवसोंप्रीति ल्याये ॥ गयेगढ़लंकपैपवनकेवेग आकाशमेंयक्षिणीत्रास खाई। मुद्रिकाआपरघुवीरकेहाथकी बातकरजानकीखबर पाई ॥५॥ बेफिकरबाटिकाताहिखंखारिअरिपुत्रकोमार कपिनामपाये । दनुजदलतोड़करपिपूँछकोमोड़पुनि मातु ढिगदौड़पदशीशनाये॥ होतहाहाकारगढ़लंकदरबार लंके-

शके पासकपिआपआये। वचनसेमोहवशभयेसबराक्षसा लंकपरजारजगजयतिगाये॥६॥पड़ेहैंआयरघुवीरकेपाँयमें वीनतीबहुतकरजोरकीनी। लंकपुरजारतापुत्रकोमार श्री जानकीनाथकोखबरदीनी॥ चढ़रणधीरबहुफौजकीभीर तबदाहिनीबाँहपरअनुजसोहै। दक्षणीकोणपरकोपकोनेत्र जबसहायकोकरणअबऔरकोहै॥७॥ गयोगढ़लंकपरडंक हनुमानको रंककीशंकनहिंअंकजेती। द्विविदसुग्रीवनल नीलऋषिराजपुनि अवरयुवराजहनुमंतनेती॥ सिंधुपर सेतुघरपाजपाषाणकर नामपरतापकपिकटकपारा। जय शब्दउच्चैरभूमिसबथरहरैफरहरैध्वजादशग्रीवद्वारा॥८॥ कोटपरकूदकरकांगरेकांगरेनागिरेनाडरैकपिजूकूदै। उमंग मनमांहरघुनाथकेवचनराजा यदाखळभयेमहलसूदै॥ रामकेछुवनपदआवहोलंकपतनाथ बखसींसदालंकतेरी। कहतमंदोदरीपीवसुनपापियारामदलरामदललंकघेरी॥ ॥९॥ दशाननकोपकरकहतसुनकामिनीभामिनीदामिनी जातचपला।दामनीचपलघनमेघमेचलपलेभामनीहलपलै भुवनभबला॥ सूरनरघरपलैसमरसंग्राममें शत्रुकेशीश भुजदंडतोड़ै। कहतदशग्रीवसुनराजमंदोदरीलाजकेकाज क्यूंमुःखमोड़ै॥१०॥ कोटगढ़लंकआखातदरियावसे मेरुसमबंधुहैकुंभकर्णा। हारकैजायँगेवनचरामानवायुद्धमें

जीतिहैंलंबकर्णा॥ जानकीहेतुउद्योगनृपरामको मनुजकहं
जीतिहैंदनुजहाते। कहतदशग्रीवसुनरानिमंदोदरीरामके
अनुजकोतनुजशीते॥११॥रामकोदासआगमकोनाशकर
लंकसोधामनिष्कामझांपै। अंजनापूतसोरामकोदूतहै
छूतकीहूतसेभूतकांपै॥ एकहीवनचरीकियाविपरीतपुर
छांड़अभिमानसुखठानजीजै।कहतमंदोदरीपीवसुनप्रीतसे
जनकजारामकोभेंटकीजै॥ १२॥ नटचोनिशिराजमन
रटचोगौरीशको कटचोतनुचाहियेरामशस्त्रै। शटचोजब
सेनमेंघटचोजूमेघमेंलटचोज्यूंलेतललकारवस्त्रै॥ चापशर
करनमेंधच्योतनुघरनमे वस्योमनचरनमेंशरनकाजे।जनक
जाहीयमेंरामकोबासरघुनाथकेहीयमेंब्रह्मांडराजै॥१३॥
अखिलब्रह्मांडकोभारलेसमरमें रामकेसंगदशग्रीवजूझै।
वीरहनुमानसंदेहकरमोहसेनाथकेकानमेंबातबूझै॥ कीजिये
सहायसबसृष्टिकीकृपानिधि दुष्टकेबाणहियटालमारो।
शत्रुकोवद्धकरकार्यकोसिद्धकर भरतकेशीशपरहस्तधारो
॥ १४॥ वीरकीविनयसुनवीररघुवीरशरचंडकोदंडध्वनि
भूमिजागी। ईशकीशक्तिघननाददेहाथसे अनुजकेआय
अनमोघलागी॥ सिंधुकोकूदकरपलमेंपहाड़धर प्राणसं-
जीवनीत्वारआनी।लषणकोप्राणदारामकोनामलेसेनजीवंत
करसिंहवाणी॥१५॥ रामकोअनुजलेधनुषकोश्रवणलग

तानशरचंडरिपुवक्षभेद्यो । रामशरचंडलेखैंचकोदंडकोमेरु घटकर्णकोशीशछेद्यो ॥ समरमेंरुंडमुंडावलीभटनर्कासुभट नरबानराशस्त्रमारैं । चढ़नाभयानसुरसिद्धगंधर्वमुनिसुमन कीवृष्टिआशीशधारैं ॥१६॥ होतहुंकारध्वनियुद्धमेंशुद्धसे रामशरसाधदशग्रीवमारचो । बीशभुजशीशदशअंगप्रति अंगसभकाटलंकेशकोभूमिडारचो ॥ करचोनिष्कंटलंकेश हरिदासकोचमरशिरछत्रगढ़लंकदीन्हो । रामकीकृपातेतेल सिंदूरलेवीरकोरूपहनुमंतकीन्हो ॥१७॥ पुष्पकेयानचढ़ जनकजावामभुजदाहिनीबाँहपरअनुजराजैं । भालुकपि कीशसुग्रीवकोआदिलेअंजनीपूतहनुमंतगाजैं ॥ भरतको संगलेअवधकोदरशदेराजको तिलकमुनिराजकीकीन्हो । रामकाराजकातिलकरघुनंदको दासकोतिलकहनुमंतली- न्हो ॥ १८ ॥ रामकेनामसेसिंधुशिलातरीरामकोदास आकाशलांघ्यो । रामकेदासके रामहिरदैबसैंरामके दास निजनाममांग्यो ॥ रामकेनामसेपापकोनाशहै दासकेनाम संतापहारी । रामकेदासकीराममहिमाकरेरामसे रामका दासभारी ॥१९॥ रामकोचरितशतकोटिविस्तारहैप्रीतिसों नित्यऋषिराजगावै । रामकेचरितकोश्रवणकेकाजश्रीरा- मकोदूतहनुमंतआवै ॥ वीरमहावीरहनुमानकीहांकसेमरे

मरघट्टकेजीवजागैं। डंकिनीशंखिनीवंरवैतालभयमारुती नामसेभूतभागैं ॥ २० ॥ सालइकबीसउगणीशतऊपरैंजेठ वदिदशमिशुभकाव्यगावैं। प्रीतिसोंप्रगटश्रीवरदखेडापती रीतिसोंपठनधनधान्यपावैं ॥ गौडश्रीधरकहेसलेमाबादमें सुबसशुभनगरकेसर्वलोगा। दुरकेचोटदप्रुष्टसोंरांटलेभाव मेंबरतियेभावयोगा॥२१॥ दोहा ॥ श्रीधरविजयकर्पीशकी, पढ़ैसुनैमनलाय। महावीरखेड़ापती, पूरैमनकाचाय॥२२॥

अथ इक्कीसकवित्तकी अनुक्रमणिका

ॐनमःप्रथमजाजगतमेंविजयहनुबालिकी विपतिबेफिकर बांटी। पढ़ैहैगयोगढ़कोटपर दशाननकोटगढ़गमकोदास घाटी॥ नटचौनिशिअखिलहांवांगकीगमको होतहूँपुष्पके यानसाटी। रामकेनामसेरामकोचरितहैसालइकवीसकबि काव्यछांटी॥१॥ श्रीधर कह्यो जो हनुमान विजय ताको पाठ करैया मंत्रको मयूरके पक्षसों झाड़देवै तौ दृष्टि मुष्टि भूत प्रेतादिक दूर होजायँ, अन्न धनप्राप्तिहोय, ग्रहपीडा दूरिहोय, राजमान्य होय ॥ इतिफलम् ॥

॥ इति श्रीधरकृतश्रीहनुमानविजयसंपूर्ण ॥

अथ श्रीकृष्णमंगलप्रारंभ

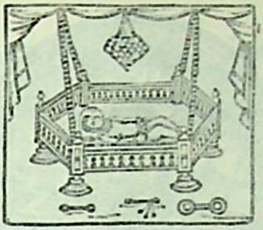

छंद-जनमें श्रीकृष्णमुरारि भक्तहितकारने । मथुरा लियो अवतार गोकुलझूलपालने ॥ तिथिअष्टमीबुधवार भादौंवदिकरी ॥ रोहिणीनक्षत्रआधीरातजनमलियोशुभ घरी । धनिदेवकीवसुदेवजहांप्रभुअवतरे ॥ धन्ययशोदा बाबानन्दमहरघरपगधरे । धन्यधन्यसुरनरमुनिसबजय जयकरैं ॥ दुंदुभिबजतअकाशसुमनवर्षाकरैं । ब्रजवासी गोरसभरिभरिकरिल्यावहीं ॥ दधिकांदौंबाबानन्दसुकीच मचावहीं ॥ बाजततालमृदंगबीनऔबांसुरी । निरतत गोपीग्वालचरणचितचावरी । यशुमतिचीरपहिरायनौरंग भईग्वालिनी ॥ सुन्दरवदननिहारिचकितभईभामिनी । श्रीबलभद्रजीकेबीरअसुरदलखंडना ॥ भक्तवत्सलमहारा-जयादवकुलमंडना । शंकरधरतहैंध्यानसुगोदखिलावहीं ॥ सोमुखचूमतिमाइसुपलनाझुलावहीं । श्रीनँदयशुदासेनेह चरणचितल्यावहीं । हरिगुणमंगलगायगोविंदगुणगावहीं ॥

।। इति श्रीकृष्णमंगलसंपूर्णमस्तु ।। शुभम् ।।

अथ राधामंगलप्रारंभ

श्रीगणेशाय नमः ॥ चौपाई ॥ वसानेवृषभानुदुलारी। चन्द्रवदनिमृगलोचनिप्यारी ॥ पंकजवपुगुणरूपरसाला। खेलनगईजहाँनँदलाला ॥ निरखतरूपनन्दकीरानी। गोद उठायभवनमें आनी ॥छन्द॥ गोदउठायभवनमें आनीआ-भूषणपहिराइयां।मांगमुक्तापीतपटउरतारसुमनसुहाइयां॥ बिंदुकाजलकीदईकुलदेवमानमनाइये । सूरकेप्रभुसाजि नखचखकुँवरिघरांपठाइये ॥ १ ॥ चौपाई ॥ आवोमेरी प्राणजुप्यारी । भोरहिखेलनकहांजुसिधारी ॥ कुमकुम भालतिककिनकीन्हो।किनमृगमदकोविंदादीन्हों॥छन्द॥ विंदामृगमददियोमस्तकनिरखशशिसंसयपरचो । एक शरदनिशिकाकलापूरणमानमनगँधबहरचो ॥ हँसिहेरमुख सोंकहत जननीअलकवेणीकैंगुहीं । सूरकेप्रभुमोहव्यापेसां

चिकहमोहेभईउही ॥२॥चौपाई॥ नंदजीकेघरनीयकसोहै। मेरोवदनतनुफिगिफिग्जोहै॥ खेलतडोलतनिकटबैठारी। मनमेंआनँदकियाहैभारी ॥ छंद ॥ आनँदमनमेंकियो भारीनिरखमुखबलिबलिगई । बाबाजूकोनामलेलेतोहिं हँसगारीदई॥ पाटीतोपारिसवांरभूषणगोदलेमेवाभरी। सूर केप्रभुहर्षहियमनमेंविधिनासोंविनतीकरी ॥३॥चौपाई ॥ सुनतबातकीरतिमुसकानी । मैनँदरानीजियकीजानी ॥ मेरीसुतारूपगुणरासी । कान्हउदासीबनकोबासी ॥छंद॥ कान्होउदासीबनकोवासीरंगढंगाक्युंबणै। इकरत्नअमोल नीलमणियजुकांचननहिंजुड़ै॥ ललताविशाखासूँकहैतेरी ललीअबतककहँरही । सूरकेप्रभुभवनबाहरजानमतिदी जोसही ॥ ४ ॥ चौपाई ॥ दिनदशपांचरहटकजबकीन्ही। कुँवरिकोकृष्णदिखाइआनदीन्ही ॥ मूर्छिपरीजब तनु न सँभारचो । लाड़लीकोडस्योरीभुजंगमकारचो ॥ छंद ॥ लालीकूंडडस्यो भुजंगमकारोगाडूहारचासबै । नंदनंदन मंत्रकाजूयहविषढाप्यानंढबै ॥ पाठयेसखीगोपालको जैल्यावोआनँदकंदको । सूरकेप्रभुलहरउतरे मिलैब्रजके चंदको ॥ ५ ॥ चौपाई ॥ करमनुहारीकृष्णजबलयाये । देखतहीबिषदूरहोजाये॥ उठबैठीमनकियाहुलासा। कीर्ति चलीअपनेपतिपासा ॥छंद॥ कीरतिचलीअपनेपतिपासे

प्रीतिरीतिबधारिये। ब्याहकायकमंत्रकाजोसखियांमंगल गाइये॥ वृंदावनवनमेंरच्यास्वयंवरकुंजमंडपछाइये। सूरके प्रभुश्यामघनश्रीराधिकावरपाइये॥ ६॥

इति श्रीललितराधामंगलसमाप्तम्॥ श्रीराधाकृष्णार्पणमस्तु॥

अथ जानकीमंगलप्रारम्भ

छंद-प्रथमसुमिरिगुरुदेवगणेशमनाइये। शारदकोशिर नाइरामगुणगाइये॥ प्रभुगुणसिंधुसमानकौनवर्णनकरै। जैसीजाकीबुद्धितैसिहिहृदयधरै। तबबोलेऋषिरायअवध-पुर जाइये॥रामभयेअवतारयज्ञहितलाइये। करिसरयूअ-स्नान नृपतिगृहआइये॥बहुविधिपूजाकरिसिंहासनबैठाये। कहततपोधनअवधपतिदोउकुंवरहमकोदीजिये॥यज्ञपूरण होइहमरोविप्रकोयशलीजिये।सुनिऋषिकेवचननृपशोच-

कीनोघनी ॥ कीजैकौनउपायबातगाढ़ीबनी । तबबोलेगुरु वशिष्ठनृपतिशोचनहिंकीजिये ॥ येपूरणअवतारयज्ञहित दीजिये ॥ प्रेमकोउपकारकरनृपसुतदोऊगोदलिये । महा मुनिनकीभेंटलैश्रीरामअरुलक्ष्मणदिये ॥ रत्नजडितपट बांध धनुषलियो हाथमों । कीनो बहुतप्रणाम पिता अरु मातुसों ॥ नयनरहेजल पूरिपिता अरुमातके।इनकोनीके राखियो ये पुत्र अनाथके॥ आगे आगे विश्वामित्र महामु- निपाछेलक्ष्मणरामजी।सजलतनघनश्यामसुन्दर सकल- पूरणकामजी॥राजतवदनविशालबांकेदृगसोहना।नाशा- परमसुढारमदनमनमोहना ॥ यहछबिविविधप्रकारराम गुणगाइहैं । गौरश्यामदोउभ्रातमुनिकमनभायहैं ॥ उठी राक्षसीघोरमहाप्रभुबाणएकैसोहनी ॥ विप्रको मखकियो पूरणकृपाकरिकौशलधनी । मारीगर्व गुमानध्यानहरिसों धरो ॥ चौंकिपरी जियमांझ गमशरसों डरो । ब्रह्मअस्त्र करधारिमारीचसुमारियो ॥ सौयोजनतनुपर्‍योसुरतिबि- सराइयो। मारीचटारिसुबाहुमारेमुनिनकेमंगलभये॥ सुर विमाननपुष्पवर्षहिंहर्षजैजैकिये । रच्योहैस्वयंवरजनक रामचलिदेखिये ॥ आयेहैंबहुभूपसबैमिलिपेखिये । भली कहीऋषिराजजनकपुरजाइये ॥ शिवधनुकठिनकठोरको दरशदिखाइये । चरणकीरजलागिअहल्यातुरतहीछबिसों

भरी॥करजोरिअंजलिभईठाढ़ीरामकीअस्तुतिकरी। चरण परशिकुलतारितुरतपतिपुरकोगई ॥ ऐसोकौतुकदेखिकी-रनौकागही। टेरतहैंरघुनाथकीरनौकाल्याउरेवेगिउतारेजु पार डरौ जिन बावरे ॥ करजोरि केवटयोंकहैप्रभुबाहनपै पार उतारिहौं। शिलाज्योंउड़िजायनौकाकुटुंब किसविधि पालिहौं ॥ जोनौका उड़िजायधूरिलगि पांवकी । ताते दूनी देहूँगढ़ाई नावकी ॥ केवट चरणपछालि श्रीराम बैठाइया क्षणमहँनौकाखेयकेपारलगाइया॥करुणासिंधु दयालुरघुवरतारिदासअपनोकियो । योगीसुरनको होत दुर्लभसापदरीछकेवटकोदियो ॥ नौकाउतरेपार श्रीराम जनकपुरको चले। तोरेंगे शिवधनुषशकुणभेंटभले ॥ वन उपवनबहुबाग विविधबैठकबनी । कंचनहूमेंजटितहेमरच नाबनी॥ ठौरठौरबहुभूपउपमाजनकपुरअतिसोहना। बसे जनकपुरलोगसुन्दरमदनकोमनमोहना ॥ जनकसभाके मध्यभूपलखिछकिरहे । ठगकेलड्डूखायमनोसबथकि रहे ॥ पूँछतहैंमिथिलेशकुँवरऋषिकौनके । पूरणजिनके भाग्यदोउसुतजौनके॥महासुभटरणधीरदोउगुणलायके। रघुवंशीमहाजर्श्वीदशरथरायके॥नरनारीयोंकहैंयेदोउवय-सकिशोरहैं। शिवधनुकठिनकठोरकैसेकरितोरिहैं ॥ येछ-बिश्यामलगौरहरषिनिरखिकरलीजिये । वारैकामकोटि-

स्वरूपसुन्दरनयनभरिपीजिये॥ अष्टसौमलकष्टकंकिकेधनु सभामध्यआनियो। लागेंहैंबड़ेबड़ेभूपयोधाधनुषकाहु न तानियो ॥ कहत सिया सुन तातधनुषप्रण जिन करो। नातर तजिहौं प्राणकेजेईवरमैंवरौं ॥ करुणासागररामजी यके जानिये। पीतांबरकटिबाँधिधनुषलैतानिये ॥ जय-जयकारभईतिहुँलोकभूपसबैमुरझाइये ॥ श्रीरामचन्द्र-मुखनिरखिसियाकेसुमनमालपहिराइये।सोहनसीताराम-कंचनमंडपतरे ॥ शिरसोनेकोमुकुटमंजुमुक्ता गरे। राजतअमलकपोलकिमुक्तामोलके॥ सुन्दरलोचन लोक-मलजनुभोरके। सुरँगचूनरीनिपटपीतपटछारही ॥ मानो अरुणघनश्यामचपलताह्वैरही। यहभूषणप्रतिबिंबराम छबिउरधरैं ॥ मनोयमुनजलमध्यदीखदीपकबरैं। राम भुजाकेनिकटसियाभुजसोलसे ॥ मरकतमणिकेखंभमनो कंचनकसे। रामभयेतनुगौर सियाभइसांवरी॥ सादरसो बुधिवन्तबधूभइबावरी रामभयेघनश्यामसियाभईदा-मिनी। मुनिभयेचंद्रचकोरचकितभइभामिनी ॥ पुष्प-नवर्षतमेघ मुनीसबथरहरैं। होतजनकपुरब्याहरामभा-मरिकरैं ॥ रामसियाकोध्यानसदाशंकरधरैं। ब्रह्मारूप-निहारिइंद्रपूजा करैं ॥ सुरनरमुनिआनंदसुमनवर्षाकरैं। ब्रह्मादिकसबदेव मुदितजयजयकरैं ॥ तुलसीसीताराम-

सहित उर आनिये। रामभजन विनु जन्म सुमिथ्या-जानिये॥

इति श्रीजानकीमगलसंपूर्ण

गोपियोंका उद्धवप्रतिउत्तर

उद्धव कमलनयन विनु गहिये। इक हरि हमैं अनाथ करि छांड़ो दुजे विरह किमि सहिये॥ जैसे ऊजर खेरकीमूरति को पूजै को मानै। ऐसी हम गोपालबिन ऊधो कठिन व्यथाको जानै॥ तनु मलीनमन कमल नयनसों तामिलवेकी आश सूरदासस्वामी विनु देखे लोचन मरत पियास॥१॥ इति॥

श्रीकृष्णचन्द्रकी गोपीप्रति हांसी

ऐसे जनिबोलो नँदलाला। छाड़िदेहुअचरामेरो मोको जानत और सी बाला॥ बार बारमैं तुमहिं कहतिहौं परिहौ बहुरि जंजाला। यौवन रूप देखि ललचाने अबहींते येख्याला॥ तरुणाई तनु आवन दीजे कत जिय होत बिहाला। कृष्णबिहारी उरते करटारहुटूटैगी मोतिन-माला॥ १॥ इति॥

वृषभानु ललीका यशोदाप्रति उरहना

कवित्त

माखन चुरावै मेरा दहीढरकावै कान्ह गारी मोहिं गावै

करै निज मन मानकी । अंग माहिं लपटिकै अंगियाको नोचलेत यसुदाजी सांची कहौं बातमैं प्रमानकी ॥ यामें झूठो है न सौंह ककाकी कृष्णबिहारी सुनि नंदरानी कह्यो एरी वृषभानकी । मैं नहीं प्रतीत करौं तेरीहै सहजबानि मुरि मुसकानि औ कका की सौंह खानकी ॥ १ ॥

गंगाजीकी स्तुति

कवित्त

छूटी शिव शीशते प्रचण्ड तेज धाराधँसी काटत अघ ओघनके पातक हितै हितै । कृष्ण बिहारी गङ्ग तेरीही तरंग देखि गये सुरलोक सब पातक बितै बितै सुरसरिमहा-रानीकी महिमा बखानै कौन वेद औ पुराण यश गावत नितै नितै ॥ यमअ गे पाप रोवैं पाप आगे यमरोवैं चित्र-गुप्त आप रोवै कागज चितै चितै ॥ १ ॥ इति ॥

अथ विज्ञाननौका प्रारभ्यते

श्रीगणेशायनमः ॥ तपोयज्ञदानादि :शुद्धबुद्धिर्विर-क्तोनृपादौपदंतुच्छबुद्ध्या । परित्यज्यसर्वंयदाप्नोतितत्त्वं

परंब्रह्मनित्यंतदेवाहमस्मि ॥ १ ॥ दयालुंगुरुंब्रह्मनिष्ठंप्रशांतं
समाराध्यमत्याविचार्यस्वरूपम् । यदाप्नोतितत्त्वंनिदि-
ध्यासविद्वान्परंब्रह्म० ॥ २ ॥ यदानंदरूपंप्रकाशस्वरूपंच
परिच्छेदशून्यम् । अहंब्रह्मवृत्त्यैकगम्यंतुरीयंपरंब्रह्म० ॥ ३ ॥
यदज्ञानतोभातिविश्वंसमस्तंविनष्टंचसद्योयदात्मप्रबोधे ।
मनोवागतीतंविशुद्धंविमुक्तंपरंब्रह्म० ॥ ४ ॥ निषेधेकृतेनेति-
नेतीतिवाक्यैः समाधिस्थितानांयदाभातिपूर्णम् । अवस्था
त्रयातीतमद्वैतमेकंपरंब्रह्म० ॥ ५ ॥ यदानंदलेशैःसमानंद
विश्वंयदाभातिसत्त्वेतदाभातिसर्वम् । यदालोचनेरूपम-
न्यत्समस्तंपरंब्रह्म० ॥ ६ ॥ अनंतंविभुंसर्वयोनिंनिरीहंशिवं
संगहीनंयदोंकारगम्यम् । निराकारमत्युज्ज्वलंमृत्युहीनंपरं
ब्रह्म० ॥ ७ ॥ यदानंदसिंधौनिमग्नः पुमान्स्यादविद्यावि-
लासःसमस्तप्रपंचः । यदानस्फुरत्यद्भुतंयन्निमित्तंपरंब्रह्म०
॥ ८ ॥ स्वरूपानुसंधानुरूपास्तुतिंयः पठेदादराद्भक्तिभावो
मनुष्यः । शृणोतीहवानित्यमुद्युक्तचित्तोभवेद्विष्णुरत्रैववेद-
प्रमाणात् ॥ ९ ॥ विज्ञाननावंपरिगृह्य कश्चित्तरेद्यदज्ञान-
मयं भवाब्धिम् । ज्ञानासिनायोहिविभिद्यतृष्णांविष्णोः
पदंयातिसएवधन्यः ॥ १० ॥

इति श्रीविज्ञाननौकासंपूर्णा

अथ सुदामाजीकी बाराखड़ी

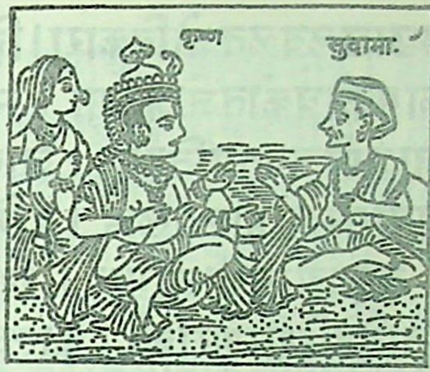

श्रीगणेशायनमः ॥ कक्काकमलनयननारायणस्वामी॥ वसैंद्वारकाअंतर्यामी ॥ वासुदेवसंकर्षणछाजैं । प्रद्युमनअनिरुद्धविराजैं॥ कक्काकलियुगनाम अधारा।प्रभुसुमिरोउतरोभवपारा ॥ साधुसंगनिकरिहरिरसपीजे । जीवनजन्म सफलकरिलीजे ॥१॥ खखाखोजोसकलजहाना । जाको गावैंवेदपुराना॥ निर्भयनामहरीकोलीजै। चरणकमलको ध्यानधर्रीजे ॥२॥ गगागुणगोविंदकेगावो । मायाजाल भूलिजनिजावो॥ धनयौवनतनुरंगपतंगा। छिनमेंक्षारहोतयहअंगा ॥३॥ घघाघटघटबोलेभाई । जलथलमेंप्रभुरहे समाई ॥ ऊँचरुनचज्ञानकरिदेखो। एकैब्रह्मसकलमेंलेखो ॥४॥ ननानिमिषखोजकरिदेखा । दूजोऔर नहीं कोइलेखो ॥ सातोंद्वीपअवरब्रह्मांडा । नाम हिछायरह्योनवखंडा ॥५॥ चचाचितनिश्चयकरिराखौ । मिथ्याबातझूठ मतिभाषौ॥ सत्यशब्द तपहोइप्रमाना । झूठवचनसो पाप

समाना ॥६॥ छछाछलबलतजोविकारा। निर्मलनामजपौ
यकसारा ॥ कामक्रोधकोतजोप्रसंगा । सदारहोसंतनके
संगा ॥७॥ जजाजपोजगतपतिईसा । जाको ध्यावैंसुरतें
तीसा ॥ निशिवासरजुरहोलवलाई । हरिपदकमलसदा
सुखदाई ॥८॥ झझाझेरनकीजोभाई । शिरपरकालरह्यो
मड़राई ॥ चेतनाह्वैहरिशरणैरहिये । कालत्रासकाहेकोस-
हिये॥९॥ ननानिमिषनिमिषहरिरूपनिहारो। चितते ध्या-
नपलकनहिंटारो॥ आठौयामरहौलवलाई । चित्तचरणमें
रहोसमाई ॥१०॥टटाटोरुजगतकोनाता । नहिंकोइमातु-
पितासुतभ्राता ॥ हरिसोंहितूनहीकोइअपना । जगव्यव-
हाररैनिकोसपना ॥११॥ ठठाठाकुरपरमसनेही । जिनये
दीनीसुन्दरदेही ॥ नरदेहीकोलाहोलीजै । प्रेममगनह्वैहरि
रसपीजै ॥१२॥ डडाडामाडोलचित्तजनिकरो । हृदये-
ध्यानहरीकोधरो ॥ आनदेवकाहेकोध्यावो । दृढ़विश्वास
विष्णुगुणगावो ॥१३॥ ढढाढूँढ़नकोकहँजइयेभाई । रोम
रोमप्रभुरहेसमाई ॥ पिंडब्रह्मांडरहोसबपूरा । सदानिकट
हरिनाहिंनदूरा ॥१४॥ ननानामहरीकोलीजै हरिभक्तन
कीसेवाकीजै ॥ सांचिभक्तिभगवानकोभावै। प्रेमसहित
रसनागुणगावै ॥१५॥ ततातेरीसफलकमाई । नरदेहीसु-
मिरनकोपाई ॥ हरिभजगर्भवासतेंछूटो राममनामऐसोधन

लूटो ॥१६॥ थथाथोगर्जीवनभाई। हरिबिनजन्मअका-
रथजाई ॥ चेतनह्वैहरिनामउचारो। तनकोत्रिविधाताप
निवारो १७ ददादेखतहीजगकोब्यवहारा। मायाजालबँ-
ध्यासंसारा ॥ बँधनतेछूटनजोचहिये। शरणजाइ संतनके
रहिये ॥१८॥ धधाधरणीधरहिरदैधर भाई। संतनकेप्रभु
सदासहाई ॥ सदासमीपनि मिषनहिंटरहीं। भक्तजनोंकी
सेवाकरहीं ॥१९॥ ननानेहहरीसोंलावो। प्रेममगनरसना
गुणगावो दुविधाभर्मतजोमनभ्राता। सन्तजननकोकीजे
साथा ॥२०॥ पपापरेपरेसबजन्मगमायो। गुणावादप्रभु
कोनहिंगायो ॥ मायाभर्मभूलिरहो अंधा। जन्मगमाये
करिकरिधंधा ॥२१॥ फफाफिरिफिरिपरेमोहकेफंदा। अज-
हुँनचेतैमूरखअंधा ॥ गुरुचरणनकीधरुमनआसा। हरिभ-
जमेटौयमकीत्रासा ॥२२॥ बबाबोलोअमृतबानी। स्नेह
प्रीतिरसनागुणसानी। हरिहीराहिरदयधरिराखो। कटुक
वचनमुखतेजनिभाखो ॥२३॥ भभाभूल्योमन्नसमुझावो।
जासोंभवजलफेरिनआवो॥ ऐसीभक्तिकरोमनमेरा। जरा
मरनहोवैनहिंतेरा ॥२४॥ ममामोहजालभव सागरभारी।
झीमरकालमीनसंसारी ॥ जाल लियेयमफिरतअहेरा।
हरिविमुखनपरदेतदरेरा ॥२५॥ ययायहअवसरनहिंवारं-

वारा । तातेपुनि पुनि करतपुकारा ॥ मानमित्रतुमचतुर
सुजाना । विषरसछांड़िभजोभगवाना ॥२६॥ रराटनह-
रीसोंलावो । हीराजन्मजनिवादिगमावो ॥ ऐसोहीराजो
गमजाई । अवसरचूकेफिरपछिताई ॥२७॥ ललालाल
असोलकमनमलहरना । तनु भंडारजतनकरिधरना ॥ प्रभू-
लालगुरुदेलखाया । तृष्णालोभसबदूरिगमाया ॥२८॥
ववाबारबारनावौंपदमाथा । उनपदकमलचरणचितदाता
॥२९॥ ससासतगुरुकीकाकरौंबड़ाई । महिमामुखतेवरणि
नजाई ॥ चितलागोसतगुरुकेचरणा । रसनाएककहाँलगि
वरणा ॥३०॥ षषाखींचिलियोगुरुअपनीओरा । माया
फंदपलकमेंतोरा ॥ निर्भयभयेपापसबत्यागे । जबगुरुच-
रणोंमें चितलागे ॥३१॥ शशाशोचविचारमिटेजियतबते ।
दीपकज्ञानदियेगुरुजबते ॥ नाश्यो तिमिरभयोपरगासा ।
मानोरविपूरणकरिभासा ॥३२॥ हहाहरिगयेपापपराजित
आपू । श्रीगुरुचरणकमलपरितापू ॥ जैसेधुन्तचहूँदिशि
घेरा । प्रगटभानुजबभयोउजेरा ॥३३॥ लेवेकोहरिजीको
नामा । देवेकोअन्नदानसमाना ॥ धरनेकोप्रभुजीकोध्याना ।
सेवनकोगुरुचरणसमाना ॥३४॥ क्षक्षाछाँड़नविषयबदन-
सोंचहिये । संतगुरुचरण निहोरहिए ॥ नाममधुररसपिवो
सुजाना ! गर्भवासनहिंहोयपयाना ॥३५॥ बाराखड़ीअ-

नन्दगुणगावों। सबसंतनकोशीशनवावों ॥ दीनपतितहै दासखुदामा। नमस्कारगुरुदेवसुनामा ॥३६॥ इति श्रीसुदामाजीकीबाराखड़ीसमाप्ता ॥

श्रीवेंकटेशाय नमः

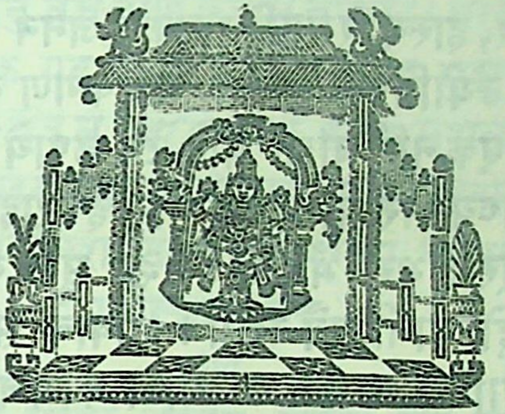

लावनी.

जय जय जयश्रीवेंकटेशप्रभु महिमा अपरम्पारा है। शहर बम्बई मध्य विराजत पूरण भरो भँडारा है॥ वेंकटेश श्रीछापाखाना सारे जगत बखाना है। श्रीयुत खेमराज अधिकारी परमभक्त हरिमाना है॥ उत्तम काम दाम लघु भारत अत्युत्तम व्यापारा है। शहर बम्बई मध्य विराजत पूरण भरो भँडारा है॥ १ ॥ वैदिक औ वेदांत पुस्तकैं धर्मशास्त्रकी सारी हैं। परम पवित्र पुराण सबै विधि कर्म्मकाण्डकी न्यारी हैं॥ लघु अरु दीर्घ वैद्यक सिगरी

रामबाण अनुहारी हैं। भक्तन प्रिय स्तोत्र छपाये जिनकी नहीं सुमारी हैं ॥ रामानुजी काव्य चंपू छंद राजनीति चञ्चारा है। शहर बम्बई मध्य विराजत पूरण भरो भँडारा है॥२॥ ज्ञानभक्ति गानेके लायक नाटक नये बनाये हैं। करुणा, वीर, हास्य, रसपूरित सकल जनन मन भाये हैं॥ सब प्रकार ज्योतिषके पुस्तक ग्राहकगण ललचाये हैं। वैयाकरण एक नहिं बाचा मोटे टैप छपाये हैं॥ मीमांसा इतिहासभाष्य अरु योगशास्त्र सारा है। शहर बम्बई मध्य विराजत पूरण भरो भँडारा है॥३॥ मूल संस्कृत भाषा टीका हिन्दोस्थानी सबै रकम। भाषाके सब ग्रंथ सुहाये छन्दबद्ध वार्तिक न कम ॥ मोटा कागज जाड़ा अक्षर परमपुष्ट मनभावन कौर। कृष्णबिहारी शुक्ल बखानत भारतवासी जल्दी दौर ॥ परम शुद्ध सुन्दर दर कमती जानत सब संसारा है। शहर बम्बई मध्य विराजत पूरण भरो भँडारा है ॥ ४ ॥

अथ षट्त्रिंशद्वादित्राभिधान

छप्पय

मंडल बीन रबाब अनूप तम्बूर उपंगह। वर वसु सुरद पिनाक कुमायच पुंग सुरंगह॥ बंसी परिगह बांस कालुटक ताल सुपिंगी। तूरभेर सहनाय पाव रण संग दरसिंगी॥

करणाटक पणव आनक मुरज डफ सुडाक डमरू लजे।
जलतरंग झांझ मंजीर मिलि षट्त्रिंश बाजन बजे ॥

षट्त्रिंशदायुधाभिधान

चक्र शूल धनु व्रज बाण कैबान तुफंगह। परशु कटारह छुरा शेल खेटक गद खंगह ॥ तोमरपाश भुशुण्डि बांक खंजर जंबूलट। यंत्र सु अंकुशभाल हलह मूशल खगवर-वट॥ जंजाल जहर गुप्ती गुजर दाव पटा पिस्तोल लिय। आयुध षडांगषट्त्रिंशयुत नीतपालसेना चलिय ॥

गणेशस्तुति

सवैया

शैलसुतासुत सिंदुर आनन संकट गंज सदा शिव-नन्दा । एकरदी सुरदी वरदीवर बंदन भाल विराजित चन्दा ॥ मूषकरूढ़ प्ररूढ़ महातम गायकगूढ़ गिरागुण छंदा । नायक देव महासिधि दायक पायक पच्छ विनायक वन्दा ॥

मन शिक्षा

कवित्त

छारसम काया सब माया धूम छाया जैसी तमोगुण तज रे तू तजि देवो गारीको । तजि दै बड़ाई तू आदर अनादर तज तज शोक मोह चिंता झूठ नेह नारीको ॥

जप तप दान पुण्य विना किये बैठ रह्यो जानत न तेरे शिर दण्ड दण्ड धारीको। अहो मनमूढ़ तोसों कहाकहों बेर बेर राख रे भरोसो एक कुंजके बिहारीको ॥

राधिका छबिवर्णन

सवैया

साजि शृंगार चढ़ी है झरोखन ठाढ़ी है भानुसुता सुखदाई। हारनके दबि भारनसे कुच दोउ नपाई मनो लघुताई॥ चूरन भार उतार मनो मनमत्थन हत्थ किये सुघराई। सोहत है त्रिवली सु मनो कचके लचके कटिहे दरकाई ॥

शनिफलम्

छन्दतोटक

चतुरं सुवसे खगमन्द जिहों, अति उन्नत थान हरम्य तिहीं॥ उन ग्राम घने वन बाग लता, सबसे अरुची मन व्याकुलता ॥

भृगुफलम्

भृगु सप्तम थानक जासु रहैं, अति चातुरता पतिता सु कहैं॥ वह दंपतिको मन एक सदा, सुख होइ लखे अलखे दुखदा ॥

केतुफलम्

षटमें गृह केतु जिही रहतं, अति चातुरताइ उदार चितं ॥ तनु व्याधि न व्यापत तासु यथा, भय आतुर मानसि आधि विथा ॥

भौमफलम्

संपत गृहमें पुनि भौम रहै, मन कंत मिले तनु ना मिलिहै ॥ विरहा तनु तापस आतुरता, सुरतं न प्रियं सुरता सुरता ॥

बुधफलम्

नवमे शशिसूनु सुशीलवती। तपतीरथ सेवित पुण्यवती॥ गुणवान सुमंत्र संगीत पढ़े। रति संसृति देवन सेव बढ़े॥

रविफलम्

दशवें रवि उच्चग्रहे गति है, परताप बड़ो दिनहा प्रति है। विविधं वह राज सुनीत लहे, क्रमकी रति योग विशेष कहै ॥

शशिफलम्

दश एकमें जासु शशी सु बसे, रतनांबरईभ अनेक असे॥ बुधि दीनदयालु कर्मी न धनं, शुचिता रुचि प्रेम प्रकाश मनं ॥

राहुफलम्

बसि द्वादश राहु रह्यो जिनको, अनुराग विराग बढ़ै तिनको ॥ भयभीत सुचित्त नहीं थिरता, ग्रह एफल जातक उच्चरता ॥

शरदऋतुवर्णन

दोहा–अम्बरजरी सुसोसनी, पनासु भूषण धार ।
चंद्रोदय जल कमलछबि, शरद सु करत विहार ॥

हेमन्तऋतुवर्णन

नील निचोल सु अंबरी, माणिक भूषण सार ।
अतिहि उष्ण उपचार तनु, हेमंत करत विहार ॥

पुनःहेमन्तऋतुवर्णन

छप्पय–भूमि भुवनमय भोग तैल मर्दन तनु तापन। है जलकेलि हमाम तप्त भोजन तरुणी तन ॥ बहु मृगमद तंबोल तलपघन तूलतलाई। सुजनी सुभग दुसाल सदल सरपाउ सुहाई ॥ शुभ माणिक भूषण सकलकोक कुतूहल रसकवित। विलसे विलास निशिदिन विविध रस सागर हेमंतऋतु ॥

शिशिरऋतुवर्णन

दोहा–अब सरसै पीतिम वसन, नीलमणी सु अपार ।
दंपति प्रेम अनन्त उर, शिशिर सु करत विहार ॥

वसंतऋतुवर्णन

श्वेत विचित्रित तनु वसन, सकल अंग शृंगार।
केसर चन्दन कुमकुमा, करत वसंत विहार॥

वर्षावर्णन

सुदी कसूँबी पट सकल, नीक जटित शृंगार।
अटा घटा निरखन नवल, वर्षा करत विहार॥

ग्रीष्मवर्णन

चेल गुलाबी केसरी, सब शीतल उपचार।
मुक्ता मंडन बाग बसि, ग्रीषम करत विहार॥

स्वरनाम

छंद चन्द्रायणा–षड्ज ऋषभ गंधार सुमध्यम जानिये। पंचम धैवत और निषाद बखानिये॥

सप्तस्वर अनुमान भेद

छप्पय–वरहि बान सुर षड्ज ऋषभ चातकी उचारन। अंगु चार गंधार मध्य कुरची कल धारन॥ पंचम कोकिल शब्द बाजध्वनि धैवत जाने। घन गर्जन सुनिषाद सप्तसुर भेद बखाने॥ षट सुर फिरन्त पंडव वहें पंच सुओड वधारिये। स्वर सप्तसोय पूरण कहे रागन धाम विचारिये॥ भैरवहरतेभयो मालकोशहू विष्णुमुख। ब्रह्मगात हिंडोल

और दीपक दिन मणिरूख॥ शेषहुते श्रीराग मेघ गाजत अकाश हुव। इक इक इक प्रतिराग पंच रागिनी प्रकट भुव॥ सुत पंच पंच प्रतिरागनी पंच पंच पुत्री कहे। विस्तार बढ़्यो सम्बन्धसे तीन लोक फैल्यो वहे॥

श्रीभैरवपंचरागिनी नाम भेद

चौपाई—भैरूं राग भैरवी नारी। वैरारी माधवी विचारी॥ सिंधू बंगाली सु कहावे। यहै रीत संगीत बतावे॥

श्रीमालकोशपंचरागनी

मालकोशहूकी यह बाला। टोडी गोडी रूप रसाला॥ पुनि गुणकली खमायचि नारी। कुंकुमयुक्त पंचो हितकारी॥

हिंडोर:पंचरागिनी नामभेद

चौ०—रामकली दे साख सु वामा। ललिता अरु विलावली नामा॥ पट मंजरी पंचमी नारी। ए हिंडोरकी आज्ञाकारी॥

दीपक।पंचरागिनी नाम

देशी और कमोद कहावे। नरकेदार दार गुण गावे॥ बहुरि कान्हरा रूप विशाला। यहै पंचदीपककी बाला॥

श्रीराग पंचरागिनी

मालसिरी मारू शुभ नामा। धन्यासरी वसंत सु वामा॥
आसावरी युक्त यह जानी। श्रीरागके पंच मनमानी॥

मेघरागपंचरागिनी नामभेद

टेक मलार कुञ्जरी नारी। पुनि भूपाली अति हितकारी॥
देशकार युत पंच गनाई। मेघ रागहूके मन भाई॥

दशदोषाभिधान

छप्पय–प्रथम काक सुर कहत तालहीनहु सुरभंगा। ऊमुख ग्रीव डुलंत और पुनि डोलत अंगा॥ सुर भेद न जानंत और सुर ग्रहत कपालहि। समय विना संगीत राग उपजे न रसालहि॥ दश दोष राग संगीत मत गावत गुणो बचावहीं। श्रोता प्रवीन तब सुखलहैं मंगन मोज सुपावहीं॥

शठलक्षण

मुख सुमिष्ट हृदिकपट अडर अपराधि सदाही स्थूल भुजाउर पृथुल श्रोणि बड़ तनु कठराई॥ कूर्मोदर दृग चपल भ्रूरि देही लज्जातनु। लंपट काम सुकेल अतिहि आतुर मर्कट मनु॥ साँच ई।समान कूरहि कहे निज स्वारथ नितहीचहे। अतिहानि वृद्धि अनुमान नहिं शठ सुजान तासे कहे।

अथ शिवस्तुति अष्टकप्रारंभ

श्रीः असारेध्यानशिवहरीहरकाहरकरआसन वाघंबरका । अगडबंअगडबंडिमाकडिमाकडिम् ॥ बाजेडमरूशिवशंकरका ॥ टेक ॥ अंगविभूतिलगावसदाशिवहाथ लिये निशिदिनगोला ॥ कैलास छोड़करलोटेमशानमोऐसाहैशंकरभोला ॥१॥ असारे० ॥ अगड० ॥ खोपरीमें भोजनकरतागिरिजाहैंसोअर्द्धंगा ॥ सुरनरमुनिध्यानधरे कोइदेवता हैअद्भूता ॥ असारे० ॥ अगड० ॥ त्रिशूलसे त्रिपुरासुरमार्‍योतीनलोकमें अधिकारी ॥ नागनकेराकुंडलविराजैंचढ़ेबैलकीअसवारी ॥३॥ असारे० ॥ अगड० ॥ कुंडासोंटालेकरगौराघोटपिलावैं निशिदिनभंगा ॥ गले रुंडकीमालविराजैं जटाजूटशिरहैंगंगा ॥४॥ असारे० ॥ अगड० ॥ विषसेकंठहुवाजबनीलारामनाममुखसेबोला ॥ ठंढाशीतललहरहुवाजबप्रेममगनमेंशिवडोला ॥ ॥५॥ असारे० ॥ अगड० ॥ जोकोइमाँगेउनकूंदेवेऐसाहैशंकर

भोला॥ आकधतूरोआपआरोगेदूध भातकोइकूंदेना॥६॥ असारे०॥अगड०॥ शृंगीशेलीशिवकूंमोहैहाथलियाझोलीचंगा ॥ बहुरंगक रशिरछत्रविराजैओढेगुदडी नवरंगा ॥७॥ असारे०॥ अगड०॥ यकरानीतोरेगौरापार्वतिदूजीरानीशिव अर्द्धंगा॥ तीजीरानीअसलमिलादे जटाजूटशिरहैंगंगा ॥८॥ असारे०॥ अगड०॥ यकरानीतोरेचन्दन घसतीदूजोजलभरलावेगी ॥ तीजीरानीधूपदीपलेचौथी ज्योतिजलावेगी ॥९॥ असारे०॥ अगड०॥ तुकारामउस्तादनाममो साहेबहैसोबहुरंगा ॥ देखदाखलेपोर्थीपुराणमेंमतकरबातांअड़भंगा ॥१०॥ असारे०॥ अडगबंअडगबंडिमाकडिमाकडिमूबाजे डमरू शिवशंकरका ॥

इति शिवस्तुतिअष्टकसमाप्त

अथ संकटमोचनहनुमदष्टकम्

श्रीगणेशायनमः ॥ मत्तगयंदछन्द ॥ बालसमयरवि-

भक्षलियो तबतीनहुँलोकभयोअँधियारो ॥ ताहिसुत्रास-भईजगको यह संकटकाहुसुजातनटारो ॥ देवनिआनिक-रीविनती तबछांड़िदियोरविकष्टनिवारो ॥ कोनहिंजानत हैजगमेंकपिसंकटमोचननामतुम्हारो ॥१॥ बालिकित्रास कपीशबसेगिरिजातमहाप्रभुपंथनिहारो ॥ चौंकिमहामुनि शापदियोतबचाहियकौनविचारविचारो॥ कैद्विजरूपलि-वायमहाप्रभुसो तुमदासकुशोकनिवारो ॥ कोन० ॥२॥ अंगदसंग गयेसियखोजनवैनकपीशतवाहिउचारो॥जीव-तनाबचिहौहमसोंजु विनासुधिलेइयहां पगुधारो ॥ हेरि थकेतटसिंधुसबैतबलेसियकीसुधिप्राणउबारो॥ कोनहिं० ॥३॥ रावणत्रासदईसियकोतबराक्षसिसोंकहि शोकनि-वारो ॥ ताहिसमयहनुमानमहाप्रभुजायमहारजनीचर-मारो ॥ चाहतिसीयअशोकसुआगिसुदैप्रभुमुद्रिविषाद-निवारो ॥ कोनहिं०॥४॥ बाणलग्योउरलक्ष्मणकेतबप्रा-णतजे सुतरावणमारो ॥ लेगृहवैद्यसुषेणसमेततबीगिरिद्रो-णसुवीरउपारो ॥ आनिसजीवनिहाथदईतबलक्ष्मणके तुम प्राणउबारो ॥ कोनहिं० ॥५॥ रावणयुद्धअजायकियोतब नागकिपाशसबैशिरडारो॥ श्रीरघुनाथसमेतसबैदलमोह भयोतबसंकटभारो ॥ आनिखगेशतबैहनुमानजुबंधनका-टिसुत्रासनिवारो ॥ कोनहिं० ॥६॥ बंधुसमेतजबैअहिरा-

वण लै रघुनाथपतालसिधारो ॥ देविहिपूजिभलीविधिसों बलिदेहुसबैमिलिमंत्रविचारो ॥ जायसहाय भयेतबहींअहिरावणसैन्यसमेतसँहारो॥ कोनहिं० ॥७॥ कार्यकियेबड़ देवनकेतुमवीरमहाप्रभुदेख विचारो ॥ कौनसुसंकटमोरगबकोजोतुमसोंनहिंजातहिटारो॥ बेगिहरोहनुमानमहाप्रभु जोकछुसंकटहोयहमारो ॥ कोनहिं०॥८॥ दोहा ॥ लाल देहलालीलसै, अरुधरिलाललँगूर ॥ वज्रदेहदानवदलन, जयजयकपिशूर ॥१॥ यह अष्टकहनुमानका, विरचित तुलसीदास॥ गंगादासजुप्रेमसों, पढ़ै होय दुखनाश ॥२॥

इति श्रीमद्गोस्वामितुलसीदासजीकृतसंकट मोचनहनुमदष्टकं संपूर्णम् ॥

अथ भद्रनारायणाष्टकं प्रारभ्यते

वामेभागेराधयाराजमानंश्यामेरूपेपीतवासोवसानम्।
शश्वद्द्वंद्वंभावयंतंजनानांदेवंवंदे भद्रनारायणाख्यम् ॥ १ ॥
मूर्ध्निभ्राजद्बर्हिपिच्छंदधानंकाश्मीरेणोद्भासितंभालदेशे ।
गुंजापुंजैर्मञ्जुकर्णावतंसंवंदेदेवंभद्रनारायणाख्यम् ॥२॥
वक्षोदेशेवन्यपुष्पच्छदाद्यैः कल्पतांमालांधारयंतंविशालाम्।तद्वत्कंठेकौस्तुभेनोद्भिभान्तं वंदेभद्रनारायणा०॥३॥
केयूराभ्यांरत्नभाभासिताभ्यांबाहुस्थाभ्यांजातरूपोद्भवाभ्याम्।विभ्राजंतंस्निग्धवर्षाघनाभंदेवंवंदेभद्रना० ॥ ४॥

भूषावृंदैर्भूषित शेषगात्रंकंदर्पाभंयोगिभिर्योगगम्यम् ॥५॥ क्वापिप्रेम्णावंशकं वादयंतंगोपीवृंदैर्वेष्ट्यमानंवनान्ते। ताभिर्गीतंगीयमानं मनोज्ञं देवं वंदे भद्रना० ॥६॥ गोपैर्युक्तंक्वापि गोवर्धनाख्येगोत्रोपांतेगाःसवत्साघटोध्नीः। नानारूपैश्चारयंतं सरामं देवं वंदे भ० ॥ ७ ॥ वृंदारण्ये-बालकैःक्रीडमानंनानावेषैश्शुद्धभावानुरक्तैः। क्रीडासक्तैः साकमेभिर्हसंतं देवं वंदे भ० ॥ ८ ॥ स्तोत्रेणानेनयेदेवं भद्रनारायणं हरिम्। संस्तुवंतिनरास्तेषां कार्यसिद्धिः पदेपदे ॥ ९ ॥

इति श्रीकान्यकुब्जवंशोद्भवचहोतरग्रामनिवासिश्रीपंडितरामनारायण शुक्लविरचितं भद्रनारायणाष्टकस्तोत्रंसमाप्तम

पुष्पविननलीलावर्णन

फूल बिनन नहिं जाउँ सखीरी हरिबिन कैसे बीनो फूल। सुनरी सखी मोहिं राम दुहाई फूल लगत त्रिशूल॥ वेजोदिखियत राते राते फूलन फूली डार। हरिविन फुल-झारीसी लागत झरि झरि परत अँगार॥ कैसेकै पनिघट जाउँ सखीरी डोलों सरितातीर। भरि भरि यमुना उमड़ि चलीहै इन नयननके नीर॥ इन नयननिकेनीर सखीरी सेजभई घरनाउँ। चाहतहैं याही पर चढ़िकै श्याम मिलनको

जाउँ ॥ प्राण हमारे विन हरिप्यारे रहें अधरन पर आय। कृष्णबिहारीके प्रभुसों सजनी कौन कहै समुझाय॥इति॥

प्यारेका विदेशपयान वर्णन

कवित्त

रोकहिं जोतो असंगल होय औ प्रेमनसै जो कहैं पिय जइये। जो कहैं जाहु न तो प्रभुता जो कछू न कहैं तो सनेह नशाइये॥ कृष्णबिहारी कहैं तुम्हरे विन जीहैं नतो यह क्यों पतिआइये। ताही पयान समैंतुम्हरे हमकाकहैं आपै हमैं समझाइये॥ १॥ इति॥

हनुमानयुद्धप्रशंसा

नाचि नाचि कूदि कूदि किलकि कपि उछरि उछरि राहलेत आशमानकी। बलकि बलकि बल करि करि छरि दरि छरत छरेद भेद कृतगत भानकी॥ रुण्डन सो रुण्ड अरु मुण्डनसो मुण्डकरि भारीभट झुण्डन घुमण्ड मारुधानकी॥ शाबस कहत राम हिये हरषात जात देखो वीर लषन लड़नि हनुमानकी॥ इति॥

वर्तमान दशा

कवित्त

दानि कोउ नाहिंने गुलाबदानी पीकदानी गोंददानी घनीशोभा इनही में लहेहैं। मानत गुणी को गुणहीमैं

प्रकटत देख्यो याते गुणी जन मन सावधानी गहेहैं ॥ हयदान हेमदान गजदान भूमिदान किशुनविहारी ये पुराणन में कहेहैं । अब तो कलमदान जुजदान जामदान खानदान पानदान कहिबेको रहेहैं ॥ १ ॥

वर्तमान दान उपहास

कवित्त

पौरिके किवाँर देत घरे सबै गारिदेत साधुन को दोष देत प्रीतना चहतहैं । माँगनेको ज्वाब देत बात कहे रोय देत लेत देत भाँजिदेत ऐसे निबहतहैं ॥ बागेहूके बंत देत वाहनको गांठदेत पर्दनकी काछ देत काममें रहत हैं ॥ येत पै सबैई कहैं लाला कछु देत नाहीं लालाजूतो आठो याम देतही रहत हैं ॥ १॥ इति ॥

अथ पुरातनकथाप्रारंभ

चौपाई ॥ पौढ़ोलालकहतिमहतारी। कहौंकथाइकश्रवणनिप्यारी॥ हर्षयहसुनिमनवनबारी । पौढ़िगयेहँसिदेत हुँकारी॥ नगरएकरमणीकसुहावन नामअवधअतिसुन्दर पावन ॥ बड़ेमहलतहँअगमअटारी । सुन्दरविशदचारुगचढारी ॥ बहुतगलीपुरबीचसुहाई । रहैंसदासबसुगँधसिचाई ॥ भाँति भाँतिबहुबाटबजारू । अतिसुन्दरजनुविश्व

शृंगारू। तहांनृपतिदशरथरजधानी॥ तिनकेनारितीनपट-
रानी॥ कौशल्याकैकेईसुमित्रा। तिनजन्मेसुतचारपवित्रा॥
रामभरतलक्ष्मणरिपुहंता। चारौं अतिसुन्दरगुणवंता॥
तिनमेंएकरामव्रतधारी। अति सुन्दरजनकेहितकारी॥
विश्वामित्रएकऋषिराई। तिनहिंसतावैंनिशचरआई॥ तिन
नृपसोंद्वैसुत लियेमाँगी। अपनीरक्षाकेहितलागी॥दोहा॥
रामलषणऋषिलैगये, दनुजहतेतिनजाय॥ ऋषिदीनीवि-
द्याबहुत, तिनकोअतिसुखपाय॥सोरठा॥ तहांजनकइक
भूप, धनुषयज्ञतानेरच्यो॥ कन्यातासुअनूप, जुरेतहाँभू-
पतिअमित॥चौपाई॥ ऋषि लेगयेकुँवरतहँदोऊ। जनक
रायसनमानेसोऊ॥ धनुषतोरिभूपनदुखमारी। रामवि-
वाहीजनककुमारी॥ चारहुकुँवरव्याहतहँआये। भयेअवध
पुर अनंदबधाये॥ रामहिंदेनलगेनृपराजू। सज्योसकल
अभिषेकसमाजू॥ ताहीसमयकैकयीरानी। चेरीकीमति
सोंबौरानी॥ वचनमाँगिराजासोंलीनो। वनकोवासराम
कोदीनो॥ सुनिपितुवचनधर्म हितधारी। नारीसहितभये
वनचारी॥ तिन्हैंचलत भ्रातासँगलाग्यो। उनकेजातपिता
तनुत्याग्यो॥ चित्रकूटभयोभरतमिलनजब। दैपदपावरि
कृपा करीतब॥ युवतीहेतुकपटमृगमारा। राजिवलोचन
रामउदारा॥ रावणहरणकियोतबनारी। सुनत श्यामघन

नींदविसारी ॥ चौंकिकह्योलक्ष्मणधनुदेहू । देखभयोयशु दहिसन्देहू ॥छन्द॥ संदेहजननामनभयोहरिचौंकिधौंकाहे परचो ॥ कहुँदीठखेलनमेंलगीधौंस्वप्नमेंकान्हरडच्यो ॥ बहुभाँति देवमनायपढ़िपढ़िमंत्रदोषनिवारई ॥ लैपियति पानीवारिपुनिपुनिराइलोनउतारई ॥दोहा॥सांझहितेविरुझायहरि, करीचन्द्रहितआरि ॥ झिझकउठ्योधोंताहिते, रह्योसुरतउरधारि ॥सोरठा॥ बड़भागिनिनँदनारि, महिमावेद न कहि सकैं ॥ हरिकोवदननिहारि, बिसरावतित्रय पापदुख ॥

इति पुरातनकथालीलासम्पूर्ण

अथ लँगड़ी रंगतकी

श्रीगणेशायनमः ॥ रागलावनी ॥ नेहकरोमत नारीसे नारीमेंनखशिखकपटभरा । राजाभर्तरीयोगलेयकेजंगल काउनराहधरा ॥टेक॥ सोमनामइक ब्राह्मणथावोउज्जैननगरीकाबासी । गेहत्यागिकेगयावोवनकूंबनकेसंन्यासी ॥ प्राणायामचढ़ाय समाधीखैंचगयावोतोखासी ॥ देखतपस्याहोगये प्रसन्नउसपै अविनासी ॥ नारदजीनेअमृतफल इकल्यायकेउसकेहाथधरा ॥ राजाभर्तरी० ॥१॥ अमृत फलकूँदेखविप्रनेअपनेमनमेंशोककिया । मेरेतो लायकनहींहैजायभूपकूँभेटदिया ॥ सोफलल‌खि भर्तरीभूपकाअ-

न्तरसेहुलसाजुहिया। उसीममय मेंअपनीप्राणप्रियाकूँ बुलालिया॥ इसकूँतुमखा जाहुसुन्दरीयेअमृतफलरसका भरा ॥राजा०॥२॥ घाड़ेकाइकसहीसथावोरानीकादोसत भारी ॥ उसकूँजायकेदिया फलप्रेमसूँप्रीतमकीप्यारी ॥ सहीसओवेश्यादोनोंकीआपुसमेंथीबहुतयारी ॥ दियाउ-सेफलइसेतुमखालेनासुन्दरिनारी॥ वेश्याकीथीलगनभूप सेसोफलनृपकोदियाखरा ॥ राजा० ॥३॥ देखअमरफल नरेशअपनमनमेंअति अचरज पाया ॥ पूंछाउससेसांचकहु तेरेपासकहाँसेयेआया ॥ वेश्यानेदहसतकेमारेनामसहिस काबतलाया ॥ छाड़उसीकूँएकदमचवेंदारकोबुलवाया ॥ उससेजबपूंछाराजानेउसनेगनाकाव्यानकरा ॥ राजा० ॥४॥ जिसकोमैंदिनरैनचहौंउसकेचितचवैंदारबसा॥ चवैं दारकाचित्तचंचलचातुरगणिकासेजुफँसा। उसवेश्याबेव कूफकादिलमेरीदोस्तिदग्ध्यानठसा ॥ मुझकोतोअबआ-करवैराग्यरूप अजगरनेडसा॥धिकरानीवेश्यानौकरधिक काम मोहिंधिक्कारपरा॥राजा०॥५॥ ऐसाकरविचारराजा नेअसारसबसंसारतजा। जाकरवनमेंभलातनमनसेसीता रामभजा ॥ श्रीरामानुजसंप्रदायगुरुतुलसीदासचरणोंकी रजा।साधुगंगादासनेइसलोकऊपरख्यालसजा॥ जोका-मिनिसेबचे जगत्‌मेंउसकाअंतःकरणठरा ॥राजा० ॥६॥

इति लंगड़ी रंगतकी समाप्त

अथ रागलावनी छन्दचौपैया

श्रीगणेशाय नमः ॥ जयतिजयतिजयजयतिजयति जयरामानुजमुकुन्दपालं॥ जयतिपतियजयजयजगदीश्वर जयजगकारणकरुणालं॥टेक॥ वंदे अस्मद्देशिकगुरुश्रीरा-मानुजनिजजनपालं॥जगतजनमियतिराजयतनकरिकृत-सुबाधकृनजगजालम्। जिहिजिहियुगविनशतसुधर्म जग-होइअधर्मअघविकरालम्॥ तबतबप्रगटस्वधर्मथापि अन-धर्मउथापिततत्कालम्। निज आश्रित तिहिदेतअभय पद-दुष्टसमूहनकहँकालम्॥ जयति०॥१॥ सतयुगमेंशेषावता-रकृतसहसरसनधृतमुखआलम्॥ त्रेतामेंलक्ष्मणलक्षणयुत धरिशरीरखलदलकालम्॥द्वापरमेंबलरामधामबलधरिव-पुबहुबलिबलशालम्। कलियुगमध्यप्रगटरामानुजकृत प्रवर्तशुभश्रुतिचालम्॥ शाक्तजैनशांकरकुपालमतमत्तग-जगंजनहरिबालम्॥ जयति०॥२॥ शीर्षशिखासितवसन सुवेष्टितशशिसममुखदृगसुविशालम्॥ उदितप्रातमार्तंड अखंडितऊर्ध्वपुंड्रविलसितभालम्॥ यज्ञसूत्रकटिसूत्रमे-खलाकंठनलिनतुलसीमालम्। योगयुक्तियुतयज्ञक्रिया मययज्ञरूप जनभयटालम्॥कांषाम्बरकौपीनकमंडलुकरत्रि दंडतरमृगछालम् ॥जयति०॥३॥ करिदिगविजयकियेदु-र्जनआपुअजय अविगतलालम्॥ मायावादि विवादनि

रतमन दहनप्रबलअगनीज्वालम् ॥ वृथावादवेदांतिध्वां-
तिविध्वंसिभ्रांतिभ्रमजंजालम् ॥ प्रबलप्रतापनगारिसमग्र-
सनग्रासकरनदुरजनव्यालम् ॥ श्रीगुरुतुलसीदासदयाते
जाह्नविजननिगदित ख्यालम् ॥ जयति० ॥४॥

आषाढ़मासवर्णन

कवित्त

आई अषाढ़कि कारीघटा घहरानलगे बदरा चहुँफे-
रके। दूजे जो कंत बिदेश गये सुधिपाईन नेक रही मग
हेरिके॥ उमराय स्वभावविहंग कहे मृदुवैनकहै जो सखी
कहे टेरिके ॥ सोनेसों चोंच मढ़ैहौंतेरी बलिजैहौंपपीहा
पियाकहू फेरिके ॥१॥

सावनमासवर्णन

कवित्त

कूकै लगीं कोकिलैं कदम्बनपै रातो दिन मोर पिक
शोरहू सुनात चहूँपास है। मन्द मन्द गर्जत घनेरी घटा
घूमि घूमि बहत समीर धीर संयुत सुवास है॥ जित तित
नारी नर गावैं सुख पावैं अति झूलत हिंडोरे लाल बाढ़त
हुलास है। हिय सरसावनकी काम सरसावनको बूँद
वरसावनको सावन सुमास है ॥ इति ॥

हारचोरनलीला

कहु राधा क्यहिं हार चुरायो। ब्रज युवती सबही मैं जानति घर घर लै लै नाम बतायो॥ श्यामा कामा रसिका चतुरा नवला प्रमदा नारि। सुखमा शीला अवध अनन्दा वृन्दा यमुना सारि॥ कपिला तारा विमला चंद्रा चंद्रावलि सुकुमारि। अमला अबला कुञ्जा मुक्ता हीरा नीला प्यारि॥ सुमना बहुला चम्पा जुहिला ज्ञाना भाना भाम। प्रेमा दामा रूपा हंसा रंगा हरषा नाम॥ द्रुमिला रम्भा कृष्णा ध्याना मैना नैना रूप। रत्ना कुमुदा मोहा करुणा ललना लोभा नूप॥ इतनिनमें कहु कौने लोन्हेउ ताको नाम बताव। कृष्णबिहारी चोर तुम्हारे मैं जानति सब दांव॥ १॥ इति॥

विरहिनीविलाप

कवित्त

कारे कारे बादर डरावने लगत अब दादुरकी ध्वनि सुनि भूलै दशा तनकी। बूँद की झकोर झकझोर पुरवाई करे हरे मन मोर शोर चहूँ ओर वनकी॥ हरी हरी लतिका करावैं घरी घरी याद इन्द्रगोप लखि लाल गुंजमाल गनकी। कृष्णबिहारी बिन लागै उर आर ऊधो पपीहा पुकार झनकार झिंगुरनकी॥ इति॥

रागलावनीछंदचौपैया

श्रीगणेशायनमः ॥ भूरिभाग्यगुरुदेवमिलेश्रीरामानुज मंगलकरणम् । मंगलमूलसकलमंगलनिधिअखिलअ-मंगलदलदरणम् ॥टेक॥ द्राविड़देशदिनेशउदितहोयदशहु दिशादीपितकरणम् । प्रबलप्रतापतापतीक्षणलखिलगे दुष्टजन तन जरनम् ॥ मायावादिकुहरअतिसंकुल वेद-विरोधि तिमिरि तरुणम् । ततक्षणतिनकहँकियेविनाश-निजवाक्यप्रकाश निकरकिरणम् ॥ भूरि० ॥ २ ॥ जैन-उलूकअनेकअंधभयेबौद्धमुकुटमुदितकरणम् । शैवशाक्त-सबचक्रवाककापालि चकोरलगेडरणम् ॥ अभिमानी-अद्वैतनिरंतरचोरलगेसब दुखभरनम् । हिमपाषाणसकल-निंदकजन परशप्रभातत्क्षण गरणम् ॥ भूरि० ॥ ३ ॥ करत्रिदंडसुप्रचंडअखंडनखंडन पाषंडीबरनम् । खंडन-अघमंडनभूमंडलपंडितमुखअमृत झरनम् ॥ पाषंडद्रु-मखंडसघनदावानलहोयदाहनकरणम । चारवाकशठशै-लसमहहतिभाष्यवज्रपातितधरणम् ॥भू०॥४॥ भक्तभृंग-आनंदकरनअतिअंबुजसमकोमलचरणम् । चरममंत्रउप-देशकरतभवभीतजुजनआवतशरणम् ॥ श्रुति विचार-आचारनिरतअनचारभारततक्षणहरणम् । श्रीगुरु तुलसि-दासपद आश्रितजाहविजन पोषणभरणम् ॥भूरि०॥५॥

इति लावनीछंदचौपैयासंपूर्ण ।

अथ शिक्षाककाबत्तीसी प्रारंभ

श्रीः ॥ ककारेकर्मधर्मकुलरीतिसँभारो ॥ १ ॥ खखारे खाड़ैखूंचैपगमतिधारो ॥२॥ गगारेगर्वछाँड़बेगर्वारहिज्यो ॥ ३ ॥ घघारेघरआयांकोआदरकरिज्यो ॥ ४ ॥ ङङारे नमस्कारनित्यसूरजदेवन ॥५॥ चचारेचतुरपुरुषकीसंगति सेवन ॥ ६ ॥ छछारेछलाबलीकेसंगनहिंफिरिज्ये ॥ ७ ॥ जजारेजगतसुहायोकारजकरज्ये ॥८॥ झझारेझगड़ैजाय झूठमतिबोलो ॥ ९ ॥ ञञारेञाञाञायोंमतिडोलो ॥१०॥ टटारेटकापईसाभेलाकरिये ॥ ११ ॥ ठठारेठाकटोक बोबणीकरधरिये ॥ १२ ॥ डडारेडाकनकीनिंदानहिंकीजे ॥ १३ ॥ ढढारेढगढंगनसोदूरारहिजे ॥ १४ ॥ णणारेनात जातमेंपहिलीजइयै ॥१५॥ ततारेतातोभोजनकबहुँनखइयै ॥१६॥ थथारेथरकणविनादूधनहिंपीजे ॥ १७ ॥ ददारेदया धर्महितचितसूं कीजै ॥१८॥ धधारेधनदेकरनिर्धननहिंहोजै ॥ १९ ॥ ननारेनारायननयनानितजोजै ॥ २० ॥ पपारे परमेश्वरकीआशाकरियै ॥२१॥ फफारेफलवंतातरुवरपग धरियै ॥ २२ ॥ बबारेबणडबुरारकचरादेखिजे ॥ २३ ॥ भभारेभणवामेंआलसनहिंकीजै ॥२४॥ ममारेमातपिताकी आज्ञापालो ॥२५॥ ययारेयादकरोगुरुदेवसँभालो ॥२६॥ ररारेरमवामेंवेलामतिखोवो ॥२७॥ ललारेलाभमहानितन

मनसूंत्तोवो ॥२८॥ ववारेवर्तमानकीविद्यालीजे ॥२९॥ शशारेशस्त्रपरायेहाथनदीजे ॥३०॥ षषारेषटकहैआराधन करजे ॥३१॥ ससागेसमझबूझपगआगेधरजे ॥३२॥ हहारे हँमताँहँसतांराररनकरिये॥३३॥ललारेलक्षणसीखकुलक्षण हरिये ॥३४॥क्षक्षारेक्षमाकरैजासोंनितबोलो॥३५॥ त्रत्रारे तृणसमानमूरखमनतोलो ॥ ३६ ॥ ज्ञज्ञारेज्ञानविनापशु पूँछविहाणो ॥३७॥ अ. अआरेअर्थविनाविद्याधनकाणो ॥३८॥ आ. अआरेआदरभावसबनसोंकीजे ॥३९॥ इ. इइरेईश्वरकोसुमिरणचितदीजे॥४०॥ई. ईईरेईर्षाद्वेषत्याग जोमनकी ॥४१॥ उ. उउरेउघरइघरतोदेखोतनकी ॥४२॥ ऊ. ऊऊरेऊंचपदीपरमेश्वरदेसी ॥४३॥ ए. एएरेएकवार सुखदुखकीकहसी ॥ ४४ ॥ ऐ. ऐऐरेऐसीकरणीतोकबहुँ न रहिये॥४५॥ओ. ओओरेओलंभोप्रभुकोक्यूँसहिये॥४६॥ औ. औऔरेऔरकामतोसबहीदूणा ॥ ४७॥ अं. अंअंरे अंगहीनहरिभक्तिविहूणा॥४८॥अः. अःअःरेअःअःकरतो जलनहिंपीजे ॥४९॥ ऋ. ऋऋरेऋणमाथेकबहूँनहिंकीजे ॥५०॥ ऌ. ऌऌरेऌऌकरतोघरघरनहिंफिरजे॥५१॥ ऋ. ऋऋरेऋद्धिसिद्धिदाताहियधरिजे ॥ ५२ ॥ दोहा ॥ यह शिक्षाबत्तीसको, जोकोइबांचैसार । श्रीधरसांचाहेतसूँ, परजाकरैजुहार ॥ १ ॥ इति ॥

अथ श्रीरामचन्द्रजीकी विनती

छप्पय

जयति राम सुखधाम काम अरिचाप विभंजन। जयति बाहुबल अति विमूढ़ नृपकुल मदगंजन॥ जयति सत्यव्रत जनक कठिनतर प्रणपरिपालक। जयति देव दुष्कर चरित्र माया नर बालक॥ जय जयति मोहनी सहज छबि विवश नारि नर मनहरण। जय जयति नवल घन वरण श्रीरामचन्द्र करुणाकरण॥ १॥ इति॥

अथ श्रीकृष्णचन्द्रजीकी विनती

छप्पय

जयति यशोदानन्द सुखद सुर मुनि द्विजत्राता। जयतिदेव वसुदेव देवकी अभिमतदाता॥ जयति रास-मण्डल विलास मण्डन गुणमण्डित। जयति मत्त कन्दर्प दर्प भञ्जन अतिपण्डित॥ जय जयति तृप्त महिपाल मिष प्रबल दितिजकुल दल दरण। जय जयति कृष्ण प्रभु वपुधरण मम इच्छा पूरण करण॥ १॥ इति॥

अथ श्रीविष्णुजीकी विनती

छप्पय

जय जय धृत बटुरूप जयति सुरकारज पटुतर। रणमख बलिकृत दैत्य जयति बलि दैत्य दर्पदर॥ जयति

तीन पग भुवन करन भय हरन भग्न सुख। अशरण शरण दयालु दरण दुख अति सुन्दर मुख ॥ जय जग पावन रावण दुखद बर अभीष्ट रम अघहरण। जय वामन वपुधर विष्णु प्रभु मम इच्छा पूरणकरण॥ १॥ इति॥

अथ चीरहरण लीला

हमरो अम्बर देहु मुरारी॥ टेक॥ लै सब चीर कदम चढ़ि बैठे हम जल मांझ उघारी ॥ तटपर विना वसन क्यों आवैं लाज लगति है भारी। चोली हार तुमहींको दीनो चीर हमहिं देव डारी ॥ सुन्दर श्याम कमलदल लोचन हम हैं दासि तुम्हारी । जो कछु कहौ सोइ हम करिहैं चरण कमलपर वारी॥ अंग अंग कम्पत कृष्णविहारी विनती सुनहु हमारी। सूरश्याम कछु छोह करोजू शीत भई अति भारी ॥

अथ जलविहार लीला

राधे छिरकत छैल लबीली। कुच कुंकुम कंचुकि बंद टूटे लटकि रही लट गीली॥ बन्दन शिर ताटंक गंडपर रत्न जटित मनि लीली। गति गयंद मृगराज सुकटिपर शोभित किंकिणि ढीली॥ मचो खेल यमुना जल अन्तर प्रेममुदित रस झीली। नन्दसुवनभुज ग्रीव विराजत भाग

सुहाग भरीली॥ वर्षत सुमन देवगण हर्षित दुंदुभि सरस बजीली। सूरश्याम श्यामा रस क्रीडत यमुना तरंग थकीली ॥ १ ॥

अथ चुगुलखोरनको कवित्त

चूकजात जौहरी जवाहिर परख जानै चूकजात पण्डित पढ़ैया वेद चारीके। चूकजात घोड़ेको चढ़ैया असवार पूरो चूक जात बाजे रोजगार रोजगारीके॥ चूक जात मेघ मेघराजनकी बात हूमैं कैवो चूक जात या लिखैया लेखधारीके। बाण किरपाणको घलैया पूरो चूक जात एक नहीं चूकैहै चुगुल कर्म्म ख्वारीके ॥ इति ॥

अथ बाँसुरीलीला

बाँसुरीदीजेहोब्रजनारि ॥ १ ॥ कृष्णवचन ॥ कालिह सखीयहठौरबाँसुरीभूलिबिसारी ॥ लेजुगईतुमधामढाक हमसुनीतुम्हारी॥ नाहिनतुम्हरेकामकी, बंशीहमरीदेउ॥ हमआतुरहैमांगहीं तुमनाहिंजुनाहिंकरौ॥२॥सखीवचन॥ लंगरकन्हैयाढीठतोहिंअब कौनपतीजै ॥ डारिदियोकहिं औरदोषहमहींकोदीजै॥ तुमऐसेलंगरकेतके, माँगतहमसों छाँछ ॥ चतुराईप्रभुछाँड़िकै, तुमकहानचाओहाथ ॥३॥ कैसीबंशीहोतनहींहमनयननदेखी॥ बापतुम्हारेसाधु लाल

तुमबड़ेविवेकी ॥ इतउतखेलततुमफिरो, कहिंखेलतबिसरी गई । तेरीसौंबाबाकिसौंह, हममुरलीनाहिंलई ॥ ४ ॥ कृष्णवचन ॥ बंसीदेहुगंवारिकाहेकोरारिबढ़ावो । मनमें समुझिविचारिकाहेकोलोगहँसावो ॥ लोगहँसैंचरचाकरैं, मनमेंसमुझिविचारि । बंसीहमरीप्रेमकी तुमकाहेनदेत गँवारि ॥ ५ ॥ सखीवचन ॥ हमकोकहतगँवारि आपनी करतबड़ाई। मारोंगुलचातानि तबैबाबाकीजाई ॥ लैलकड़ी मुखपैधरी, बंसीताकोनाम । जाघरतुमसेपुत्रहैं, उजरत वाकोगाम ॥ ६ ॥ कृष्णवचन ॥ बसैकिऊजरहोय नहीं परवाहतिहारी। तुमसीहैंलखचार नंद घरगोबरहारी॥ लाख रहैंदरबारखड़ी, लखआवैंलखजायँ । लखनित उठिदरशन करैं, सुन्दरमनपछितायँ॥७॥ सखीकाबंसीदेना॥ग्वालिन चतुरसुजानबांसुरीआपहिदीन्ही। मोहनचतुरसुजानसांवरे हँसिकैलीन्ही॥ लैबंसीग्वालिनमिली, घुंघुटबदनदुराय। सूरदासप्रभुहारीग्वालिनि, जीतेयदुपतिराय ॥ ८ ॥ (श्रीकृष्णकामुरलीबजाना) लैबंशीयदुरायजाययमुनातट कीन्हीं।सुरतेतीसौकोटिवहाँसरवनजोलीन्हीं॥ भक्तवत्सल सुखदायक, राखोसबकोनाम । तिनसेंप्रभुतुमआपुहो, गुणगावतसूरसुजान ॥ ९ ॥

इति श्रीसूरदासकृतवंशीलीलासमाप्त ॥

अथ नागलीला

छंद॥ शुभघरीशुभदिनमुहूरतनंदकेलालाभयो॥लाइये ब्रजराजपंडितसुरनरनकादुखगयो ॥ धनिधनियशोदा भाग्यतेरेगोकुलाकोसुखभयो। कंसआज्ञाफूलकारणकृष्ण वनमालीभयो॥ मारोगेंदगिरोयमुनामेंकूदिकालीदहगयो। जहँनागसोवैनागिनिजागेकृष्णपहुँचेजाइके ॥ करजोरि विनतीकरतनागिनिजाहुलालनभागिकै॥ नहिंनागतुमरो शब्दपैहैजागउठिहिरिसाइकै ॥ नागजागेहमैंलागैअबतो भागेनाबनै॥ होनिहोयसोहोयनागिनिनागअबनाथेबनै॥ करजोरिविनतीकरतनागिनि ऐसोललनमतिकहो॥ जाके सहसफनदोसहसजिह्वातासेसरवरिमतिलहो॥ कंसकेसँग पंसखेलैंनागकोसंहारिकै॥ नागनाथबफूललादबगोकुला कोजाबरे॥ पीठठोंकिजगायनागिनि नागउठोरिसाइके॥ अबसहसफनफुफकारछाँड़ेकृष्णकालेह्वेगये ॥ कृष्णउठि जबगरुड़टेरोगरुड़पहुँचोधाइकै ॥ गरुड़आवतनागदेखो नागकेमूर्छाभयी ॥ नागकेमूर्च्छाभयीतबकृष्णपहुँचेधाइ के॥ लादलीनाकमलडंडीनागनाथेउजाइके ॥ करजोरि विनतीकरतनागिनिमाँगिपीतमपाइहौ ॥ अहिवातदेयशु- दाकेनंदनबंदिछोरकहाइहौ॥येजीतबतोनागिनिसोंयोंबोले

अबतुमविनतीक्योंकरे ॥ तेरोनागछीनहिंसकैकेऊचरण चिह्नलखातरे ॥ कंसमारिनिजयशकीन्ह संतसबसुख पावहीं ॥ अबसूरकेप्रभुनागलीलारहसमंडलगावहीं ॥

इति श्रीनागलीला समाप्ता ।

अथ विद्याबत्तीसी

दोहा ॥ श्रीकृष्णकीशरणहूँ, सुधिबुधिदेततकाल । विघ्नहरणसबसुखकरण, नमोनमोगोपाल ॥ १ ॥ गादी जोसलनगरकी, राजेश्वररणजीत । यहविद्याबत्तीसिको, म्हेताकरीअजीत ॥ २ ॥ प्रातहिउठगुरुध्यानधर, प्रभुके चरणसँभार । सादरगणपतिसुमिरकै, करविद्याउपचार ॥ ३ ॥ कानासूंगुरुवाक्यसुन, मुखसोंकरोउचार । फेरि हृदयधरकरलिखो, अक्षरनयननिहार ॥ ४ ॥ पंचवर्षसे आदिलै, करविद्याअभ्यास ।जबलगकारेकेशहों, छांड़ न विद्याआस ॥ ५ ॥ अक्षरमात्राअंकशिख, फिरसंयोग विचार । इनविद्याकापार नहिं, होयअपारअपार ॥ ६ ॥ तजछलआलसअंगते, ढीलापनमतधार । विद्याश्रमअरु लगनसे, सदासँभारसँभार ॥७॥ एकचित्तह्वैबैठकरि, पूरण गुरुसेपाय। सुधविद्याकूंसमझकै, सीखोनितप्रतिजाय॥८॥ थोड़ोहीपढ़बोभलो, श्रद्धासेनरश्रेष्ठ। वेश्रद्धाकेविरुधहोय,

बहुतपढ़ैफिरकष्ट ॥ ९ ॥ क्रमक्रमविद्यासीखियां, मूरख पंडित होय। बूँदबूँदजलबरसियां, सागरपूरणसोय॥१०॥ विद्याकोसंग्रहकरो, विद्यारत्नरसान। विद्याजगमेंगुप्तधन, लोहाकंचनभान ॥११॥ कामधेनुयाजगतमें, जाहरविद्या योग। मूरखनरसमझैनहीं, भुगतैअपनाभोग ॥ १२ ॥ विद्यारूपीव्यसनरख, राखहर्षहियमाहिं। विद्यादेशविदे-शमें, मंत्रहोयकरिसाहिं ॥१३॥ हिम्मतकबहुँ न हारिये, विद्यापढ़िबेमाहिं। हिम्मतसेकीमतबढ़े, देखविद्याकीछाहिं ॥ १४ ॥ पढ़बेमेंकबहूँनहीं, खालीदिनमतखोय। पीछे पछतानाघणा, कारीलगैनकोय ॥ १५ ॥ भलिविद्याकी त्रासना, जासेसबसुधहोय। विद्यासेभलपनमिलै, पाछे बहुसुखजोय ॥१६॥ विद्याकोसुखबहुतहै, स्त्रीसेहैअधि-काय। वाघरमाहेसुखकरै, औघटमेंसुखथाय॥१७॥ मोटे कुलमेंजनमले, विद्यासीखीनाय। धृकलीनोवाकोजनम, पशुसंज्ञामेंआय ॥ १८ ॥ विद्यासबकुलरीतिहै, नीचहि उत्तमदीख। कुलकोकारणनाहिहै, विद्यासोंनरतीख॥१९॥ राजकाजविद्याविना, कहाकरोपरबंध। न्यायरीतिगुण रीतसब, विनविद्यानरअंध॥२०॥ विद्यासेबुद्धीबढ़ै, विद्या रोजीसार। विद्याविनभागनखुलै, बड़विद्याउपकार॥२१॥ विद्यासेआदरमिलै, विद्यामेंसन्मान। विद्यासेभक्तीबढ़ै,

विद्यायुक्तीज्ञान ॥ २२ ॥ विद्याविनबुद्धी नहीं, विद्याविन नहिंसिद्ध । विद्याविनबृद्धीनहीं, विद्याविननहिंरिद्ध ॥२३॥ विद्यानूचोरनलगे, वरत्यांखूटेनाहिं । ज्यूंखरचैत्यूंबहुबढ़ै, हैयशजगकेमाहिं ॥ २४ ॥ विद्यासागरहैबड़ो, विद्याको नहिंछेह । जोचाहोसोफललहो, विद्याबड़पनएह ॥ २५ ॥ विद्यारूपसभानमें, विद्यारूपविवाद । विद्यारूपविरूपकी, विद्यारूपसंवाद ॥२६॥ वैद्यकज्योतिषतरकमत, सबविद्या आधीन । विद्याविननरबेसुरत, कहाकैरपरवीन ॥ २७ ॥ कुलमेंविद्यावंतइक, दीपकहोयउजास । अंधेरोसोशठनसे, कहाकैरपरकास ॥ २८ ॥ दृष्टीविद्यावानकी, चहुँदिशि पहुँचैजाय । विद्यामेंसबगुणबसैं, विद्याविनानकाय ॥२९॥ विद्यामेंलज्ञातजो, देखोग्रंथअनेक । तंतसारसेप्यारकर, ऐसीधारोटेक ॥३०॥ गुरूकृपाखातिरजमैं, भइजोबारंबार । आछीबुधिभइशिक्षकी, विद्यासारंसार ॥ ३१ ॥ विद्यासों दिग्विजयहै, विद्यासेसबजीत । विद्यासेपूरणपुरुष, होय अजीतअजीत ॥३२॥ बातांचतुराईविद्या, आसीकेदिन याद । जातांजुगांनजावसी, निभसीआदिअनाद ॥३३॥ धनहैविद्यावानकूं, धनजननीधनतात । धनधनहैगुरुदेवकूं, धनहैउनकीजात ॥ ३४ ॥ अरजकरतअगजीतये, बहु तनमोमेंबोध । चूकभूलकूंजांचकर, शुद्धकरोकविशोध

॥ ३५ ॥ उगनीसौअट्ठारवैं, दीपमालशनिदिन्न । कियो सँपूरणग्रंथकूं, पढ़ैमनहुवैप्रसन्न ॥ ३६ ॥

इति श्रीविद्यावत्तीसीम्हेताअजीतकृतसंपूर्णम् ॥

प्रलम्बासुरवध लीला

कवित्त ॥ एक ओर श्याम सुखधाम संग सखा लीन्हे राम अभिराम दूजो ग्वालगनि लीन्हो है। फलको बुझाव लागे खेलन सुमेल मिलि बाल केलि खेलमें सरस रस भीनो है ॥ असुर प्रलम्ब तहां ग्वालरूप आय मिलो बसाहीं चढ़ाय पीठ जाहै छल कीन्हों है। कसिकै मसकि बलि हँसिकै यों वश कीन्हों चसकि सक्यो न ससकनि प्राण दीन्हों है ॥

दावानलपान लीला

कवित्त ॥ एक दिन महर महरि गोपी ग्वाल निशि वनवसि मति गति आरसमें भीनी है। दावानल दुष्ट तहां आय चहूँ ओर छाय जाय लाय वनको जराय राख कीनी है ॥ लखि भय पाय ग्वाल पाहि त्राहि भाषी सुनि आंखिन मुँदाय आगि पान कीन्ही हीनी है। जहां ज्योति जो मत मतो मँहि गिलत देख्यो हरिदास तम जाने ज्योति गिलि लीनी है ॥ इति ॥

पनघट लीला

कवित्त ॥ गोकुलकी नागरी लै गागरी उमंगि चलीं रूपगुण आगरी उजागरी सुभायकै। नागरनवलनट ठाढ़ो पनिघट घाट पीतपट मुकुट लकुटिअटकायकै ॥ आवैं जे भरनघाट ताको ढरकाइ देत लेत अपनाइ घटलाजनि घटायकै। निमिष बिसारिकै निहारैं ब्रजनारैं पतिव्रत पनिहारैं पैं निहारैं तट जायकै ॥

चकई भौंरा खेलन लीला

चौपाई ॥ दैमैया भौंरा चक डोरी। खेलत रहिहौंब्रजकी खोरी ॥ हर्षि जननि आरे पर भाषे। तुमहितनये मोल लै राखे ॥ लै आये हरि तुरत निकारी। भये मग्न हरिरंग निहारी ॥ विहँसि चले फेरत चक डोरी ॥ खेलत सखन संग ब्रज ओरी गोपिनकेयह ध्यान सदाई। नेक न अन्तर होहिं कन्हाई॥ मारग चलति तिन्हैं हरि रोंके। खेलत मांझ जहाँ तहँ टोंके ॥ चकई भौंरा डोर फिरावैं। तिनके भूषणसों अरुझावैं ॥ गेंदउरोज न माहिं दुरावैं॥ यहि विधि हरिसों अंग छुवावैं कंचुकि फारि आपही लेहीं ॥ यशुदहि जाहि उरहनो देहीं ॥इति॥

अघासुरवध लीला

दोहा-गावत खेलत हँसतसब, खसावृन्दगो साथ ।
पहुँचे वृन्दावन सघन, वृन्दावनके नाथ ॥

कवित्त॥ अघओघ अघ नाम पापी अजगरतनु धारि मुखफारि उन बाट सबै रोकि लीन ॥ मंदरकी कन्दरसी सुन्दर निहारी ताके अन्तर गुवाल सब गायन गमन कीन ॥ बहर दहन जोदहन लागो तबै अहि धुनि सुनि श्याम ताके मुख माहिं भये पीन ॥ मुख नहिं सक्यो-मीच भयोमीच वश नीच आपै प्रभु कीन्हों ताको जीव निज ज्योतिलीन ॥इति॥

माटीखान लीला

कवित्त॥ आनिनँदरानीसों कह्यो है काहू आनि आज माटीखात देख्यो अबै तेरोरी नँदन मैं ॥ सुनत रिसाय सुत बोलिमुख खोलि देख्यो एकैब्रह्म दूनो भेद तीनोदेवतनमें चारौ वेद पांचो भूत छहौ ऋतु सातौ ऋषि आठौ वसु नवो ग्रह दशहूँ दिशनमें ग्यारहौ महेश औदिनेश बारहौ विलोकि तेरहौ रतन लोकचौदहौ वदनमें॥इति॥

छ०॥ बैठेजोजेवननंदके सँग श्याम औ बलराम भोजन बने कै भाँतिके अब सुनौ तिनके नाम । पापर जलेबी

और पूगी भात उज्ज्वल अति करे ॥ मूंगकी है दालि सुन्दर चनाके व्यंजन धरे ॥

चौपाई-मिश्रीदधिओदन मिश्रितकर । लेत श्याम सुन्दर अपने कर॥ आपनखात नंदमुख नावैं । सो छबि कहत कौन पै आवैं ॥

सोरठा-कोकरिसकैबखान, भाग्ययशोमतिनंदकी
ब्रह्मरह्यो रुचिमान, बालरूप जिनके सदन ॥इति॥

पयछोड़ावन लीला

कवित्त ॥ बैठेश्याम सुन्दर यशोदा गोद आँगनमें अतिहिहरषयुत क्षीरपान करेहैं ॥ बारबार कहति जननि सुनौ लाल मेरे क्षीर नहीं पिवौ हँसत ग्वाल खरेहैं॥ जैहैं दन्त बिगरि अधिक क्षीरपान कीन्हे कवि हरिदास कहैं मातु मुख हेरे हैं। मुख झपि अंचर सो तब नंदलाल रहे देखि मातु छबि अतिमोद मन भरे हैं ।

वृंदावन वर्णन लीला

कवित्त ॥ श्याम सुखधाम वृन्दावनकी ललाम छबि-राम अभिगम प्रतिभाषी सुखदाईकी । वेलिभुजवेलिनकी तरुगरे मेलिनकी वेलन चमेलिनकी महक सुभाईकी ॥ शाखा फल फूलनकी भार भरी झूलनकी यमुनाके कूल-

नकी अनुकूल ताईकी ॥ शोभा मंजु कंजनकी भौंर पुंज गुंजनकी बंजुलके कुंजनकी रंजन सुहाई की ॥इति॥

कर्णछेदन लीला

दोहा–महरि तबहिं इमि नंदसो, कहत भई कर जोर ।
हरिको कन छेदन करहु, होय मनोरथ मोर ॥

छंद–बाजी बधाई नंदके गुरु नारि सब हर्षित भई । प्रथम मुण्डनको कियो फिरि कर्णवेधनविधिलई ॥ सुर निरखि अति मन हर्षसों तब सुमनकी झरि कर दई । धरिसुपारीपानपर तब नारि गुरुभेलीदई दोहा–यहि विधि कन-छेदन कियो, नारि उठीं तब गाइ। पहिराई ब्रजबधुन कहँ, सारी नई मँगाइ ॥

जानुपाणिविहरन लीला

कवित्त ॥ अलख अगुण अज अचल अनादि आदि अलह अनंत अंत जाको न कह्यो परै । पूरण परम पुरु-षोत्तम प्रकाश पाँचौ पावक पुहुमि पौन पाणि परते परै। शिव सनकादि सरस्वती शेष श्रुतिजाहि जैसोहै सोकहि नसकत मति हूं हरै। सोई शिशुधारि रूप यशुदाकी वसु-धामें हँसिहरि धावै भावै जानुपाणि विहरै ॥

अथ शिक्षाबत्तीसी प्रारंभः

श्रीगणेशायनमः ॥दोहा॥ श्रीवल्लभविट्ठल प्रभू, गिरिधर गोविंदराय ॥ बालकृष्णगोकुलरघूयदूश्यामघनसाय ॥१॥ गढ़जेसाणेपैतपै, रावल श्रीरणजीत ॥ यहशिक्षा बत्तीसका, मेहताकरी अजीत ॥२॥ मंत्रीसेवनकीजिये, नृपसेवनके के काज ॥ केवलनृपनहिंसेवियें, सेव्याहुवैअकाज ॥३॥ पहलोभयभगवानको, भयदूजो भुवपाल ॥ तीजोभयलौकीकको, राख्यांविन मतचाल॥४॥ देखइष्ट अरिगुणपरस, पैदा खरचसँभार॥ हरयककारजकीजिये, समयविचारविचार ॥५॥ सबदिनहोयँनएकसे, समझ विचक्षणवात ॥ वरतनऐसीवरतिये, आदि अन्त निभि जात ॥६॥ खावोपीवोखर्चलो, करलोसुकृत काम॥ तन मनधनथिरनहिंरहै, थिररहैं गोविंद नाम॥७॥ नितउद्यम करि आपनो, नितगोविंद गुणगान ॥ नितविद्याअभ्यास करि, नितप्रति बड़ीसुजान ॥८॥ वृथाकालनहिंखोइये, वृथा न बकियेवाद ॥ वृथाननिंदाकीजिये, वृथाशोचउन माद ॥९॥ अतिलालचअतिआलसी, अति कृतघ्नअति

घात ॥ अतिसर्वत्रनकीजिये, अतिहाँसी उत्पात ॥१०॥ नृपरानीअरिचोरजन, कपटकूटचुगलान॥ नदीनखीशृंगी-अगन, यहविश्वासनमान॥११॥ हिकमतकरअरुउदरभर, किसमतपररहुनाहिं ॥ हिकमतमोंकिसमतबसै, करिदेखो जगमाहिं॥१२॥ भावेज्यूंखावोमती, वहतोजगतसुहाय॥ जैसीजहँयुक्तीहुवे, तैसीउक्ति मिलाय ॥ १३ ॥ षटभाषा विद्या चवद, कला बहत्तरजान ॥ विनदेखेसीखेकरे, सुने विनानहिं ज्ञान ॥१४॥ बुद्धिवानबोलीयसे, बिनबोलीन-हिंबुद्धि ॥ वक्तदेखिकैबोलिवो, सबबातनमेंशुद्धि ॥१५॥ सज्जनतोसकड़ाभला, दुर्जन भलाजुदूर ॥ निजजनतोनैडाभला, बुधिजनसदा हुजूर ॥१६॥ वक्तविगारैबड़नकूं, सुधैरै बखतसमाज॥ बिगरसुधरैबखतसे, बखतबड़ीहैराज ॥१७॥ कलौकालसूंदूररह, धन नरधर्मछिपाय ॥ मूरख सचिवनकीजिये, तन कोजतनरखाय ॥१८॥ वसीबखत बखथापनो, विद्यारीतिविवेक ॥ सतसंगतिसंसारमें, इन समाननहिं एक ॥१९॥ तनसुखधनसुखनारि सुख, सुख संततिसुखराज ॥ सुखसुथानकवि मित्रसुख, पुनिपूरबसे साज ॥२०॥ सीरहोय सोईमिलै, बिनासीरनहिंजान ॥ कर्मक्रियाबिन नाखुलै, विधिकेअंकप्रमान ॥२१॥ शीत तपनवर्षासहे, प्रभुइच्छाप्रतिपाल ॥ सर्ववस्तु संग्रहकरो,

प्रापतफलकोकाल ॥२२॥ दिशा विदिशाकूंदेखके, तीखी तरकनिकाल ॥ स्वप्नांतरसोंख्यालहै, कटैआलजंजाल ॥२३॥ थिरता तेविपदाकटै, यतनकियादुखदूर ॥ श्रमसे सुख उतपन्नहै, धर्मसधनहैपूर ॥२४॥ घरणीसे घरध्या-नतू, हटैहानश्रमजान ॥ घरणिबड़ीया जगतमें, ढकैदोष परखान ॥२५॥ जलजमीन केयोगसे, पैदायशजड़होय ॥ जोबोवैसोहीहुवै, मेहनतकरिफलजोय ॥२६॥ रागवशी रसचोजग, चंचलगुणउजलान ॥ धनखोवनकूमनहुवै करौ प्रीतिगणिकान ॥२७॥ रैसींसुखमेंमित्र सब, दुखमेंरहैन कोय ॥ विपतिविडारनकोखरो दुखमेंमंत्रीहोय ॥२८॥ रीतरहेतेयशरहै, गयारीतसबजाय ॥ जनममरणयाजग-तमें, रीत विनानहिंकाय ॥२९॥ सबहीस्वारथकेसगे, पर मारथकोकोय ॥ सोसोस्वारथसेसधै, परमारथ मतखोय ॥३०॥ तजजारीतजतस्करी, तजपर द्रोहविज्ञान ॥ तज कुसंगतजकूटकृत, तज दुर्मतितजहान ॥३१॥ भक्तिकिया भगवत मिलै, शक्तिकिया सिधकाम ॥ उक्तिकिया-आदर मिलै, युक्तिकिया जगनाम ॥३२॥ रखनरसीरख साँचबड़, रखसिहाजररखरीत ॥ क्षमादयारख शीलसत, रखसंतोषसुधप्रीत ॥३३॥ जुरत फुरतअरुसुरतसे ॥ सिध कारजसबहोय ॥ म्हेता अजीतकोकियो, निश्चययहकरि

जोय ॥३४॥ भूलचूकसबसमझकै, करिकविंद्रसुधसोध॥ सुन अजीतकीवीनती, मोमैंनहिंबहुबोध ॥३५॥ शतउ-नीसअट्ठारवै, आश्विनसुदिदशराव ॥ भयो समापतग्रं-थये, करिअजीतसिंहचाव ॥३६॥

इति शिक्षाबत्तीसीमेहताअजीतसिंहकृतसंपूर्णम्

छंदघनाक्षरी॥ छापेहैं सुधाकर विद्याअरु शिक्षाजामें दोहराछत्तीसदूजे छत्तिसप्रमानहै ॥ विपतिविडारिवेको विद्यासोंनऔरकछु संपति सुधारिवेमें शिक्षाबलवानहै॥ कुसँगतिकेनाशिवेके विद्यासांनखड्ग और शिक्षाविनानर-देही पशुके समानहै॥ कहैकविश्रीधर श्रीरणजीतनरेशपै मेहताअजीतसिंहमंत्रीबुद्धिमानहै ॥१॥ कुंडलिया छंद॥ गादीजेसलनगरकी, श्रीरणजीतनरेश॥ राजतअपनेदेशपै, मानौद्वितियदिनेश ॥ मानो द्वितियदिनेश धर्ममर्यादा जानै॥ राजनीतिरस रीतिन्यायअन्यायपिछानै॥ श्रीधर कविताकहै मंत्रिकीबुद्धिअनादी ॥ सबसबसोसबदेशअ-टल श्रीनृपकीगादी ॥२॥दोहा॥ पुष्करछायामध्यहै, पर-शुरामसुखधाम ॥ विप्रसलेमाबादको श्रीधरकवि है नाम ॥३॥

अथ शिवस्तुति प्रारम्भ

टेर ॥ भोलानाथअमलीम्हाराशंकरअमली ॥ बगि-

यामेंभँगियाभुवायरखली ॥ कांईबाडकाशी जीमाकांईजी-
पराग ॥ कांईबाउहरकीपीडीकांई जीकैलाश ॥ भोला०
॥१॥ काशीजीमेंकेसर बोऊंचंदनपराग ॥ हरकीपेड़ीवि-
जयाबोऊंधतुरो कैलास ॥भोला०॥२॥ कांईमाँगेनादियो
जीकाँईजीगणेश ॥ कांईमांगेभोलाशंभूयोगिया केभेस
॥भोला०॥३॥ दूर्वामाँगेनादियोजी मोदकगणेश ॥ विज-
यामांगेभोलोशंभूयोगिया केभेस॥भोला०॥४॥ घोटघोट
नादियोजीछाण तगणेश ॥ भरभरप्यालादेवेगौरा पीवैं
भोलेनाथ ॥ भोला०॥५॥ अक्कड़ाकी रोटीपोऊंधतूराको
साग॥ बिजयाकीतरकारी छिमकूँजीमें भोलानाथ॥भोला०
॥६॥ भूखोमांगेअन्नधन्नराजामांगेरूप ॥ कुष्ठीमांगेनिर्मल
कायाबांछमांगेपूत ॥ भोला०॥७॥ भूखादेताअन्नधन्नरा-
जादेतारूप ॥ कुष्ठीदेतानिर्मलकायाबांझेदेतापूत॥भोला॥
॥ ८ ॥ नाचनाचनांदियोजीनाचजा गणेश ॥ नाचम्हारो
भोलाशंभूयोगियाकेभेश ॥भोला०॥९॥ घोटतगणेशबा-
बोछाण भैरूंनाथ॥ भरभर प्यालापावोम्हाराशंभूभोला-
नाथ॥ भोलानाथ अमलीम्हाराशंकरअमली ॥ब०॥१०॥

इति शिवस्तुति संपूर्ण

अथ श्रीधरकृतकुण्डलिया

मूसाबिल्लीसोंकहै, सुनमंजारीबात॥ डरतीरहियोबापड़ी,

नहिंतोमारूंलात । नहिंतोमारूंलातहाथपगहोसीलूली ॥ वहतेरादिनगयाभरोसेभटकेभूली ॥ कहश्रीधरकविरायहु वोइकडंक्याधूसो ॥ समयबड़ोबलवानकहैबिल्लीसोंमूसो ॥१॥ छालीबोली सिंहसोंसुनहोवनकेराव॥ सिंहभोगस्यालाभषैकीजैकौनउपाय ॥ कीजैकोनउपावतेजसतपुरुषा नाहीं । पूजनलगैअपूजपूजकहुँदेखेनाहीं ॥ कह श्रीधरकबिरायकामकरच्याल्योल्याली ॥ समयबड़ोबलवानसिंह सोंबोलीछाली ॥ २ ॥ जोरूखाविंदसोंकहै, घूंसासोंघमकाय ॥ गुपचुपघरमेंघुसरहो, घीसोंरोटीखाय ॥ घीसों रोटीखायरहोघुस मेरेपाछे ॥ मैंपौढूँगीसेजपरोतुमपौंरी नीचे॥ कह श्रीधरकबिरायजणैखुबसूरतछोरू ॥ समयबड़ोबलवानलड़ैखाविंदसोंजोरू ॥३॥ दोहा॥ श्रीधरसांची बातसों, जोकोइराखतहेत॥ समयपायकैनीपजै, ज्योंकिसानकोखेत ॥४॥ कुंडलिया॥ मानेलोचनयुगसबै, जानतहैनरनार ॥ त्रय लोचनविद्याकही, ताकीकरौविचार ॥ ताकोकरोविचार बालपनविद्यासीखो॥ मानुषदेहअमोल बोलविद्याकोनीको ॥ श्रीधरकविताकहैसभामें आदर आनैं॥ जाकेविद्याकंठताहिकोराजामानै ॥५॥ राजासीखै नीतिको परजाकेहितकाज॥ मंत्रीसीखेमित्रता, मानैमोटा राज ॥ मानैमोटाराजकाजविद्यासोंपावै ॥ हुंडीलिखैअ-

पारसाहपद विद्यालावै ॥ श्रीधरकविताकहैसंपदामिलसी
ताजा ॥ विद्यापढ़ोसुजानमानसन्मानैराजा ॥ जानैपौ-
रुषआपके, नहींबापकोकाम ॥ बलि बंधनकेकारणे, वामन
पायोनाम । वामनपायोनामरामनिःक्षत्रीकीनी ॥ रघुवर
रावणमारभक्तकोलंकादीनी । श्रीधरकविताकहैगुणीसँग
आदरआनै । करैकृष्णकोयादपिताकोकोइनजानै ॥७॥
पांचौकथापढ़ाइये, पंचाख्यानविचार ॥ राजनीतिजाको-
कही, हितउपदेशअपार ॥ हितउपदेशअपारबाकपुनिकंठा
कीनी ॥ सुखपावैंसंतानसभामेंबातनवीनी ॥ श्रीधरकवि-
ताकहै पढ़ै सोई नरसांचो ॥ चतुरकरै सब काज पढ़ै जो
नीती पांचो ॥८॥ जामें मित्र मिलापहै' मित्रलाभ सोजान ॥
तामेंछूटैमित्रता, सुहृदभेदसोमान ॥ सुहृदभेदसोमान
तीसरीविग्रहजानो ॥ युद्धकरावनरीतिपरस्परश्रद्धामानों ॥
श्रीधरकविताकहैसंधिचौथो मिलिजानौ ॥ पांचौलब्ध-
प्रनाशमिलैफिरपाछी भानौ ॥९॥ दोहा ॥ श्रीधरशोभाज-
गतकी, विद्यानीतिविशेष ॥ स्वारथपरमारथसबै, विद्या
विनयविवेक ॥१०॥

इति श्रीधरकृतकुण्डलिया समाप्त

राधाजूकी प्रथममिलन लीला

कवित्त–खरक निकास श्याम सामुहें निहारत अचानकचखत चकचौंधीसीचमकिकै । गोरीसी ठगौरीसी निपट बैस भोरी भोरी कीरतिकुँवरि कोरि आवति ठमकिकै ॥ पागि गये प्रेमकी पगनिहगचारि होत लागिये मन दौरि दोऊके झमकिकै । जानिकै पुरानी प्रीति नेह नयो मानि घरजानको चहत चित चाहु यों चमकिकै ॥
दोहा–बतराने दोउ परसपर, अपनेहीं चित चाय ।
आवो मिलि सँग खेलिहैं, यों कहि भयो बिदाय॥

ब्रह्माजीको स्तुति

कवित्त–मायनको गायनको चायनसों सुख देके बरस बितायो इहि भायन जबै हरी । तब सुधि कीन्ही विधिसुधि बुधि हीनी जानि मतिहि मलिन मानि दीनता हिये धरी॥ शोक डर छायो निज लोक तजिधा यो बालवत्स संग लायो ब्रज आयोरज आचरी । जोरीकरढोरि शिर कोटिक निहारि करि बकशो किशोर कहि खोरि मैं करी खरी ॥

भजन कीर्त्तन

सीतापति रामचद्र रघुपति रघुराई । दशरथ सुत रामचन्द्र नंदके कन्हाई ॥ टेक ॥ रसनारस नाम लेत संतनको दरस देत विहँसत मुखचन्द्र मंद सुन्दर सुख-

दाई ॥ १ ॥ दशनदमक चतुरचालऐन वैनहग विशाल भ्रुकुटी मनो अनल पाइ नासिका सुहाई ॥ २ ॥ केशरको तिलक भाल मानो रवि प्रातकाल श्रवण कुण्डल झलमलात रतिपति छबि छाई । मोतिनकी गले माल तारागण करविहार मानोगिरि शिखरपैंड सुरसरि चलिआई ॥ ४ ॥ सांवर तिरभंगअंग काछनिकर कसि निषंग मानो मयाकी छबि आपु बनि आई ॥५॥ सुर नर मुनि सकल देव शिव विरंचि करत सेव कीरति ब्रह्माण्ड खंड तिहूँ लोक गाई ॥ ६ ॥ सखासहित सरयुतीर बैठे रघुवंश वीर हरषि निरखि तुलसिदास चरणन रजपाई ॥ ७ ॥

श्रीवेंकटेशाय नमः

अथ श्रीरामचन्द्रजी की बारामासी

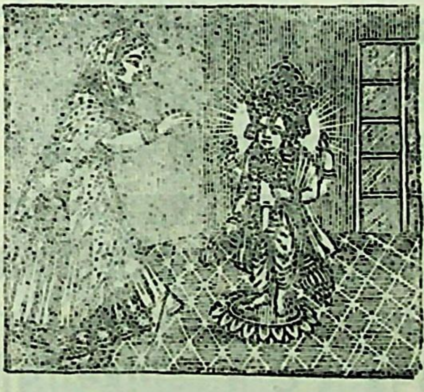

चैत्रअयोध्याजनमेरीराम। चन्दनसोंलिपवायेरीधाम॥
गजमोतियनकोचौकपुराय । सोनेकेकलशदियेभरवाय ॥

घरेघटमंदिर। पठयेतुमनारीबैरिनिवनबालकमोरे॥ वैशाख
मासऋतुग्रीषमलागि। चलतपवनमानोबरतआग॥ जैसे
जलबिनुतलफतमीन। सोगतिहमरीकैकयीनेकीन॥ दिये
दुखदारुण॥पठये०॥ ज्येष्ठ मासलुअलागतअंग। राम
लषणऔरसीतासंग॥ रामचन्द्रपदकमलसमान। परच
तधरतीऔरअसमान॥ चलैंमगकै॰॥ पठये०॥ ३॥
आषाढ़मासघनगर्जतघोर। रटतपपीहाकुहकतमोर॥
ठाढ़ीकौशल्याअवधपुरधाम। भीजतहैंहैंलषणसियराम॥
खड़ेतरुवरतर॥पठये०॥४॥ सावनमेंसरसानेरीनीर। कैसे
धरैंकौशल्याधीर॥ छोटा छोटीबूँदनबरसतनीर। भीजत-
हैंहैंसियारघुवीर झमकझड़लागी॥पठये०॥ ५॥ भादों-
मेंबरषैनीरअपार। घरअपनेसबहीसंसार॥ गुंजतगुंजिल-
फिरतभुजंग। रामलषणऔरसीतासंग॥ रैनिअंधियारी॥
॥पठये०॥६॥ लागीरीसखी मासकुँवार। धरम करतस-
बहीसंसार॥ जोघरहोतेलषणसियराम। विप्रजिमावती
देतीमैंदान॥ थालभरमोती॥पठये०॥७॥ लागीरी सखी-
कार्तिकमास। उठतकलेजेमेंदुखकीफांस॥ घरघर दीपक-
जोवत नारि॥ मेरीअयोध्यापरीअँधियारि॥ करी-
कैकेयी॥पठये०॥८॥ अगहनमेंसखिकरतशृंगार।
कपड़ासिमातीमैंसोनेकेतार॥ पटपीतांबरकुलयकमान।
शिरमेंचीरजरदसीपान॥ गलेवैजंती॥ पठये०॥ ९॥

लागोरीसखीपूषजोमास । गैनिभई जैसेखांड़ेकीधार ॥
कुशआसनकैसे पौढ़ेंगे राम । कैसेकरैंवनमेंविश्राम ॥
भोजनमजरीके ॥पठये०॥१०॥ माहमासऋतुफूलेवसंत ।
कैसेजियोंरी विनाभगवंत ॥ मेरीअयोध्याकेशिरकेमौर ।
ठाढ़ेभरतजीढोरतचौंर ॥ वसंतकरोरी ॥ पठये० ॥ ११ ॥
फागुनरंगरच्योसबकोय । चंदनअतरसुगंधिततोय ॥ ठाढ़े
भरतजी घोरैंअबीर । कापैछिड़केंबिनारघुवीर ॥ मैंकैसी
करोंरी ॥ पठये० ॥ १२ ॥ जोगावैयहबारहमाससोपावै
वैकुंठनिवास । कहतभवानीअवधपुरधाम ॥ बनसेआये
लषणसियराम । मिलेकैकेयीसों ॥ पठयेतुमना० ॥१३॥

इति श्रीरामचन्द्रजीकीबारामासीसंपूर्ण

अथ भरतजीकी बारामासी

श्री—चैत्रपीछिलेपाखरामनौमीकोजन्मलियो । अवध

पुरीसुखधामसखिनमिलिमंगलचारकियो ॥ खबरिजब दशरथनेपाई । दियेदानगजवाजिगाइदिनथोरेकीब्याई ॥ सभासबप्रफुलितह्वैआई । कर्मलेखनहिंमिटैकरोकोइलाख नचतुराई ॥१॥ लागतहीवैशाखकैकेयीबावरिकरिडारी । धिकजीवनधिक्कारभईजबतुमसीमहतारी ॥ दुखतैनेनगर कोदीनो। तीनलोककेनाथरामतैंने बन बासीकीनो॥ कूर- मतिकैसीबनिआई । कर्म लेखनहिंमिटै० ॥ २ ॥ ज्येष्ठ पंचमिलिकहीभरतको गादीबैठारौ । भरतधरतकाननपर हाथनाथमोहिगरदनक्योमारौ॥ सरैनहिंइनबातनकाजा । तीनलोककेनाथरामवेअयोध्याकेराजा॥बातयहसबकेमन भाई ।कर्मलेखनहिंमिटै० ॥ ३॥ आषाढ़आशाराममिल- नकीमनमेंलागिरही । रामकौनवनहमैंबतावौभरतजुबात कही ॥ नगरकेनरअरुसबनारी । रथढोलागजवाजिभीर भइभरतसंगत्यारी ॥ नदीजैसेसागरकूंधाई । कर्मलेख नहिंमिटै० ॥ ४ ॥ सावनशृंगबेरपुरपहुँचेभीरभईभारी । भीलनकटकजोरिदललीनेलड़नेकीत्यारी॥ भरतसेपूछिकै रारिकरौ। रामलषणसियकाजतीरगंगाकेजूझमरौ॥खबर यहभरतहुनेपाई ॥ कर्मले० ॥ भादौंभरतभीलसेभेंटेभक्त जानिमनमें । कंदमूलफलतोरिभीलननेभेंटकरीवनमें ॥ भीलजबअगुवाकरिलीनो। भरद्वाजप्रयागआनिकेदरशन

देदीनो ॥ प्रयागकीदुनियासबधाई ॥ कर्म० ॥ ६ ॥ कुवांरकरीमहमानीमुनीनेपूंछीकुशलाता।दोउकरजोरेदेति परिक्रमाकौशल्यामाता ॥ आजमेरोजीवनसफलभयो । इतनीबातसु गीमुनिनेजबआशिर्वाददियो ॥ भरतकी मातासमुझाई ॥ कर्म० ॥७॥ कार्तिककूचप्रयागसेकीनो चित्रकूटआये। वल्कलवचीर शिरशटाजूटसियरामलखण पाये॥ भरतजबचरणनजायपरे । भरतउठायरामउरलाये नयननननीरभरे ॥ भरततुमभाईसुखदाई ॥ कर्म० ॥ अग हनवारंवारभरतकोरघुवरसमुझावैं। भरतउलटिघरेहुराज्य तुमकरौअयोध्यामें॥लोगसबहींसुखपावेंगे। भरतकोऐसे समुझाई ॥ कर्मरेखनहिंमिटै० ॥ ९ ॥ पूसमासुसियराम लषणकेजुरिगईभीरघनी । जनकवशिष्ठगुरूसमुझावैंकहैं अपनीअपनी ॥ रामआपश्रीचरणखडाऊंभरतहिदेदीनी। उलटघरजाउभरतभाई ॥ कर्म० ॥१०॥ माहमहीनामानि रामनेसुखपायोमनमें । जनकजनकपुरकोपहुँचायोभरत अयोध्यामें ॥ खडाऊँगादीधरिदीनी । रामचन्द्रतेकठिन तपस्याभरहुनेकीनी ॥ बड़ाई याहीमेंपाई । कर्मलेखनहिं मिटै० ॥ ११ ॥ फागुनफेरहरीसीताजबरावणवशकीनो। रावणमारोरामराज्यजुविभीषणकोदीनो ॥ जीतिकैअवध पुरीआये। शिवसनकादिआदिब्रह्मादिकदरशनकोधाये॥

रामकूँगादीठहगाई।कर्मलेखनहिंमिटैकरैकोइलाखनचतुराई ॥१२॥ नब्बेसाललोंदकीभादौंअगहनगहनपरचो। बांस बरेलीकेलालदासने रामनामउच्चरचो ॥ भरतकीयहबारा मासा। गावैंसुनैंपरमपदपावैंकटैयमकीफांसी ॥ वेदमिलि ऐसेहीगाई।कर्मलेखनहिंमिटैकरैकोइलाखनचतुराई॥१३॥

इति श्रीभरतजीकीबारहमासी संपूर्ण

अथ वेणीमाधवजीकी बारहमासी

कार्त्तिककिलोलकरैं सबसखिया राधाविचारकरैं मन मेरे। माधौपियाकोआनिमिलावौ नाहींतोप्राणतजौंछिन मेरे। हमकोछांड़िचलेबनमाधौराधाशोचकरैंमनमेरे॥१॥ अगहनगेंदबनायसांवरेजायखेलैंतटयमुनाकेरे। खेलतगेंद गिरोयमुनामेंकालीनागनाथ्योछिनमेरे ॥ हमको० ॥२॥ पूसमासहमसेछलकीनो आचलेसैंयांमधुबनकूं। तुमनंद लालजनमकेकपटी हमसोंकपटकियोसनमें ॥हम०॥३॥ माहमासपियाजाड़ोलगतहैनींदनआवैमेरेनयनकूं। हमको योगिनिकीनीमाधोजीघरघरअलखजगावनकूं ॥ह०॥४॥ फागुनरंगबनायसांवरेजायखेलैसंगकुबिजाकेफेंटगुलाल- हाथ पिचकारीमारतहैंतकि२घूंघटमें॥ह०॥५॥ चैतमास फूलेबनटेसूऊधोआयेसमुझावनको॥ह०॥६॥ मास वैशा- खबैसमेरीबारीआपनआयेसइयांमधुवनमें। ऋतुग्रीषम अरुबिरहसतावैविरहकीहूकलगीतनमें ॥ह०॥७॥ ज्येठमें

ज्वालाफवैतनगेरेऊधोकहियोघरआवनकी। एकतोअकेली
दूजे विरहसतावत आयगई ऋतुबरषाकी ॥ ह० ॥ ८ ॥
लागेअषाढघुमड़ि आयेबदरा बिजलीचमके मेरेआंगनमें ।
चौंकिचौंकिचहुँओरनिहारोजैसेमीनफिरैजलमें ॥ह०॥९॥
सावन स्वामीहमसे छलकीन्होप्रीतिकरीजायकुबिजासे ।
अहोनँदलालप्राणकैसेराखूं नहीं आये श्यामवृंदावनमें
॥ह०॥॥१०॥ भादौंभवननींदनहिंआवैमोरवाबोलेयाहीम-
धुवनमें। कोयलहैमैवनवनढूँढूँसूखेतालवृन्दावनके॥११॥
बारहमासनिर्मलभयेचन्दा गोरीसोवैअपनेअंगनमें । सूर
दासतबआनमिलेहरिसुखीभईराधामनमें ॥ हमकोछांड़
चलेबेनीमाधौराधाशोककरैमनमेरे ॥ १२ ॥

इति वेणीमाधवजीकी बारहमासी सपूर्णम्

श्रीकृष्णायनमः

अथ श्रीकृष्णचन्द्रजीकी बारहमासी

प्रथममहीनाआषाढ़जोलागावर्षाऋतुआई ॥ पीतम

हमरेश्यामसलोनेपातीभिजवाई॥ कहौवे कैसेनहिंआये॥ ऐसेचतुरसुजानश्यामचेरीनेबिलमाये॥ डालगयेजादूकी फांसी॥ श्री राधागोपी त्यागकरा घरवारीकुबिजादासी॥१॥ सावनमेंमन भावनहमतौदामनसोंलागी॥ जबतोहमसों प्रीति बढ़ाहरिअबकाहेत्यागी॥ सुनौतुमऊधोमेरीसों॥ लाजशरमकिनगईप्रीतिजबकीनीचेरीसों॥ नहीं मोहिंआ-वतिहैहांसी॥ श्रीरा० ॥२॥ भादौं रैनि अँधियारीबोले प्रीतमकीप्यारी॥ अन्ननभावैनींद नआवैसंकटअतिभारी॥ मिटावैसंकटक्योंऊधो॥ ऐसेकुटिलकुजातश्यामकोजा-नतिहौसूधो॥ मारि गयेविरहकीगांसी॥श्रीरा०॥ ॥३॥ लागतक्वारकनागत आयेसबकोइधर्मकरै॥ मैंभीधर्मकरौंगी जबहौंप्रीतमनजरपरै॥ मिलावैहैकोइ ऐसा॥ लैअकरगयो मथुराकोकर्गयेरीकैसा॥ बुद्धिवाकीनेअभिमानी॥श्रीरा० ॥४॥ कार्तिक कौतुक कियो कृष्णने हम सबकोउ जानी॥ आखर जात अहीरश्यामकेकुबिजा मनमानी॥ कंसकी है आखिरचेरी॥ याहीतेदिनरैनआँखमेरीफरकतहैडेरी॥ लगीमेरेजियकोचौरासी॥श्रीरा०॥५॥ अगहनमेंमनचम-कनलागाधड़कनिहैछाती॥ उद्धवहाथसँदेशाभेजाबाँचौ रीपाती॥ लिखौकुछतुमभीबालमकूं॥ जोनमिलोगेवेगि जियतनहिंपावोगेहमकूं॥ हमारेजियकेसुखराशी॥श्रीरा०

॥६॥ पूषमासमेंचलेगये मेरेप्रीतमसेप्यारे ॥ कान्ह लागे दूतकरीहमनयन सेन्यारेहमैंयहमदनसतावतहैं ॥ जियके जारनकाज सँदेशो ऊधोलावतहै ॥ खबरतुमलीजोअवि नाशी ॥श्रीरा० ॥७॥ माहनाहकेडाहपिया तुमछोड़ीहम जानी ॥ रोवतिउठतिकराहिबातसब ऊधोनेजानी ॥ ज्ञान कीबातेंदरशाई ॥ कृष्णहिदेहुँ मिलायलायसबगोपीसमु- झाई ॥ झूठसबहीकेमन भासी ॥श्रीरा०॥८॥ फागुनफीको लगैरैनिदिनहोयरहीविसमें ॥ पातीबाँचतक्षेमसखीयक योंबोलीरिसमें ॥ लगेअबसाहकरनचोरी ॥ हमरेजियत कान्हकितबादीसँगखेलेंहोरी ॥ खबरमेरीलीजैकैलाशी ॥श्रीरा०॥९॥ चैतचितामें जरौंबरौं मैं गिरती कुइयाँमें ॥ कहियो मदन गोपालसंगकुबिजाकूलेआमें ॥ कछू इनसों तनको डरना ॥ हमगोपी दरशनकी प्यासी और नहीं क- रना ॥ खबरमेरीलें जैब्रजवासी ॥ श्रीरा०॥१०॥ लागत हीवैशाखलाखसबहीकेघरआई ॥ ऊधोजीनेजायकृष्णसों ऐसेसमुझाई॥ पैजतुमहकनाहकरोपी ॥ हाड़माँसगलिगये बावरी ह्वैगईसबगोपी ॥ लेहिंगीकरवटहूकासी ॥ श्रीरा० ॥११॥ ज्येष्ठमासमेंमिलेकृष्णजबराधागोपीसे ॥ ब्रजवा- सिनआनंदभयोछूटेसबबाधासे ॥ कृष्ण की यहबारह-

मासी ॥ पढ़ैसुनैवैकुण्ठसिधागेछूटैयम कीफांसी ॥ साँच यह मेरे मनमासी ॥श्रीरा०॥१२॥

इति श्रीकृष्णचन्द्रकी बारहमासी संपूर्ण

श्रीरामचन्द्रायनम:

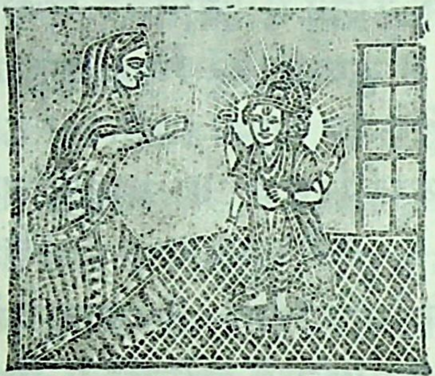

अथ कौशल्याजीकी बारहमासी

कार्तिककूचप्रयागसेकीनो कौशल्या शोचकरैं मनमेरे। रामलषणसियावनकूंसिधागेदशरथप्राणतजेघरमेरे ॥ दरशनदेवोमेरेप्राणपियागेतुमविनकोईनहींऔरहमारे ॥ १ ॥ अगहनगैलचलौजबप्यागेदरदहोतमोरेतनमेरे।चलतचलत जबपैयांपिरानेकोईनतुम्हारौबाबनमेरे ॥ दर० ॥२॥ पूष भरतजबचलेलेनकोसौतिनदाहभयोमनमेरे। मैंजानीरघुवर घरआयेहैंफूलीनमाऊँमोनयननमेरे ॥ दरशन० ॥३॥ माहैमासभरतफिरआयेहूकउठीमेरेउरमेरे। तलफतिफिरौं

अयोध्यामाहींजैसेमीनफिरैजलमेंरे ॥ दरशन० ॥४॥ फागुन
फिरैंबैठेवनमांहींसीताहरनसुनाजबमैंरे । रामलषणअबढूँढ़त
होंयगेवैदेहीकोकाननमेंरे ॥ दरशन० ॥५॥ चैतमेंचिंताकरैं
भरतजाकेसेराज्यकहूं अबमैंरे। बिनरघुवरमेरोजीवननाहीमैं
भीप्राणतजौंछिनमेंरे ॥ दर० ॥६॥ मासबैशाखभरतनहीं
मानोशोचभयोसबनगरीमें रे । रामलषणप्रभुसीयसमेता
ध्यानधरौसबनिजउरमेंरे ॥दरश०॥७॥ जेठमिलाप भयो-
सुग्रीवावालीप्राणहतेशरसे रे । वालीमारिशैलफिरछाये
तारविकलभईमन मेंरे ॥ दर० ॥८॥ लागो आषाढ़घुमड़
रहेबदराशोचभयोअबमोमनमैं रे । विनमोरेलालबागसब
सूनेशोकपड़ोसबनगरीमैंरे ॥ दर० ॥ ९ ॥ सावनघनगर
जतचहूँओरारामलषणमोरेपर्वतपैरे । बिनसियसंगशोच
उरहोयहैमेरेहूप्राणधरेउनमैं रे ॥ दर० ॥ १० ॥ भादौंमें
बंदरसबधायेपूरवपश्चिमदक्षिणमैंरे। कूदसमुद्रहनुमानसि-
धारेसीताखबरदईछिनमैं रे ॥ दर० ॥ ११ ॥ क्वारत्रिकूट
लंकजबजारीरावणप्राणबसे उनमैं रे । रावणमारिरामघर
आयेआनँदबधाईमोगृहमैं रे ॥ दर० ॥ १२ ॥ देवीसिंह
सियारघुवरकोध्यानधरैघरबाहरमैं रे । तुमविनस्वामीकोई
नहीं मेरापांयधरौअबमेरेशिरपैरे ॥ दर० ॥ १३ ॥

इति श्रीकौशल्याजीकी बारहमासी संपूर्ण

अथ युगलकिशोरजीकीबारहमासी

श्रीगणेशायनमः॥ अषाढ़आशाकरौजुपूगणकरोकृष्ण फेरी। कालीघटाघुमड़िचढ़िछाईपवनचलैसीरी॥ बिजली चमकेहियरालरजेधीरजनहिंधरती। बिनानीरजैसेमीनतलफैदुखियादुखभरती॥१॥ सावनसमझपरीमनमेरेआवेंगे बलमा। सादीकरौपियाघरआवैंआईऋतुबामा॥ योबन खोलधरौंउनआगेअन्तरनहिंरखना॥ सादीकरौंपियाघर आयेवेरसकीबतियां॥२॥ भादौंगहरगँभीरपियानहिआये रीमाई। सूनीसेजतड़फरहिकामिनिविरहविथाछाई॥ जल थलनीरभरचोनदियनमेंचातकमरैप्यासे। अपनेसुखके लोगबहुतहैंकुटुंबमासुससुरे॥३॥ क्वाँरकरारकियेसखियनसे नहिंआयेबलमा। मैंनिरभागीत्यागिपियापरदेशगयेरामा॥ परदेशिनकाबुरामामलासुनिफाटैछाती॥४॥ वर्षागईशरदऋतुआईनिर्मलभयेचन्दा। कात्तिकसुन्दरखिलीचांदनीडरपैजीमेरा॥ प्रीतममेरेबनेलहरियाओछीचंपकली। अबकेबिछुड़ेराममिलावैंज्योंबरसेमोती॥५॥ मृगशिरभाग्यभरीनखशिखसोंशीशफूलटीका। काहिसखींरापहिरिदिखाऊँपियबिनसबफीका॥६॥ पूसपिया परदेशगयेकछुखबरनहींपाई। पंडितपूछौंऔरज्योतिषी कहांबसेसाँई॥ महादेवपूजाबलपाऊँमहादेवदेवा॥ संभु

सहायकरौनहमारी पूरीलच्छविचारी ॥ ७ ॥ माहमास
भोगीऋतुआईजोकाहूपैबनआवै। तोसकतकियासौडनि-
हालोपीवाकंठलगावै ॥ ८ ॥ शरदीगईगर्मऋतुआईभइ
वसन्तकीत्यारी। लालगुलालफेटमेंबांध्योरंगभरीहैझरी॥
फागुनफागसुहागनखेलैंपियाभिजोवैंप्यारी। कहाकरोंकछु
वशनहिंमेरोडफसुनआंसूजारी ॥९॥ चैतैंचितालगीजिया
मेंफूलोवनराई । सुन्दरफूलखिले मधुवनमें मैं एकलिमुर
झाई ॥ १० ॥ भरवैशाखलालभयेकसूश्यामवरणगोरी ।
मोहिपियानेकछुनहिंकीनोसोमोहबततोरी ॥ ११ ॥ जेठ
मासमेंधूपपड़ैहैलगैकठिनभारी । ऐसेमेंकोइ गैलचलेगा-
छांहकहूंगहरी ॥ १२ ॥ जगन्नाथकीबारहमासीगावैयुगल
किशोरी। शीखैसुनैपरमपदपावैऔरकटैयमडोरी ॥१३॥

इति श्रीयुगलकिशोरजीकी बारहमासी संपूर्ण

अथ गोपीबलदाऊजीकी बारहमासी

॥ श्रीः ॥ जीबलवीरगयेजबतेहरिआपनआयेनपातीप-
ठाई। छलबलकीन्होंहरिबहुतकहमसोंजायबसेहैंसमुद्रतट-
माहीं॥ जपतपनेमकियेहरिसोंहममाघन्हायहरीबरपाये ॥१॥
फागुनफागखेलैंहरिहमसों कीन्हींप्रीतिकुबजामनमानी ।
मामाकंसमधुपुरीमासधरिदुष्टनकोप्रभुमारिगिराई ॥२॥
चैत्ररुक्मिणीपत्रलिखिभेजो देखतपत्रकुण्डिनपुरजाई ।

रुक्मिणिप्रिय अनिलागी हरीकूं प्रेमप्रीतिकछुकहीनजाई॥
॥ ३ ॥ मणि के काजगयेते शाखमोंजाम्बवंतसोंकीन्ह
लड़ाई । जाम्बवतीभेंटकरीहरि के तब सब संकोच दीन
मिटाई ॥४॥ ज्येष्ठ मास प्रभुगये श्रुतदेवके विप्रभयेमनको
हरषाई । बहुलाश्वनामराजसुखदीन्हों भक्तनके घरबजत
बधाई॥५॥ आषाढ़कामिनीसुखबहुदीनों आठोपहर त्रिया-
करेंसेवकाई । गर्जतबादलचमकतबिजलीदादुर शोरकरैं
अधिकाई ॥ ६ ॥ श्रावणबूँदबरसतरुमझुमसत्यभामा-
संगरहेलुभाई । झूलतरंगहिंडोला मोहनप्रेमतियनके-
कहियनजाई ॥ ७ ॥ भादौंकोयलतबनमेंपीवपीवपपिहा-
रटलाई । उन्नतकामसतावतनिशिदिन हरिविनजियकैसे-
समझाई॥८॥ क्वाँरअगस्त्यजलसोखलियोहैपंथ चलेजो-
मनुजसुखपाई । पौंडककोवासुदेवसिधारे काशिपुरीक्षण-
मांहिजराई ॥९॥ कार्तिकदीपउजरैं सबसखियांघरघर-
अनँदबजतबधाई । सोलाहजारसखियासँग रमतेएकसौ-
आठ प्रभुके मनभाई ॥१०॥ अगहनतिलकअनिरुद्धको-
दीन्होंसौंप आप अपनीप्रभुताई। राजपाटसबहीसुखदीन्हों
आनँदमंगलहर्षबधाई ॥११॥ पूषहरीहमसोंजद भेंटेकुरु-
क्षेत्रकोग्रहणनहाई । बारबारमनहर्ष भयोअतिकिंकरप्रभु-
गुणकरतबड़ाई ॥ १२ ॥

इति किंकरप्रभुकृतगोपीबलदाऊजीकी बारहमासी संपूर्ण

कुबरीसंगविहारवर्णबारहमासी

श्रीगणेशायनमः ॥टेर॥ कृष्णअकेलेगयेद्वारकाछाँड़-गयेसबब्रजबाला। कुबजादासीकंसरायकीमोहनपरजादू-डाला॥ आषाढ़आशाकहूंजितुम्हारीनारीअकेलीकुंजनमें। हमकूंछांड़िबसेजायकुब्जासंगमाधोवनमें ॥ दासीसेती-प्रीतिलगाईमोहलियावैरिनछिनमें। सौतहमारीजन्मकी-वैरिनबिलमाया हरिनयननमें॥ पतियांलिखती मतलब-गरजीकैसेलिखूंदेगयेटाला॥कुबजा०॥१॥सावनआवनकहगये सजनहमसेमोहनवचनकिया। मैंखड़ादेखतीराहसखीरी-अजहुँनआयेकृष्णपिया॥ तीजनकोत्यवहारनगरमेंसब-सखियांश्रृंगार किया। काजलटीकी दियेशीशपर बस्तर-ओढ़नयानया॥ श्यामबिनामेरीसेजअलूनीबागनमेंझूला-डाला॥कुब०॥२॥ भादोंमहिनेगणेशचौथहैसबसखियाँ-गणपतिपूजैं। धूपदीपसिंदूरपुष्पनैवेद्यचढ़ैंलपटैंगुंजैं॥हाथ जोड़करखड़ीजीराधिकानाथअरजमैंकहूंतुजे ॥ श्याम-हमारामिलायदेवो बिनमोहनकछुनासूजै॥ इतनाकारज-सारोगजानन ऋद्धिसिद्धिकेकरणेवाले ॥ कुब० ॥ ३ ॥ आसोजमहीनेदेवीअंबिकाराधापूजैअपनीगरज। हाथ-जोड़करकहूंजिविनतीमातामोरीसुनोअरज ॥ पियागये-

परदेशद्वारका पिवकारणहुईपलीजरद । पीवपीवकरती-रैनदिनयेतोमेरेबड़ादरद ॥ इतनाकारजसारोजीअंबिका भेंटचढ़ाऊंछत्तरमाला ॥ कुब० ॥४॥ कार्तिकउत्तमबड़ामासहैसबसखियांकार्तिकन्हावैं।बडेसबेरेउठकरहरिमंदिर हरियशगावैं॥दुलैमहलअरुघरघरमंदिरआजदिवालीदरशावैं। पूजैंलक्ष्मीनारीनरपतिव्रतासबशिरनावैं ॥ श्यामबिनामेरीसेजअलूनी औरजगतमेंउजियाला ॥कुब०॥५॥ मगशिरमेंमोहनघरनाहीं सोडगिदवाभरवाती । मैंतेरेवास्तेरेसमीपलँगबिछूनाकरवाती ॥ आपबिगरमैंसोऊंजी-अकेलीसूनीसेजफटैछाती। दिलअपनेकूंशोचकै.लाखजतन करसमझाती ॥ डालगलेमेंफांसिगयेब्रजवासिबतावोहम कोलाला ॥ कुब० ॥ ६ ॥ पौषरोष मैंकहूंजिकृष्णपर-इसऋतुमेंआयाहीं ॥ मरीठंढकीनींद नहीं आवैमुझे-सेजमाहीं ॥ जाडानेमोयबहुतसतायारेकामनेडसखाई।॥मैझुरझुरपिंजरहुईआयचेहरेपरस्याईछाई । ज्यूंज्यूं यादमोयआवैहृदयमेंत्योंबदनपड़ैकाला ॥ कुब० ॥ ७॥ माघमहीनेवसंतपंचमीजोघरहोतामेराकंत। सबसखियनमें खेलतीखूबमचातीआजवसंतमैंखेलनकोकैसेजाऊंनहींमिले रीमुझकोकंत॥दिलअपनेमेंशोचकरबैठरहीमैंआपनिचंत । चैननहींदिनरैकसांवरादरनद्योमुरलीवाला ॥ कुब० ॥८॥

फागुनमें मोहन घरनाहीं फागपियाबिन लागी अगन।
गोराबदनमें बुझतीनाहीं आयकरो कोइ कोड़जतन॥
संगकीसहेलीबनिअलबेली होरी खेलेसंगसजन। श्याम
हमारा जायकर आप लगाइ कुबजासेलगन॥ फागुन
आगलगीजी बदन बिच तनके बीच उठी ज्वाला। कुब०
॥९॥ चैत्रमहीना लग्यो सखरीसब सखियांपूजै गणिगोर।
उनका बालम ल्यावसीहरीहरीदूबजी गुलातोर॥ मैंभी
पूजूंभाइगवरजाबेगिमिलावोमोहनचितचोर। गयेद्वारका
प्रीतिकरकुबजासोंहोगयेकठोर ॥ इतनोकारज करोजि-
गवरजा नहिंतो हाथलेऊं माला॥ कुब०॥१०॥ लग्या
मासवैशाखग्यारवांग्रीष्मऋतुआईहेली। विनाश्यामके
वस्त्रसबत्यागमलेडालूंसेली॥ कितोबारवांमासबीचआवेंगे
कृष्णमेरीजोअली। करकैयोगिनकाभेषजा यढूँढूँगीकृष्णकूं
गलीगली॥यहीनेममैंलियाजीवबिचराखोपतमुरलीवाला
॥कुब०॥११॥ ज्येष्ठमासमेंपड़ैधूपलूलागैंअंगमेराजी-
बले। बेगिपधारोआयसाँवरालपटावोमोयआयगले॥
बीतेबारामासआगयोअधिकमासआगेज्योंभले।लागे जो
फरकने अंगसबभुजानेत्रसुरवामचले॥ यहीशकुनपरमिलैं
कृष्णबांटूज्योंबधाईसबब्रजवाला ॥कुब०॥१२॥ अधिक

महीनेकृष्णपधारे राधेकूंदियादरशन । कसअंगियादीजो-टूटकर खुशीहुई मनमेंपरसन ॥ श्यामपधारेआजसखीरी सबब्रज होरहीहैधनधन । बजैबधाईहोरहीखुशवक्तीसबही केमन ॥ प्रेमसागरमेंअमृतबरसैतनुकीतृषामिटीज्वाला ॥ कुब० ॥ १३ ॥

इति श्रीकृष्णकुबरीसंगविहारवर्णन बारहमासीसमाप्त

अथ राधाजीकी बारहमासी

सावन विना गिरिधारी सूनीहै सेज अटारी ॥ सावनमें सब साँवरी, झूलत पियके संग ॥ हमरो तौ नँदलाल विन, जरोंजात सब अंग ॥ भादौं भवन ना भावे, नित रैनि बिरहा सतावे ॥ भादौं में मुहि कंतबिन घर अँगना

न सुहात ॥ जैसे माछी शहदकी, कर मलि मलि पछि-
तात ॥ क्वारकमल जल फूले, केहि देश विदेशी भूले ॥
क्वारमास मो सब कमल, रहतहैं जलबिच फूल ॥ हमरे
तो नंद लाल बिन, उठै कलेजे शूल ॥ कार्त्तिक अधिक
दुःखदायी, उन बिन कछू न सुहाई ॥ कार्त्तिक प्यारे
कृष्णजी, केलि करैं चहुँ ओर। हमरो तो बिन श्यामके
भयो जात है भोर ॥ अगहन पड़न लागो शीता, अजहूँ
न घर आये मीता ॥ अगहनमों बिनश्यामके, रोमरोम
भहरात। सुधि आये छाती फटे, पाती लिखी न जात ॥
पूसै पिया जो न ऐहैं, जीवत हमैं न पैहैं। पूस दुख कासों
कहौं, मोसो कहो न जाय ॥ उन बिन कोऊ ऐसखी,
नाहीं देत दिखाय ॥ माहै न जग बिच चैन, हमैं विथा
दिन रैन ॥ माघमासमें ऐ सखी, मरी जात बिन पीव॥
जैसे खाल लोहारकी, सांस लेइ बिन जीव ॥ फागुन फाग
सब खेलैं, अबीर गुलाल रंगमेलैं ॥ फागुनमें यह शोच
है, हरिहैं केहिके संग॥ हमरो तो यह शोचमें सूखि गयो
सब अंग॥ ऋतु चैत सकल वनफूले, केहि देश सजनवां
भूले॥ चैतमासमों फूल सब, रहे सखीरी फूलि॥ हमरो
तो नँदलाल अब, रहो कहांहै भूलि॥ वैशाखसाख क्या
उसकी, जानी न विथा मेरे जिवकी ॥ वैशाखमासकी

थी खबर, अजहुँ न आये श्याम॥ साख गई मोहिं श्याम बिन, नेक नहीं आराम॥ जेठेतपनतन जारी, खन नीचे खर जात अटारी॥ जेठ तपन मोरी ऐसखी, जारे देत हैं देह॥ पिव सुखमें अस हम जरैं, ऐसो होत सनेह॥ माहअषाढ़ जब लागा, परदेशी देशको भागा॥ आषाढ़ मास मों ऐ सखी, पिवनहिं आयेतीर। उनबिन दोनों नैनसे, रक्त बहै जिमि नीर॥ लौंदमोहन सूरत आये, दुःख सब तनुके बिसराये॥ लौंदमासमें आइके, कन्त लियो लपटाय॥ तनुके दुःख सारेहरे, दियो सकल सुख आय॥ १२॥ इति॥

ललितासखीकी बारहमासी

कौन उपाय करौं मोरी आली, श्याम भये कुबरी वश जाई॥ चैत मास मोहिं मदन सतावै, वैशाख मास बहुतै दुखपावै, ज्येष्ठ मास तनुतपै घामज्यों, अंगचीर मोहिं एको न सुहाई॥ आषाढ़मास घन घेरि आये बदरा, सावन मास बहै पुरवाई॥ भादौं अगम पंथ नहिं सूझै, जलसे भरि गईं ताल तलाई॥ क्वाँरमास घर श्याम न आये, कार्तिक दियना अकाश बराई॥ अगहन अग्रसनेह श्याम वश, को पतिया हमारी लेजाई॥ पूषमास मोहिं शीत सतावत, माघ विना पिय जाड़ न जाई॥ फागुनफगुवा

खेलब केकरे सँग, विना श्याम अरुविनु बलराई॥१२॥ ॥इति॥

बालमुकुंदकृत बारहमासी

शुरू आषाढ़ ऐ प्यारे॥ छवैं बँगले जगत सारे, भरे आकाश घन कारे॥ अजहुँ आया न निर्मोई॥ मिलावै मेरे दिलवरसे है ऐसा जक्तमें कोई॥१॥ हुवा सावन शुरू जबसे॥ जलै दूना जिगर तबसे॥ न पाया वो किसी ढबसे, बयस योंहीं सभीखोई॥ मिलावै मेरेदिलवरसे, है ऐसा जक्तमें कोई ॥२॥ ये भादों ने दिखाया रंग, करैं बिरहिनसों दादुर जंग॥ जो होती प्राणप्रीतमसंग॥ न डरपाता मुझे कोई॥ मिलावै मेरे दिलवरसे०॥३॥ महीना क्वाँरका आया॥ पिया ने नेह बिसराया॥ करै अब सौत मन भाया॥ जलन तो है मुझे सोई॥ मिलावै मेरे दिल वरसे०॥४॥ महीना कार्तिकके आली॥ पुजे घर २ में दीवाली॥ हमें ये ऋतु गई खाली॥ योंहि बरसात भर रोई॥ मिलावै मेरे दिलवरसे० ॥५॥ कहांहै आय मिल मीता॥ अरे मृगशिर तलक बीता॥ न छोड़े तब बिरह जीता॥ जलाकरक्या नफा होई॥ मिलावै मेरे दिलव-रसे० ॥६॥ महीने पूषओ साजन॥ बहुत ढूँढ़ा मैं बन

जोगन ॥ न पाया पर तेरा दरशन ॥ मिलो अभिलाष है योई ॥ मिलावै मेरे दिलवरसे० ॥७॥ आयफिर माहने घेरा ॥ न प्रीतमका हुवा फेरा ॥ लिया तरसाय बहुतेरा ॥ दिखा अब आय मुखलोई ॥ मिलावैमेरेदिलवरसे ॥८॥ मस्त फागुन महीना है ॥ ध्यानतैं कुछ न कीना है ॥ उन्हींका सत्यजीना है ॥ जो सोवैं मिल जने दोई ॥ मिलावै मेरे दिलवरसे ॥९॥ चैत चिंता हुई भारी ॥ न आया प्राण आधारी ॥ रहीरोती बिरहमारी । कवन अघ-दुःख असहोई ॥ मिलावै मेरे दिलवरसे० ॥१०॥ लगा वैशाख ऐप्यारे ॥ विरहलूने जिगर जारे ॥ खबरले प्राण आधारे । प्रीत क्यों चित्त से धोई ॥ मिलावै मेरे दिलव-रसे० ॥११॥ जेठ में मिलगया दिलदार ॥ सलूनो पायता उजियार ॥ सजनसँग सब करूँ त्योहार ॥ कथन नहि बालकीगोई ॥ मिलावै मेरे दिलबरसे है ऐसा जक्तमें कोई ॥१२॥

इति श्रीबालमुकुन्दकृतबारहमासीसम्पूर्ण

अथ बिरहिनीकी बारहमासी

महीना आषाढ़का आया । विरहका जल जगत-छाया ॥ चलतपगछाड़ जिगरखाया । चमकै बिजुली

डरपै काया ॥दोहा॥ पवन शरद तनु लगतही, उठैकरेजे हूक ॥ कूक करै कोयल जभी, करैजिगरके टूक ॥ सेजहै खांड़ेकी धारे । तुझ विनाओ दिलवर प्यारे ॥१॥ हुवा जब सावनका आवन ॥ हिंडोले मिल झूलैं कामन ॥ गावती मलारमन भामन । बरसता मेह दमकै दामन ॥दोहा॥ मैं बौरी देखूँखड़ी, थमैं नैन नहिं नीर ॥ सावन में क्योंबिछुड़के, दुखदीना बे पीर ॥ हुवा क्या भला दई मारे ॥ तुझ० ॥२॥ महीना भादौंका बरजै ॥ घटा कालीशिरपर गरजै ॥ देख अंधेर हिया लरजै। कामतनु चढ़ दौड़ा करजै ॥दोहा॥ मरा पपींहा ना मरै, करै मेरे ढिग पीय ॥ सुनत ताहिकी पीयपी, निकसत मेरो जीय ॥ डरूँमैं लख बादर कारे ॥तुझ०॥३॥ महीना असौजका लागा। पियानेनेह सभी त्यागा ॥ कहो जाकर यहीकागा। तजाक्यों नेह अनुरागा ॥ दोहा ॥ हाय दई कैसी भई, बूड़मरूँ कित जाय ॥ खबर न उस दिलदारकी, कोऊ आयसु नाय ॥ मरी इसही गमके मारे ॥तुझ० ॥४॥ लागा कार्तिक अति सुन्दर । होत उजियार सभी मंदर॥ ताश गंजीफा और चौसर । खेलते नर नारी घर घर ॥दोहा॥ पूजतहैं श्रीलक्ष्मी, निज २ प्रीतम संग ॥ मुझ विरहनके हृदयमें, देखत उठत तरंग ॥ थके मेरे पौरुष

सारे ॥तुझ० ॥५॥ महीना आय गया अगहन । न पाया पर तेरा दरशन॥ रहम खाकर आ मिल साजन॥ कहूँ वारी तुझपर तन मन ॥दोहा॥ बहुतेरा समझात हौं, मनुवां मानत नाहिं॥ बार २ येही कहै, चल प्यारेके पाहिं॥ सभी समझायकै हारे॥ तुझ० ॥६॥ पूषमें पड़ता है पाला। बदन सगरा होवै काला ॥ खिले हैं नरगिस गुल्लाला॥ हुई लख तुम बिन बेहाला॥दोहा॥ पवन बहै सुख अति सरस, शीतल मन्द सुगंध ॥ हे चितचोर कठोर हिय, तुझबिन कहँ आनंद॥ जरा तो ध्यान इधरलारे ॥तुझ०७॥ महीना पूससे आयामाह। बहुतमैं देखीतेरी राह ॥ हमैंयहऋतु खालीगइआह। तुझबिनाकैसे निर्वाह ।दोहा॥ फूलखिले हरचमनमें, तरह २ केगुल॥ भौंरे फूलों पर फिरैं, फिरते हैं बुलबुल ॥ तेरे बिन कांटेहैं सारे ।तुझ०॥८॥ महीना फागुन का रंग गीर ॥ सभीरंगरँगैं चोलियां चीर ॥ उड़ै रंगऔर गुलाब अबीर।हरतरफहै मस्तोंकी भीर॥दोहा॥ देख २ ये ऋतु मेरे दिलते निकलै हाय ॥ तुझ बिन ऐ जानी जिगर, यों ऋतु खाली जाय ॥ मरीहरतरहबिना मारे ॥तुझ०॥९॥ चैतमें चित न मानै धीर । पड़ै गरमी ज्यों मारै तीर॥ खिले टेसूदै दिलकू चीर॥ इन दिनों सुधि भूले बेपीर ॥दोहा॥ अरीचमेलीबावरी, कहा रिझावैमोय॥

जो प्रीतम होतो निकट, तौउ बतातीतोय ॥ परकहूँ क्या हूँलाचारे ॥तुझ०॥१०॥ लगावैशाख तपन परती। जलै अस्मान औ धरती ॥ मैं तुझ बिन सेजपै जरती। रात दिनहै गमकी भरती॥दोहा॥ सबनरनारी हँसतहैं, देखर ममढंग। कोइकहै बौरी भई, कोईकहै पीभंग ॥ सहूँनिशि दिन तपनि सारे ॥तुझ०॥११॥ जेठ जब लागा गर्म्मी पड़ी। बदनमें लुवै लवै है कड़ी ॥ भलाकब आवैगीवो घड़ी ॥ गले मिल तेरे खुशी होबड़ी ॥दोहा॥ अरे बावरे कागरे, कहा सुना वै काँय ॥ मोरे भाग लिखो विरह, साजन मिल नो नांय ॥ हायमें गये मासबारे ॥तुझ० ॥ १२ ॥ लौंदमें मिले गुरू घासी। कही सुन्दर बारह मासी ॥ कथनकी बालमुकुन्द आसी ॥ है ठाकुरद्वारेका बासी ॥दोहा॥ ले आज्ञा गुरु देवकी, पूरण विश्वे बास॥ चैत्र शुक्क तिथि अष्टमी, संवतसैंतालीस ॥ सदा पड़ते हैं पोबारे ॥तुझ० ॥१३॥

इति वारहमासीसंग्रह संपूर्ण

भांगके गुण

कवित्त–मिरचमसालासौंफकासनीमिलायभांग खाये तेअनेकरोगअंगकेउबारती। जारतीजलन्धरभगन्दरक-ठोदरऔ बवासीरसन्निपातबावनविदारती ॥ कविशिव

रामदादखाजको खराबकरि छींकछईछंजननसूरकोनिका- रती। पीनसप्रमेहबी सबावनतरहकेरो कमर दरदको गरद करिडारती

ब्रह्मचारीकेलक्षण

कवित्त-सहजवैराग्यकैरवासनाकोत्यागकरै इन्द्रिन विरागकरै आतमाविहारीहै। कर्मनिस कर्मकरैवेदविधि धर्मकरै मनमें न भर्मकरै द्विविधा नरधारीहै। सनातन ज्ञानकरै परनारीआनकरै चैतन्यको ध्यानधरै याहीसुख कारीहै। अक्षरअनन्यब्रह्मविधिकोविचारकरैऐसोब्रह्मचार करै सोई ब्रह्मचारीहै ॥१॥

परमेश्वरसे क्षमा माँगने

राम राम राम राम रामहीका हूँ गुलाम सेवा आठ याम पर पर पलको न होती। राम राम सीता राम राम राम सीताराम रोम रोममें रमें हमेस इच्छा होती॥ धरा धर धरन भरन जग जगन्नाथ मेरे हू अनाथ पै जु दयादृष्टि होती। सीतापति राम राम सीतापति राम राम कृष्णबिहारी मेरी कुदशा न होती॥

नामकरन लीला

क०-आये मुनि गरग पठाये वसुदेव भाये कारण करन नाम करन सोहायो है। स्वागत सुनाइ सनमानि नमनाय

श्याम रामहीं बोलाइ ऋषि पाँय शिर नायो है॥ जनम बचाइ गुण गण गिनवाय मोह मापकै न माय मन आनँद बढ़ायो है। ब्रजकी लुगाइन बुलाय चित्त चाइन बजाय जाय दुहुँनको नाम धरवायो है॥

अथ गणेशस्तुति प्रारंभः

श्रीगणेशाय नमः॥ छन्द॥ प्रथमसुमुखइकरदनकपिल गजकर्णसुखदायक। लंबोदरपुनिविकटविघ्ननाशनजुवि-नायक॥ धूम्रकेतुअरुगणाध्यक्षशिरचंद्रगजानन। द्वादश नामप्रभातनित्यसुमिरोंनिजआनन॥ विद्यारंभविवाहमें गृहप्रवेशगमनेसदा। शुभश्रीगणपतिरटतघरनिरवीघन संकटछिदा॥

इति गणेशस्तुति समाप्त।

अथ बजरंगचालीसी प्रारंभः

श्रीगणेशाय नमः॥ दोहा॥ बुद्धिहीनतनुजानिकै, सुमिरोंतनयसमीर। बुधिविद्याबलदेहुमोहिं, संपतिसहित शरीर॥१॥ चौपाई॥ जयहनुमानज्ञानगुणसागर। जय कपीशतिहुँलोकउजागर॥ रामदूतअतुलितबलधामा। अंजनिपुत्रपवनसुतनामा॥ महावीरविक्रमबजरंगी। कुमतिनिवारसुमतिकेसंगी॥ कंचनवर्णविराजसुवेशा।

कुंडलकाननकुंचितकेशा ॥ हाथवज्रअरुध्वजाविराजे । कांधेमूँजजनेऊछाजै॥ शंकरसुवनकेशरीनंदन। तेजप्रताप महाजगवंदन ॥ विद्यावानगुणीअतिचातुर । भक्तकाज करबेकोआतुर ॥ प्रभुचरित्रसुनिबेकोरसिया । रामलषण सीतामनबसिया॥ सूक्ष्मरूपधरिसियपहँआयो। बड़ोरूप धरिलंकजरायो॥ भीमरूपधरिअसुरसँहाऱ्यो। श्रीरघुनाथ केकाजसँवाऱ्यो ॥ आनिसजीवनिलषणजिवाये। रामचंद्र तबकंठलगाये॥ रघुवरकीन्हींबहुतबड़ाई । अहोतातभरत समभाई ॥ सहसवदनतुम्हरेगुणगावैं । असकहिरघुपति कंठलगावैं॥ सनकादिकब्रह्मादिमुनीशा। नारदशारद सहितअहीशा॥ यमकुबेरदिशिपालजहांते। कविकोविद कहिसकहिंकहांते॥ तुम उपकारसुग्रीवहिंकीन्हा। राम मिलायराज्यपददीन्हा॥ तुमरोमंत्रविभीषणमाना । लंकेश्वरभये सबजगजाना॥ युगसहस्रयोजनजोभानू। लीलाताहिमधुर फलजानू ॥ प्रभुमुद्रिकामेलिमुखमाहीं । जलधिलाँघिगे अचरजनाहीं॥ दुर्लभकाजजगतमेंजेते। सुमिरतसिद्धिहोहिं सबतेते॥ रामदुवारेतुमरखवारे। विनुआज्ञानहोइपैठारे॥ सबसुखलहैतुम्हारीशरना । तुमरक्षककाहूकोडरना ॥ आपनतेज सँभारो आपै । तीनोंलोक हाँकतेकाँपै ॥ भूत पिशाचनिकटनहिं आवै । महावीरजबनामसुनावै ॥ नाशै

रोगहरैतनुपीरा। भजैनिरंतरहनुमतवीरा॥ संकटतेहनुमान छोड़ावै । मनवचकर्मध्यानजोलावै ॥ सबपररामराज शिरताजा। ताकेकामहेतुसोछाजा॥ औरमनोरथजोकोइ लावै । तनमनवांछितसोफलपावै ॥ चारिउयुगपरताप तुम्हारो । हैपरसिद्धजगतउजियारो ॥ रामपियारेशंभु दुलारे। साधुसंतकेतुमरखवारे ॥ अष्टसिद्धिनवनिधिके दाता। असवरदीन्हजानकीमाता ॥ रामरसायनतुम्हरे पासा । सादरतुमरघुपतिकेदासा ॥ तुम्हरेभजनरामको भावै । जन्मजन्मकोदुखविसरावै॥ अंतकालरघुपतिपुर जाई। जहांजन्महरिभक्तकहाई॥ औरदेवताचित्तनधरई। हनुमतसेइसकलसुखकरई ॥ संकटहरैमिटैसबधीरा । जो सुमिरैहनुमतबलवीरा॥ जैजैजैहनुमानगुसाँई। कृपाकरहु गुरुदेवकिनाँई॥ यहशतवारपढ़ेजोकोई। छूटैबंदिमहासुख होई॥जोकोइपढ़ेबजरंगचलीसा।होइसिद्धसाखीगौरीशा॥ तुलसीदाससदाहरिचेरा।कीजैनाथहृदयमहँडेरा॥दोहा॥ पवनतनयसंकटहरण, मंगलमूरतिरूप । रामलषणसीता सहितबसहुहृदयसुरभूप॥ इतिश्रीतुलसीदासकृत बजरंग चालीसीसंपूर्ण ॥

अथ महादेवलीला प्रारम्भ

मैंयोगीयशगायारेबाबामैंयोगीयशगाया ॥ तेरेसुतके दरशनकारणमैंकाशीसेधाया ॥ पारब्रह्मपूरणपुरुषोत्तम सकललोकजामाया ॥ अलखनिरंजनदेखनकारणसकल लोकफिरआया ॥ धनिधनितेरोभाग्ययशोदाजिनऐसा सुतजाय ॥ गुणनबड़ेछोटेमतभूलोअलखरूपधरआया ॥ जोभावैसोलीजेरावरकरोआपनींदाया ॥ देहुअशीशमेरे बालककोअविचलबाढ़ैकाया ॥ नामैंलेहौंपाटपटम्बरनामैं कंचनमाया ॥ मुखदेखूंतेरेबालककोयहमेरेगुरुनेलखाया ॥ करजोरेविनवैनँदरानीसुनयोगिनकेराया । कालापीलागौर रूपहैबाघम्बरओढ़ाया ॥ कहुँडांकनकीदृष्टिलगेगीबालक जातदिठाया ॥ जाकीदृष्टिसकलजगउपजैसोक्योंजात दिठाया ॥ तीन लोककासाहेबमेरा तेरे भवनछिपाया ॥

राग बिलावल

दिलदारमेरासामलायारदरशदिखाजा ॥ टेक ॥ तेरेबिन देखेकलनापड़तहैदुकमुखड़ाखलाजा ॥ जानकीदासभये उदास निकसतनाहीं पापी श्वास । मोरमुकुटपीताम्बर धारीमेरेनयनोंमेंसमाजा ॥९॥ नंदद्वारइकयोगीआयोशृं-गीनादबजायो ॥ शीश जटाशशिवदनसोहायोअरुणनयन

छबिछायो ॥ रोवतखीझतकृष्णसाँवरो रहतनहीं डुल-
रायो ॥ लियोउठायगोदनँदरानीद्वारेजायदिखायो ॥९॥

वार्तिक

अरी ललता, विशाखा, चंपकलता, रंगदेवियो! नेक देखियो तो सही मेरे लालाको कहाहो गयो! कि ऐसो रोये खीझेहै, हंबे बीर! लालाको कहा होगयोहै, अरी बीर! वो जोयोगी आयोथो वाहिने कछुक टोनो कर गयो है, हंबेवीर! वाकोटेरले हंबेवीर जाऊंहूं-

चलरे योगी नंदभवनमैं यशुमति माय बुलावैं॥ मटकत मटकत शंभू आवैं मनमें मोदबढ़ावैं ॥ सात बेर पैकरमा करके राइ नून कर लीनो॥ हाथफेर लालाके ऊपर कछुक मंत्र पढ़ दीनो ॥ व्यथा हुई सब दूर वदनकी किलक उठे नँदलाला॥ खुशीहुई नंदजूकी रानी दीन्ही मोतिनमाला॥ रहुरेयोगी नंदभवनमें दाया हमपर कीजै॥ जब जब मेरो लाला रोवे तब तब दरशन दीजै ॥

वार्तिक

अरी यशोदा! नेक लालाको लैयो तो सही दरशन करलेओं, फेर कैलासको जाऊंगो, कृष्ण लालको लाई यशोदा करअंचल मुख छाया। कर पसारचरणनरज लीनोशृंगीनादबजाया॥ अलख अलखकरपाँयछुयेहैं हँसि-

बालककिलकाया। पांचबेरपरिकर्माकरके अतिआनन्द-बढ़ाया॥ हरिकीलीलाहरमनअटक्योचितनहिंचलतचला-या।अलखब्रह्मांडकोटिकेनायकनंदघरहिप्रगटाया॥ इन्द्र-चन्द्रसूरजसनकादिकशारदपारनपाया ॥ लागिश्रवणमं-त्रदोनसुनाईहँसिबालकमुसकाया॥ कौनदेशकेयोगी होतु-मकौननामधरवाया ॥ कहाँवासयहकहतयशोदासुनयो-गिनकेराया॥ तुमहीब्रह्मा तुमहींविष्णूतुमहींईशकहाया॥ तुमविश्वंभरतुमजगपालकतुमहीकरतसहाया॥ चिरजीवी सुतमहरिनिहारोहौंयोगीसुखपायो॥ सूरदासरमिचल्योरा वरोशंकरनामबतायो ॥इति॥

अथ श्रीराममल्ललीला

श्रीलक्ष्मणोविजयते ॥ छन्दत्रिभंगी ॥ सुतनृपदशरथ केअतिसमरथवीरसुरथकेधुरधारी॥ रघुनंदनबांकेछबिबल छाकेअनुजहुजाकेव्रतधारी॥ लक्ष्मणपदवंदनभरतअनंद-शत्रुनिकंदनशत्रुहनै॥ कछनीशुभकाछेवीरसुवाछेरुचिआ-छेबनैठनै ॥ १ ॥ जबदंडैकाढ़ैआनँदबाढ़ैमनोअषाढ़ैघन दरसैं ॥ बैठकीकरहिंजब चित्तहरहिंतब रंगधरहिंजब कर परसैं ॥ वंदीगुणगावैंउमंगबढ़ावैंगायसुनावैंवीररसै॥ लखि रमणविहारीछबिसुखकारी प्रेमसुवारीनितबरसै॥२॥ खेलैं चकडंडैंकरैंघमंडैंनिजभुजदंडैंहँसिहेरैं॥पुनिलेजमफेरैंभुज-

जन्हतरेरैंहर्षितझैरैंभटभैरैं ॥ लैमुद्गरभावैंनालउठावैंताल बजावैं निजभुजकी ॥ रमणेशजुत्रिधिहरकोटिकरतिवर वारौंछबिपरसानुजकी ॥३॥ लखिदांवझपट्टैंझपटिलपट्टैं लपटिडपट्टैंदाँउलहैं ॥ लैभूमिपटकैंपटत्रिझटकैंझटकसट कैंफेरिगहैं ॥ दांनवकेठट्ठावीरसुभट्टाकरैंसपट्टाछबिछावैं ॥ मिलिहत्थमहत्थागुत्थमगुत्थामत्थेमत्थाचपटावैं ॥४॥ इहिभांतिअगारे सुखद अपारेनिरखदहारेसुखपावैं॥ मैं वर-णोंकहँलौंजिहिमहिजहँलौं प्रभुगुणतहँलौंतेगावैं॥ यह मल्ल सुलीलाअतिप्रियशीलारंगरंगीलाखेलजहाँ ॥ खेलतअसु-रारी अवधविहारी रमणविहारीलखत तहाँ ॥ ५ ॥ इति श्रीकविरमणविहारीकृतराममल्ललीला समाप्त ॥

श्रीकृष्णचन्द्रजीकीजन्मपत्रीप्रारम्भ

नंदजुमेरेमनआनंदभयोमैंसुनिमथुरासे आयो॥ लगन साधिज्योतिषकोगिनकै चाहततुम्हैंसुनायो नंद० ॥१॥ संवतसोमनामशुभभादौंकृष्णपक्षसोनामधरचोहै ॥ अरु

अष्टमीबुधवाररोहिणीहर्षण योगपरचोहै ॥ नंद० ॥२॥
वृश्चिकलग्नउच्चके उडुपतितनको अतिशुभकारी ॥ दलचतु-
रंगचढ़ैं गेइनकेह्व गेरसिकबिहारी ॥ नंद० ॥३॥ चौथेशनि
कन्याकेदिनपतिमहिमंडलयहर्जातें ॥ करैं विनाशकंस
मातुलकोनिश्चय कुछदिनबीतें ॥ नन्द० ॥४॥ पंचमबुध
कन्याकोसोहैपुत्रबढ़ैनहिं कोई ॥ सुखमेंशुक्रतुलाकेसंयुत
शत्रुबचैनहिंकोई ॥ नन्द० ॥५॥ ऊंचनीचयुवतीबहुभोगैं
सप्तमराहु परचोहै ॥ भाग्यभवनमेंमकरमहीश्वरईश्वरसबहि
भरचोहै ॥ नंद० ॥६॥ श्यामवर्णमेंकेतुलग्नमें मनचीतेवे
करिहैं ॥ बालापनकेलक्षणइनकेचोरीमें चितधरिहैं ॥नन्द०
॥७॥ नवविधुवसैलाभमें इनकेमीनबृहस्पतिकेरी ॥ पृथ्वी
भारउतारनहारे मानिलेहुमतिमेरी ॥ नन्द० ॥८॥ यहसुनि
नंद महरिआनंदेपूजिगर्गपहिराये ॥ अशनबसनगज वाजि-
सबीधनभूभंडारलुटाये ॥ नन्द० ॥९॥ वंदीजनयशगावत
पावतसंतनकेमनभायो ॥ ब्रज जन्मेश्रीकृष्णमहोत्सवसूर
बिमलयशगायो ॥ नंद जुमेरेमनआनंदभयो मैं सुनिम-
थुरासे आयो ॥१०॥

इति श्रीकृष्णचन्द्रकीजन्मपत्रिका समाप्त

प्रभाती

जागिये कृपानिधान जानराय रामचन्द्र जननी कहै बार बार भोर भयो प्यारे ॥ राजिव लोचन विशाल पीत वापिका मराल ललित कमल वदन ऊपर मदन कोटि वारे ॥ अरुण उदित विगत शर्वरी शशांक किरन हीन दीन दीप ज्योति मलिन द्युति समूह तारे ॥ मनो ज्ञान घन प्रकाश बीते सब भवविलास आसत्रास तिमिर तोष तरनि तेज जारे॥ बोलत खगनिकर मुखर मधुकर प्रतीत सुनो श्रवण प्राण जीवन धन मेरे तुम बारे ॥ मनो वेद बंदीजन सूतबृन्द मागधादि विरद वदत जय जय जय जयति कैटभारे ॥ विकसत कमलावली चले प्रपुंज चंच-रीक गुंजत कल कोमल ध्वनि त्याग कंज न्यारे ॥ मनो मन विराग पाय सकलशोक गृह विहाय भृत्य प्रेममत्त फिरत गुणत गुण तिहारे ॥ सुनत वचन प्रियरसाल जागे अतिशयदयाल भागे जंजाल विपुल दुख कदंब टारे ॥ तुलसिदास अतिअनंद देखके मुखारविंद छूटे भ्रमफंद परमसंद द्वंद्व भारे ॥

इति प्रभाती समाप्त

अथ गंगालहरी

ख्याल-सागरकि गिनी जाँय लहर गिने जायँ तारे। नहीं जायँ गिने श्रीगंगाजीके तारे॥ षट शास्त्र गिनेजायँ गिने जायँ नर नारी। दशदिशा गिनीजाँय सृष्टिगिनी जाय सारी॥ सिद्धसाधुगिने जाँय गिने जाँय आचारी। राजा रानी गिने जाँय सकल सरकारी॥ गिने जाँय शाह शाहानी गिने हलकारे। नहीं जाँय गिने श्रीगंगाजीके तारे॥ गिने जाँय नदी नद सिंधु गिने जाँय नाले। गिने जाँय श्वेतरंग लाल गिने जाँय काले॥ दरखत डाली जाँय गिनीगिनेजाँय डाले। छत्तीस रागिनीराग सकल गिनडाले॥ गिनते गिनते कई हजार शायर हारे। नहिं जाँय गिने श्रीगंगाजीके तारे॥ खग चरिंद जाते गिने गिने जाँय चातुर। हरजात गिनी जाय नगर गिने जाँय घर घर॥ कागज स्याही जाय गिनी गिने जाँय अक्षर।

सादर गिने जाँथ गिने जाँय सागर सर ॥ क्या जाने गंगने कितने शठ निस्तारे। नहीं जाँय गिने श्रीगंगाजी के तारे ॥ दिन रात गिने जाँय गिने जाँय तिथि घड़ी। गायत्री गिनी जाय गिनी छन्दकी लड़ी॥ शायर कायर जाँय गिने गिने जाँय कड़ी। जंगम खेड़ा गिने जाँय गिनी जाँय जड़ी ॥ यह सत्य २ छंद काशी गिरि ललकारे। नहिं जाँय गिने श्रीगंगा जीकेतारे ॥

यमराजका विष्णुसे श्रीगंगापर फिरयाद करना

अब विष्णुसे जाकर यमने यही पुकारा। गंगाने बंद करदिया नरकका द्वारा ॥ लाखों पापी पृथ्वीपै रोज मरते हैं। क्या कहों मैं वो यकक्षण भरमें तरते हैं॥ मेरे भयसे भी जरा नहीं डरतेहैं। गंगाके गण उनकी रक्षा करतेहैं॥ विन भजन किये होता उनका निस्तारा। गंगाने बंद कर दिया नरकका द्वारा ॥ हिन्दू या तुर्क या बेहना डोम कसाई। भंगी धोबी हड़फोड़ या होवे नाई ॥ गंगाकी लहर जिसे दूरसे दी दिखलाई। फिर अंतसमयमें उसने मुक्ती पाई ॥ दर्शन करतेही तरा महा हत्यारा। गंगाने बंद कर दिया नरकका द्वारा ॥ जो मेरे दूत पापियोंको

जायँ पकड़ने । तौ गंगाके गण आवें उनसे लड़ने ॥ वो देख देख दूतोंको लगे अकड़ने। और मारे बाण तनुबीच लगे वो गड़ने ॥ मैं लड़लड़के कईलाख लड़ाई हारा । गंगाने बंद करदिया नरकका द्वारा ॥ गंगासे सौ योजन पर एक नगरथा। उस नगरमें इक पापीका ऊंचाघर था ॥ वह पाप कर्म कर करता रोज गुजरथा। मर गया तो उसपर पड़ा एक वस्तर था ॥ गंगाका धोया उसीने उसको तारा। गंगाने बंद करदिया नरकका द्वारा॥ यह सुनी बात तब विष्णुजी यमसे बोले। गंगाकी महिमा कहांलों कोई खोले। इस नेत्रसे दर्शन श्रीगंगाके जो ले॥ वैकुंठमें वह फिर झूले सदा हिंडोले। कुछ वश नहिं मेरा चले न चले तुम्हारा। गंगाने बंद करदिया नरकका द्वारा॥ जब मृत्युलोकसे गंगा आप सिधरिहैं। तब वह पापी फिर कौन विधी कर तरिहैं ॥ उस कालमें जो कोई पाप कर्म कर मरिहैं। वह आन आनकर नरक तुम्हारो भरि हैं ॥ यमराजजी अब थोड़े दिन करो गुजारा। गंगाने बंद करदिया नरकका द्वारा ॥ यह सुनीबात यमराजने घर फिर आये। कुछ हँसे और कुछ कुछ मनमें पछताये॥ मनमारके यह गंगा को बचन सुनाये। अब तौ तुम्हरे

थोड़े दिन रहनेपाये ॥ कहैं बनारसी कुछ यमका चला न चारा। गंगाने बंद करदिया नरकका द्वारा ॥इति॥

अथ गर्भचिंतामणि प्रारम्भ

क्योंजन्मगँमावोरटोरामरघुराई। मानुषतनवारंवार सहजनहिं पाई ॥टेर॥ नरनारीकेसंयोगगर्भमेंजायो॥ मल मूत्रमांसकोपिंडहोयहैरायो। पगऊपरतलमेंशीशरहोलटकायो॥ दुखगर्भवास कोदेखबहुतघबरायो॥ पड़तेहीं पिंडमेंजीवतनिक सुधिआई॥ मानुषतन० ॥१॥ अग्नि जठरजहँ तपेपवननहिंआवै॥ रहैजीवकैदमेंजराचैननहिं पावै॥ करतासोंवारंवारअरजगुजरावै॥ इसफंद सेबाहर जोकोईभांतिकरावै॥ मैंजपूँतुझीकोआठ पहरचितलाई॥ मानुषदेहवारंवारसहजनहिं पाई ॥२॥ जबनिकसगर्भसूँ मोहजालमेंआयो॥ सबभूल्योकौलकराररामबिसरायो॥ माबापदेख सुतआनन्दकरेउछायो॥ पंडितगुरुदेखैंदशा बहुत धनपायो॥ घरबजैनौतांबबटरहीनेगबधाई॥मानुषतन० ॥३॥ बालककुछस्यानोभयो खेलनेजावे॥ नित नाचफंदमेंरहैसुतिनहिंल्यावे॥ माबापलाड़ली सुरतदेख हरषावे॥ ब्याहनको सुन्दरयोगकहींबनजावे॥ तिरिया फंददीनोडारगलेमेंल्याई॥मा० ॥४॥बालकपनबीतोतरुणाईगहराई॥ नहिंभजनभावतेचित्तरहैप्रस्ताई॥ तिरिया

सँगनिशिदिनरहैगलेलिपटाई॥ भयोगयापचीसीमांयज-
वानीछाई। तिरियाफन्दमेंहोयअंधकरैचित चाई॥ मानुष
तन० ॥५॥ नितअतरफुलेलसुगंधअरगजाल्यावे ॥ कर
उबटनमरदनअंगसुगंधलगावे॥ पचरंगीचीरावांधछैलबन
जावै॥ परतिरियातकतोनिजघरनीबिसरावै॥ धृकयोबन
जिननेराममनामबिसराई ॥ मानुषतन०॥६॥ बालक पन
ज्वानीबीतबुढ़ापाघेरा ॥ सबछुटेजगतकेस्वाद मोहमद
फेरा ॥ मुखकाननाकपगहाथथकेयकबेरा। परवशहोकैपै
कालआगयानेरा॥ दिनरहेविकल तारातोनींदनहिंआई॥
मानुषतनवारंवार०॥७॥ देहछीजछीजरहगईहड़ाकीटट्टी॥
मुखनयनझरै दिनरैनभईदुरघट्टी॥ सबघरकेमिलयोंकहैं
मिले कबमिट्टी॥ बेटानहिं मानतहुकुमकरमर्कापट्टी ॥
घरकीनारीभीगारीदेबतराई ॥ मानुषतन०॥८॥ तनछीन
मलिनमुखबिकलभयोअतिचारी॥ मरनेसेतौहूडरैलगेजों
कारी॥यमदूतखड़ेचहुँओर भयंकरभारी ॥ मुसकोंसेलीना
बांधमूसलनमारी ॥ लैखींचजीवकोचलेजहाँयमराई ॥
मानुषतन०॥९॥ यमराजकोपकरकहीदुष्टलेआवो॥ लोह
खैंचगर्मकरदेहउसकीचिपकावो॥मुद्गरकीमारोमारजेरबंद
ल्यावो। अँतितोरभयंकरनरममाहिंछिटकाबो॥ जीवजंतु
नरककेचूंटचूंटतनुखाई॥मानुषतन०॥१०॥ रहैजीवनरक

मेंदुखीकहींनहिंजावै। करणीकेभोगभोगकहापछावै॥ फिर भुगतनरककोचौरासीमेंआवै ॥ देहदेहमेंभटकेजीवकोटि दुखपावै॥ यहिभांतिदुर्दशाप्राणीकीहोजाई॥ मानुषतन० ॥११॥ हरिविमुखनकीयहदशाहोतदोजखमें ॥ जैलाल रटोनितरामनामहरदममें ॥ गुरुपुरुषोत्तमकरयादगर्भ प्रणघटमें॥ कटजायआगमनफंदतेराचटपटमें॥ हैतारक मंत्रयहीवेदश्रुतिगाई । मानुषतनवारंवारसहजनहिंपाई ॥

इति गर्भचिन्तामणि समाप्त।

रेखता बालमुकुन्दकृत

जुबांसे हर घड़ी ऊधो वही प्रीतम निकलता है। कहो जाकर मिलै हमसे नहीं तो दम निकलता है॥१॥ किया क्या जुल्म यह हमपर कहा करते थे क्या हमसे। वफादार इस जहां अन्दर मसल है कम निकलता है॥२॥ अरस्तूँ और अफलातूँ दवा कर करकै सब हारे। न हरगिज जख्मका मेरे कहीं मरहम निकलता है॥३॥ कहो जाकर जरा ऊधो ये बालकरामकी अर्जी। मिलो इक बार फिर वर्ना जिगर बेगम निकलता है ॥ ४ ॥ इति ॥

श्रीगणेशाय नमः

अथ श्रीगणपतिजीकी आरती

श्रीगणेशाय नमः ॥ गणपतिकीसेवामंगलमेवासेवासे सबविघ्नटरैं। तीनलोकतेतीसदेवताद्वारखड़ेसबअर्जकरैं ॥ ॥ टेर ॥ ऋधिसिधिदक्षिणवामविराजैंअरुआनंदसोंचमर करैं। धूपदीपऔलियाआरतीभक्तखडचाजयकारकरैं ॥ गणप०॥१॥ गुड़केमोदकभोगलगतहैंमूषकवाहनचढ़ासरैं। सौम्यरूपसेयेगणपतिकोविघ्नभाजज्यादूरपरैं ॥ गणप० ॥ ॥२॥ भादौंमासऔरशुक्लचतुर्थीदिनदोपारापूरपरैं। लियो जन्मगणपतिप्रभुजीसुनिदुर्गामनआनंदभरैं ॥ ग० ॥३॥ अद्भुतबाजाबज्याइंद्रकादेववधूजहँगानकरैं। श्रीशंकरके आनँदउपज्योनामसुन्यासबविघ्नटरैं ॥ ग० ॥४॥ आनि विधाताबैठेआसनइंद्रअप्सरानिरतकरैं। देखवेदब्रह्माजी जाकोविघ्नविनाशकनामधरैं ॥ ग० ॥५॥ एकदंतगजवदन विनायकत्रिनयनरूपअनूपधरैं। पगथंभासाउदरपुष्टहैंदेख

चंद्रमाहास्यकरैं ॥ गणप० ॥ ६ ॥ दैशरापश्रीचंद्रदेवको कलाहीनततकालकरैं। चौदालोकमेंफिरैंगणपतीतीनभुवन मेंराज्यकरैं ॥ गण० ॥७॥ उठप्रभातजबकरेध्यानकोइताके कारजसर्वसरैं। पूजाकालेगावआरतीकेसिरयशछत्रफिरैं ॥ गण० ॥८॥ गणपतिकीपूजापेलाकरणीकामसबीनिर्विघ्न सरैं । श्रीपरतापगणपतीजीकीहाथजोड़करस्तुतिकरैं ॥ गणपतिकीसेवामंगलमेवा० ॥ ९ ॥

इति श्रीगणपतिजीकी आरती समाप्त ।

अथ लक्ष्मीरमणकी आरती

जयलक्ष्मीरमणा श्रीजयलक्ष्मीरमणा शरणागतजन शरणेगोवर्द्धनधरणा ॥ टेर ॥ जयजययमुनातटनिकटित प्रगटितपटुवेसा । अटपटगोपीकुचजबपटहरनटभेसा ॥ जय० ॥१॥ जयमुरलीरवतरलीकृतगोपीलीले। तुवभक्तीमें भवतुब्रजललनामीले॥ जय० ॥२॥ जयजयभगवन्भगवन् कंसारे । पतितंपतितंकृपयातारेसंसारे ॥ जय० ॥३॥ जय जयगोपीप्रतिपालकबंधो। कीमात्रातुमशक्तकृष्णकृपासिं-धो ॥ जय० ॥४॥ जयजयभक्तजननप्रतिपालकचिरंजीवो जिष्णो। मामुद्धरदीनोद्धरधरणीधरविष्णो ॥ जय० ॥५॥

जयजयकृष्णस्वामीनिजपदरसगामैं । कुरुकरुणांकुरु करुणांदाससखारामैं ॥ जयलक्ष्मीरमणा० ॥ ६ ॥

इति लक्ष्मीरमणाकी आरती समाप्त ।

अथ श्रीकृष्णजीकी आरती

आरतियुगलकिशोरकीकीजे। राधेतनमनधनन्योछावर कीजे ॥ रविशशिकोटिवदनकीशोभा । ताहिनिरखिमेरो मनलोभा ॥ आरति० ॥ १॥ गौरश्याममुखनिरखतरीजे। प्रभुकोस्वरूपनयनभरिपीजे॥ आरति० ॥२॥ कंचनथाल कपूरकीबाती। हरिआयेनिर्मलभईछाती॥ आरति०॥३॥ फूलनकीसेजफूलनगलमाला। रत्नसिंहासनबैठेनँदलाला॥ आरति० ॥४॥ मोरमुकुटकरमुरलीसोहै । नटवरवेषदेख मनमोहै ॥ आरति० ॥५॥ ओढचानीलपीतपटसारी। कुंजबिहारीगिरिवरधारी ॥ आरती० ॥६॥ श्रीपुरुषोत्तम गिरिवरधारी। आरतिकरतसकलब्रजनारी ॥ आ० ॥७॥ नँदनंदनवृषभानुकिशोरी । परमानंदस्वामीअविचल जोरी ॥ आरतियुगलकिशोरकीकीजे ॥ तन० ॥ ८ ॥

इति श्रीकृष्णजीकी आरती समाप्त ।

अथ त्रिगुणआरती शिवजीकी

जयशिवओंकाराहरजैशिवओंकारा। ब्रह्माविष्णुसदाशिवअर्द्धंगीधारा॥ टेर॥ एकाननचतुराननपंचाननराजै। हंसासनगरुड़ासनवृहषवानसाजै॥ जैशि०॥ १॥ दोयभुज चारचतुर्भुजदशभुजतेसोहै। तीनोंरूपनिरखतात्रिभुवन जनमोहै॥जैशि०॥२॥अक्षमालावनमालारुंडमालाधारी। चंदनमृगमदचंदाभालेशुभकारी ॥जैशि०॥ ३॥ श्वेतांबर पीतांबरबाघंबरअंगे। सनकादिकप्रभुतादिकभूतादिकसंगे जैशि०॥४॥ करमध्येकमंडलुचक्रत्रिशूलधरता। जगकर्ता जगभर्ताजगसंहारकर्ता ॥ जैशिव० ॥ ५ ॥ ब्रह्माविष्णु सदाशिवजानतअविवेका। प्रणवअक्षरनुमध्येयेतीनोंएका ॥जैशिव० ॥६॥ त्रिगुणस्वामीजीकीआरतीजोकोईगावै। भणतशिवानन्दस्वामीमनवांछितपावै ॥ जैशिव०॥७॥

इति त्रिगुणआरती शिवजीकी समाप्त।

अथ आरती श्रीदुर्गाजीकी

जैअंबेगौरीमैया जैमंगलमूर्ती मैया जैआनन्दकरणी। तुमकोनिशिदिनध्यावतहरब्रह्माशिवरी॥टेर॥ मांगसिंदूर विराजतटीकोमृगमदको। उज्ज्वलसेदोउनैनाचन्द्रवदन नीको ॥ जैअंबे०॥१॥ कनकसमानकलेवररक्तांबरराजै।

रक्तपुष्पगलमालाकंठनपरसाजै ॥ जैअंबे० ॥२॥ केहरि वाहनराजतखड्गखप्रधारी । सुरनरमुनिजनसेवततिनके दुखहारी ॥ जैअंबे० ॥३॥ काननकुण्डलशोभितनासाग्रे मोती । कोटिकचन्द्रदिवाकरसमराजतज्योती ॥ जैअंबे० ॥४॥ शुम्भनिशुम्भविडारेमहिषासुरघाती । धूम्रविलोचन नैनानिशिदिनमदमाती ॥ जैअंबे० ॥५॥ चौंसठयोगनी गावतनृत्यकरतभैरूं । बाजततालमृदंगाऔरबाजतडमरू ॥ जैअंबे० ॥६॥ भुजाचारअतिशोभितखड्गखप्रधारी । मनवांछितफलपावतसेवतनरनारी ॥ जैअंबे० ॥७॥ कंचन थालविराजतअगरकपुरवाती । श्रीमालकेतुमेंराजतकोटि रतनज्योती ॥ जैअंबे० ॥८॥ दोहा ॥ याअंबेकीआरती, जोकोइनरगावै । भणतशिवानंदस्वामी, सुखसंपतिपावै ॥

इति श्रीदुर्गाजीकी आरती समाप्त ।

अथ आरती श्रीलक्ष्मीजीकी प्रारंभ

जयलक्ष्मीमाता जयलक्ष्मीमाता । तुमकूं निशिदिन सेवतहरविष्णूधाता ॥ टेर ॥ ब्रह्माणीरुद्राणीकमलातुहिहै जगमाता । सूर्यचन्द्रमाध्यावतनारदऋषिगाता ॥ जय० ॥ १ ॥ दुर्गारूपनिरंजनिसुखसंपतिदाता । जोकोइतुमकूं ध्यावतऋधिसिधिधनपाता ॥ जयल० ॥२॥ तूहीहैपाताल

बसंती तूहीहैशुभदाता। कर्मप्रभावप्रकाशक जगनिधिसे त्राता ॥ जयल० ॥ ३ ॥ जिसघरथारोबासोजाहिमेंगुण आता। करनसकैसोइकरलेमननहिंघड़काता॥ जय०॥४॥ तुमविनयज्ञनहोवेवस्त्रनहोयराता। खानपानकोविभवतुमैं बिनकुणदाता॥ जयल०॥५॥ शुभगुणसुंदरयुक्ताक्षीरनिधी जाता। रत्नचतुर्दशतोकूं कोइभीनहिंपाता॥ जयल०॥६॥ याआरतीलक्ष्मीजीकीजोकोइनरगाता। उरअनंदअति उमँगैपापउतरजाता॥ जयल०॥७॥ स्थिरचरजगतबचावै कर्मप्रेरल्याता। रामप्रतापमैयाकीशुभदृष्टीचाता॥ जय लक्ष्मीमाताजयलक्ष्मीमाता। तुमकोनिशिदिनसेवतहर विष्णूधाता॥ ८॥

इति श्रीलक्ष्मीजीकी आरती समाप्त।

अथ सत्यनारायणजीकी आरती प्रारंभ

जयलक्ष्मीरमणा श्रीलक्ष्मीरमणा॥ सत्यनारायण स्वामी जनपातकहरणा॥ जय०॥ टेर॥ रत्नजटित सिंहासनअद्भुतछबिराजै। नारदकरतनिराजनघंटाध्वनि बाजै॥ जयल०॥१॥ प्रगटभयेकलिकारणद्विजकूंदरश दिया। बुड्ढोब्राह्मणबनकैकंचनमहलकिया॥ जय०॥२॥ दुर्बलभीलकठारोजिनपरकृपाकरी। चंद्रचूड़यकराजा

जिनकीविपतिहरी ॥ जय० ॥३॥ वैश्यमनोरथपायोश्रद्धा तजदीनी । सोफलभोग्योप्रभुजीफेरस्तुतिकीनी ॥ जय० ॥४॥ भावभक्तिकेकारणछिनछिनरूपधरया । श्रद्धाधारण कीनीजिनकाकाजसरया ॥ जय० ॥५॥ ग्वालबालसंग राजावनमेंभक्तिकरी। मनवांछितफलदीनोंदीनदयालुहरी॥ जय० ॥६॥ चढ़तप्रसादसवायो कदलीफलमेवा। धूपदीप तुलसीसेराजीसतदेवा ॥ जय० ॥७॥ श्रीसत्यनारायणजीकी जोआरतीगावै । भणतमनसुखसंपतिमनवांछितपावै ॥ जय० ॥ ८ ॥

इति श्रीसत्यनारायणजीकी आरती समाप्त ।

अथ पार्वतीदेवीकी आरती प्रारम्भ

जयपार्वतीमाता जयपार्वतीमाता ॥ ब्रह्मसनातनदेवी शुभफलकीदाता ॥टेर॥ अलिकुलपद्म निवासीनिजसेवक त्राता ॥जगजीवनजगदंबाहरिहर गुणगाता ॥जय०॥१॥ सिंहजवाहनसाजे कुंडलहैसाथा ॥ देववधूजहँगावतनि-रतकरततथा ॥जयपा०॥२॥ सतयुगरूपशीलअतिसुंदर नामसतीकहाता॥ हेमाचलघरजनमीसखियन संगराता॥ जयपा०॥३॥ शुंभनिशुम्भविडारेहे माचलस्थाता॥ सहस्र भुजातनुधरकेचक्रलिया हाता ॥ जयपा०॥४॥ सृष्टिरूप

तुहिजननीशिव संगरंगराता॥ नंदीभृंगीबीनवहीपरचामद-
माता॥जयपा०॥५॥देवरअरजकरतहममनचितकूंलाता॥
गावतदेदेतालीमनमेंरंगछाता॥जयपा०॥६॥ श्रीपरताप-
आरतीमैयाकीजो कोइनर गाता॥ स्वर्गसुखीनितरहता
सुखसंपति पाता॥ जयपा० ॥७॥

इति पार्वतीजीकीआरतीसमाप्त

अथ आरतीजानकीनाथजीकी

जयजानकीनाथाजयश्रीरघुनाथा॥ दोउ करजोड़ेवि-
नऊंप्रभुमेरीसुनबाता ॥ टेर॥ तुमरघुनाथहमारेप्राणपिता
माता॥ तुमहोसजनसंगाती भक्तिमुक्तिदाता॥ जय०॥१॥
चौरासीप्रभु फंदछुटावोमेटोयमत्राता॥ निशिदिनप्रभुमो-
यराखोअपनेसंगसाथा॥ जय० ॥२॥ सीतारामलक्ष्मण
भरतशत्रुहनसंगचारोभैया॥ जगमगज्योतिविराजतशो-
भाअतिलहिया ॥जय० ॥ ३॥ हनुमतनादबजावतनेवर
टिमकाता॥ सुवरणथाल आरतीकरतकौशल्यामाता॥
जय०॥४॥ क्रीटमुकुटकरधनुषविराजतशोभाअतिभारी॥
मनीरामदरशनकोआशापलपलबलिहारी ॥जय० ॥५॥

इति जानकीनाथजीकीआरतीसमाप्त

अथ आरती लक्ष्मणबालाजीकी

जयबोलोसाधोलक्ष्मणबालाकी ॥ बालाकीवो नंदलालाकी ॥टेर॥ दक्षिणदेशसवालखपर्वत ॥ जगमगज्योति दिवालाकी ॥ ज० ॥१॥ त्रिपदांमेंसीतारामजीविराजैं ॥ चौकीहनुमतबालाकी ॥ ज० ॥२॥ शेषाचलपरआपविराजो॥चौकीहनुमतबालाकी॥ज०॥३॥इजय विजयदोउपौरियांविराजैं॥गरीधूसनगाराकी॥ज०॥४॥बालाजीकेरथपरकनकसिंहासन कलंगीबनीहीरालालाकी ॥ज०॥ ॥५॥ बृहस्पतिवारजरीकोजामो॥ ऊपरमौजदुशालाकी॥ ज०॥६॥ शुक्रवारदूधकोन्हावण॥मौजबनी मोहनमालाकी ॥ ज० ॥ ७ ॥ देशदेशकेयात्री आवैं ॥ मारपड़ैमृगछालाकी ॥ज० ॥८॥ आशानंदगरीबतुम्हारो॥ पतिराखोवोकंठीमालाकी॥ज०॥९॥ जयबोलोसाधोलक्ष्मणबालाकी ॥ बालाकीवोनंदलालाकी ॥ हरिहरिदशरथसुतनंदलालाकी ॥ हरिहरिपरदेशाँरखवालाकी ॥ हरिहरि घाटबाटरखवालाकी ॥ ज० ॥ १० ॥ इति ॥

अथ आरती श्रीराधावरकी

आरतिराधावरकी कीजै॥ युगलस्वरूपनयन भरपीजै॥ ॥ टेर ॥ रत्नजटितहाटककी आरति सुरभीघृतसुगंधमन-

भावति, करसरोजसे मातउतारति पुष्पवृष्टिअमृतरस भीजै ॥ आरति० ॥ इति ॥

अथ आरती श्रीरामचन्द्रजीकी प्रारम्भ

आरतिकरतजनककजोरे ॥ बड़ेभाग्यरामजी आये घरमोरे ॥टेर॥ सीतास्वयंबरधनुषचढ़ायो ॥ सबभूपनको गर्वनवायो ॥ आ० ॥ १ ॥ तोड़ेधनुष कियेदोयटुकड़ा ॥ रघुकुलहर्षरावणहोइशंका ॥ आ० ॥२॥ आइयोसीतासंग-सहेली ॥ हरषनिरख वरमालामेली ॥ आ० ॥३॥ गज-मोतिनकोचौकपुरायो ॥राजजनकघरमंगलगायो॥आ०॥ ॥ ४ ॥ कंचनथारकपूरकीबाती ॥ सुरनरमुनिहरिकेआये बराती ॥ आ०५॥ राजादशरथऔरजनकवैदेही ॥ भरत शत्रुहनपरमसनेही ॥ आ० ॥६॥ धनिधनिरामलक्ष्मण-दोउभाई। धनिदशरथकौशल्यामाई ॥ आ० ॥७॥ मिथि-लापुरमेंबजतबधाई॥ दास मुरारिकी आरतिगाई ॥ आ०-॥ ८ ॥

इति रामचन्द्रजीकीआरतीसमाप्त

अथ शिवजीकी आरती प्रारम्भ

शीशगंगअर्द्धंगपार्वतीसदाविराजतकैलासी ॥ नंदीभृं-

गीनृत्यकरतहैंगुणभक्तनशिवकीदासी ॥ १ ॥ शीतलमंद सुगंधपवनबहैबैठेहैंशिव अविनाशी॥ करतगानगंधर्वसप्त-सुरराागरागनीअतिगासी ॥२॥ यक्षरक्षभैरवजहँडोलतबो-लतहैंबनकेवासी ॥ कोयलशब्दसुनावतसुंदरभँवरकरतहैं गुंजासी ॥ ३ ॥ कल्पद्रुमअरुपारिजाततरुलागरहेहैंल-क्षासी। कामधेनुकोटिकजहँडोलतकरतफिरतहैंभिक्षासी॥ ॥४॥ सूर्यकांतसमपर्वतशोभित चंद्रकांतभवमीवासी ॥ छहोऋतूनितफलतरहतहैंपुष्पचढ़तहैंवर्षासी ॥५॥ देवमु-निजनकीभीड़पड़तहैं निगम रहतजोनितगासी ॥ ब्रह्मा-विष्णुजाकोध्यानधरतहैंकछु शिवहम कोफरमासी ॥६॥ ऋद्धिसिद्धिकेदाताशंकरसदाअनंदितसुखरासी॥ जिनको सुमिरनसेवाकरताटूट जाययमकीफांसी॥७॥ त्रिशूलधर-जीकोध्याननिरंतरमनलगायकरजोगासी ॥ दूरकरोविप-ताशिवतनुकीजन्मजन्मशिवपदपासी ॥ ८ ॥ कैलासी-काशीकेवासीअविनाशीमेरीसुधलीज्यो ॥ सेवकजानस-दाचरणनकोअपनोजानदरशदीज्यो ॥९॥ तुमतोप्रभुजी-सदासयानेअवगुणमेरेसब ढकियो ॥ सबअपराध क्षमा-कर शंकरकिंकरकी विनती सुनियो ॥१०॥ इति शिव-जीकी आरतीसमाप्त ॥

अथ पुनः आरती शिवजीकी

जैजैहेशिवपरंपराक्रमओंकारेश्वरतुवशरणं ॥ नमामि शंकरभवानिशंकरहरहरहरशंकरतुवशरणं ॥ टेरदशभुजमंडन पंचवदनशिवत्रिनयनशोभितशिवसुखदा ॥ जटाजूटशिर मुकुटविराजैश्रवणेकुंडलअतिरमणं ॥ जैजैहे० ॥१॥ ललाट चमकतरजनीनायकपन्नगभूषणगौरीशा ॥ त्रिशूलअंकुश गणपतिशोभाडमरूबाजतध्वनिमधुरा ॥ जैजै० ॥ २ ॥ भस्मविलेपनसर्वांगेशिवनन्दीवाहनअतिरमणा ॥ वामांगे गिरिजाहैविराजत घंटानादिकधुनिमधुरा ॥ जैजै० ॥३॥ गजचर्मांबरबाघंबरहरकपालमालगंगेशा ॥ पंचवदनपर गणपतिशोभापृष्ठेगिरिपतिज्वालेशा ॥ जैजैहे० ॥ ४ ॥ सिद्धेश्वरममलेश्वरशंकरकपिलेश्वरश्रीकोटेशा ॥ कपिला संगमनिर्मलजलहैकोटितीरथेभयहरणा ॥ जैजैहे० ॥५॥ नर्मदकावेरीजलसंगममध्येशोभितगिरिशिखरा ॥ इंद्रा- दिकपतिसुरपतिसेवितरंभाआदिकध्वनिमधुरा ॥ जैजैहे० ॥६॥ मंगलमूर्तिप्रणवाष्टकशिवअद्भुतशोभामृडभवनं ॥ सनकादिकमुनिकरतेस्तोत्रंमनवांछितशिवभयहरणं ॥ जैजै हे० ॥७॥ प्रणवाष्टकपदध्यायजनेश्वररचयतिविमलंपद वाष्टं ॥ तवकृपयात्रिगुणात्मा शिवजीपतितनपावनभय हरणं ॥ जैजैहे० ॥ इति शिवजीकी आरती समाप्त ॥

अथ पुनः आरती शिवजीकी

दर्शनदेवोसदाशिवशंभूभक्तवत्सलतेरानागहवे॥ मस्तक तेरेचन्द्रविराजैशीशमध्यमेंगंगहवे ॥ टेर ॥ नाथहाथलिये डमरुबजावेभुजंगहृदयपरसाजहवे । तीनकोटिसवालक्ष हजारेगणतेरेसन्मुखनाचहवे ॥ दर्श० ॥ १ ॥ हाथत्रिशूल लियाभोलेशंभूवामांगगवरीसाजहवे । भस्मरमावतअंगतू सारेगलेरुंडमालाराजहवे ॥ दर्श० ॥२॥ कोउत्रिबंकेकोउ अंगलंबेकाहुकेवसनउघारेहवे । काहुकेकेशवनेअतिपीरे रक्तरंगकोउकालेहवे ॥ दर्शन० ॥ ३ ॥ आसनतेराकैलास विराजतलहरीलींगंगाजहवे। भांगधतूरोसदारहैखातातल बाघंबरसाजहवे ॥ दर्शन० ॥ ४ ॥ नारदइंद्रदेवसबदानव आरतीतेरोगावहवे । असीहिमानुषगावसुनेजेमनवांछित फलपावहवे॥ दर्शन०॥५॥ रूपकहैकरजोरसदाशिवमोरे मनोरथकीजेहवे । गुरुचरणोंमेंप्रीतिरहोनितवचनसफल मेराकीजेहवे ॥ ६ ॥ दर्शनदेवोस० ॥

इति श्रीशिवजीकी आरती समाप्त ।

अथ आरती श्रीदुर्गाजीकी

मंगलकीसेवासुनमेरीदेवाहाथजोड़तेरेद्वारखड़े । पान सुपारीध्वजाखोपरा लेज्वालातेरेभेंटधरे॥ सुणजगदंबेकर

नविलंबेसंतनकाभंडारभरे। संतनप्रतिपालीसदाखुस्याली जैकालीकल्याणकरे ॥ टेर ॥ बुद्धिविधातातूजगमातामेरा कारजसिद्धकरे॥चरणकमलकालियाआसराशरणतुम्हारी आनपरे।जबजबभीड़पड़ेभक्तनपरतबतबआयसहायकरे॥ संतन० ॥१॥ बारबारतैंसबजगमोह्योतरुणीरूपअनूपधरे। माताहोकरपुत्रखिलावेकहींभारज्याभोगकरे॥ संत०॥२॥ संतनसुखदाईसदासहाईसंतखड़ेजयकारकरे। ब्रह्माविष्णु महेशसहसफणलियेभेंटतेरेद्वारखड़े॥ अटलसिंहासनबैठी माताशिरसोनेकाछत्रफिरे ॥ संत० ॥ ३ ॥ वारशनिश्चर कुंकुमवरणोजबलुंकडपरहुकुमकरे। खड्गखप्रतिरशूलहाथ लियारक्तबीजकूंपकड़दला ॥ संतन० ॥४॥ आदितवार आदकोबीराजनअपनेकोकष्टहरे ॥ कोपहोयकरदानोमारे चंडमुंडसबचूर करे॥जबतुमदेखोदयारूपहोयपलमेंसंकट दूरकरे ॥ संत०॥५॥ सौमस्वभावधरचोमेरीमाताजनकी अरजकबूलकरे ॥ सिंहपीठपरचढ़ीभवानी अटलभवनमें राज्यकरे ॥ दर्शनपावेंमंगलगावें सिद्धसाधतेरेभेंटधरे ॥ संतन० ॥६॥ ब्रह्मावेदपढ़ैतेरेद्वारेशिवशंकरजीध्यानधरे ॥ इंद्रकृष्णतेरीकरैंआरतीचमरकुबेरढुलायरहे ॥ जयजननी जयमातुभवानीअटलभवनमेंराज्यकरे ॥ संतन० ॥७॥

इति श्रीदुर्गाजीकी आरती समाप्त ।

अथ पुनः आरती दुर्गाजीकी प्रारंभ

सुनमेरीदेवीपर्वतवासिनितेरापारनपाया ॥ टेर ॥ पान सुपारीध्वजानारियललेतेरीभेंटचढ़ाया ॥ सुन० ॥ १ ॥ सुवाचोलातेरेअंगबिराजे । केसरतिलकलगाया ॥ सुन० ॥२॥ ब्रह्मावेदपढ़ेतेरेद्वारे शंकरध्यानलगाया ॥ सुन० ॥३॥ नंगेपगतेरेअकबरआया । सोनेकाछत्रचढ़ाया ॥ सुन० ॥४॥ ऊँचऊँचपर्वतबण्योदिवालो । नीचेशहरबसाया ॥ सुन० ॥५॥ कलियुगद्वापरत्रेतामध्ये । कलियुगराजसवाया ॥ सुन० ॥६॥ धूपदीपनैवेद्यआरती । मोहनभोगलगाया ॥ सुन० ॥ ७ ॥ धानूभगतमैयातेरागुणगावे । मनवांछित फलपाया ॥ सुन० ॥ ८ ॥

इति श्रीदुर्गाजीकी आरती समाप्त ।

अथ बज्जरङ्गबालाकी आरती

जाकेबलसेगिरिवरकंपै ॥ देवपिशाचनिकटनहिंझंपै ॥ आरतीकीजेहनुमानललाकी ॥ दुष्टदलनरघुनाथकलाकी ॥ टेर ॥ लंकासेकोटसमुद्रसी खाई ॥ जातपवनसुतबारन लाई ॥१॥ आर० ॥ देबीड़ारघुनाथपठाये ॥ लंकाजारि सियासुधिल्याये ॥आर० ॥२॥ जगमगज्योतिअवधपुर

राजा। घंटातालपखाउजबाजा ॥ आर० ॥ ३ ॥ शक्ती बाणलगोलक्ष्मणको॥आनसजीवनलषणजिवाये॥आर० ॥ ४ ॥ पैठपतालतोड़यमकातर ॥ अहिरावणकीभुजाउखाड़े ॥ आ० ॥५॥ आरति कीजेजैसीतैसी ॥ ध्रुवप्रह्लाद बिभीषणजैसी ॥ आर० ॥ ६ ॥ सुरनरमुनिजनआरति उतारें ॥ जैजैजैकपिराजउचारें ॥ आ० ॥७॥ कंचनथाल कपूरसुहाई ॥ आरति करतअंजनीमाई ॥ आर० ॥८॥ बांईभुजासेअसुरसँहारे॥दहनीभुजसुरसंतउधारे ॥आर० ॥९॥ लंकप्रजारअसुरसबमारे ॥ राजा रामजीकेकारज सारे ॥ आर० ॥१०॥ अंजनि पुत्रमहाबलदायक ॥ देव संतकेसदासहायक ॥ आर० ॥११॥ लंकविध्वंसनसिया रघुराई ॥ तुलसि दासकपिआरतीगाई ॥१२॥ आर० ॥ जोहनुमानजीकीआरतिगावै ॥ बस वैकुंठ बहुरिनहिं आवै ॥ इति आरतिहनुमानजीकी समाप्त ॥१३॥

अथ आरतीजगन्नाथजीकी

आरतीश्रीजगन्नाथमंगलाकरी ॥ परसतचरणाविन्द आपदाहरी ॥ निरखतमुखाविंदआपदा हरी ॥ कंचनमन धूपध्यानज्योतिजगमगी ॥ अग्नि कुण्डलघिरतपावपाव साथरी ॥ आर० ॥ १ ॥ दमनद्वारेठाढ़ेरोहिणी ॥ मार्कंडे-

श्वेतगंगाआन कभरी ॥ आर० ॥२॥ गरुड़खंबसिंहपौर यात्राजुड़ी ॥ यात्राकीभीड़बहुतबेतकीघड़ी ॥ आर० ॥३॥ सुरनरमुनिद्वारेठाढ़ैब्रह्मावेदउचारी ॥ धन्यधन्यसूर श्याम आजकीघड़ी ॥ आर० ॥४॥ इति ॥

अथ आरतीशिवजीकी

कैलासीकाशीकेवासीअबिनाशीमेरीसुधिलीजे ॥ सेवक शरणसदाचरणनकोअपनोजानिकृपाकीजे अभयदानदीजेप्रभुमोरेसकलसृष्टिकेहितकारी ॥ भोलेनाथतुमभक्तनिरंजनभवभंजन भवशुभकारी दीनदयालुकृपालकालरिपु अलखनिरंजनशिवयोगी ॥ मंगलरूपअनूपछवीलेअखिल भुवन केतुमभोगी ॥ बांवोअंगरंगरसभीनोउमावदनकी छबिन्यारी ॥ भोलेनाथ० ॥१॥ असुरनिकंदनसबदुख भंजनवेदबखानेजगजाने ॥ रूंडमाल गलब्यालभालशशि नीलकंठलियामनमाने ॥ गंगाधरत्रिशूलधरविषधरबांध वरधगगिरिधारी ॥ भोले० ॥२॥ योभवसागरअतिअगाध हैपारउतर कैसेसूजे ॥ यामेंग्राहमगरबहुकच्छपयोमारग कैसे सूजै ॥ नामतुम्हारोनौकानिर्मलतुमकेवटशिवअधिकारी ॥ भोलेना० ॥३॥ मैं जानूँतुमनिपटसयाने अवगुण मेरेसबढकियो ॥ सबअपराधक्षमाकरशंकरकिंकरकीविन-

तीमुनियो ॥ तुमतोजगकेकल्पतरू होमैंहोंप्राणीसंसारी॥ भोलेना० ॥४॥ कामक्रोध योमहाअपरबलइनसेमेरोबस नाइँ ॥ लोभमोहयों सँगनहिंछाँड़ेआनदेतनहिंतुमताईं ॥ क्षुधातृषा नितलगीरहतहैताऊपरतृष्णाभारी॥ भोलेना०॥ ॥५॥ तुमहींशिवजीकर्त्ताहर्त्तातुमहीयुगकेरखवारे॥ तुमहीं गगनमगनपुनिपृथिवीपर्वतपुत्रीके प्यारे। तुमहींपवनहु-तासनशिवजीतुमहींदिन करशशिहारे ॥ भोलेना० ॥६॥ पशुपतिअजरअमरअमरेश्वर योगेश्वरशिवगोस्वामी ॥ वृषभारूढ़ गूढ़गुरुगिरिपतिगिरिजावल्लभनिष्कामी ॥ शोभा सागररूपउजागरगावतहैंसबनरनारी ॥ भोले०॥ ॥७॥ महादेवदेवनकेअधिपतिफणिपतिभूषण अतिसाजे॥ दीप्तलिलाटलालदोउलोचनजिनकेउरताडुखभाजे॥ परम पुनीतपुनीतपुरातन महिमात्रिभुवनविस्तारी॥ भोलेना० ॥ ८ ॥ ब्रह्माविष्णुमहेशशेषमुनिनारदआदिकरतसेवा ॥ जिनकीइच्छापूरणकीन्हीनाथसनातनहरदेवा ॥ भक्तिमु-क्तिकेदाताशंकरसदानिरंतरसुखराशी ॥ भोलेना० ॥९॥ महिमाइष्टमहेश्वरजीकीसिखेमुनेजेंनितगावें ॥ अष्टसिद्धि नौनिधिसुखसंपतिस्वामिभक्तिमुक्तीपावें ॥ श्रीअहिभूषण प्रसन्न होयकरकृपाकरोशिवत्रिपुरारी ॥ भोलेना० ॥१०॥

अथ आरतीबजरंगबालाकी

आरती कीजै हनुमानजी ललाकी॥ दुष्ट दलन रघु-नाथकलाकी ॥ टेक॥ जाके बलसे गिरिवर कांपे । रोग दोष जाके निकट न झांके ॥ १ ॥ अंजनी पुत्र महाबल दाई ॥ संतनके प्रभु सदा सहाई ॥२॥ दे वीरा रघुनाथ पठाये। लंका जारि सिया सुधि लाये ॥३॥ लंका ऐसे कोट समुद्र ऐसी खाई॥ जात पवनसुत बार न लाई॥४॥ लंका जारि असुर सब मारे। सीता रामजीके काज सँवारे ॥५॥ लक्ष्मण मुरछि परे धरणीमें॥ आनि सजीवनि प्राण उबारे॥६॥ पैठि पताल तोरि यमकातर॥ अहिरावणके भुजा उखारे ॥७॥ बायेंभुजा सब असुर सँहारे। दहिने भुजा सब संत उबारे ॥८॥ सुर नर मुनि जन आरति उतारैं ॥ जै जै जै हनुमानजी उचारैं ॥ ९ ॥ कंचनथार कपूरकी बाती॥ आरति करति अंजनी माई॥१०॥ जो हनुमानजीकी आरती गावैं। बसि बैकुंठ अमर पद पावैं ॥११॥ लंकविध्वंस किये रघुराई ॥ तुलसीदास स्वामी आरति गाई ॥१२॥

अथ आरती रामचन्द्रजीकी

आरती कीजै राजा रामचंद्रजीकी। हरि हरि दुष्ट दलन

सीतापतिजीकी ॥ टेक॥ पहिली आरति पुष्पकी माला । कालीनाग नाथ लाये गोपाला ॥ १ ॥ दुसरी आरती देवकिनंदन । भक्तउधारन कंसनिकंदन ॥ २ ॥ तिसरी आरती त्रिभुवन मोहै । रत्नसिंहासन सीतारामको सोहै ॥३॥ चौथी आरति चहुँयुग पूजा । देवनिरंजन स्वामी और न दूजा ॥ ४ ॥ पंचमी आरति रामजीको भावै । रामजीको यश नामदेवजी गावै ॥ ५ ॥

पुनः आरती श्रीरामचन्द्रजीकी

सखी आरती करी रसप्रेम भरी । सिया रघुवरजीको शृंगार करी ॥ टेक ॥ मणिमय थार सखिन कर राजैं बाती रवि शशि द्युति निंदरी ॥१॥ बाजत हैं भेरी निसान दुंदुभी शंख झांझ करताल घरी ॥२॥ नाचत गान करत हैं सखि थेइ थेइ सुमन लाल मणि होत झरी ॥३॥ रामचरण सिय राम रूप लखि आनँद उर रससिंधु भरी ॥ ४ ॥

आरती श्रीवेङ्कटेशजीकी

श्रीमच्छेषशैलवासं । नीराजयेश्रीनिवासम् ॥ त्रातः स्वपदपद्मदासं । नीरदभव्यदिव्यभासं॥नी०॥ बिभ्राणंसत रविप्रतिभटं । हरिखचितचामीकरमुकुटं ॥ भृंगप्रभकुटि-

लालकजालं। केसरमृगमदतिलकितभालं॥ भ्रूविभ्रमकृत कार्मुकजयनं । इंदीवरदलविशालनयनं ॥ तिलकुसुम प्रतिमोत्तमनासं। बिंबविडंबकृताधरवासं ॥ स्निग्धामल-तलगंडमंडलं । कर्णयुगार्पितमकरकुंडलम् ॥ शारदचंद्र मनोहरवदनं। कुंदसुन्दरप्रभाग्ररदनं॥ स्वजनानुग्रहशुचि मंदहासं । नीराजयेश्रीनिवासं ॥ १ ॥ कंबुकंठमतिपीन स्कंधं। दृगगोचरजत्रुस्थलबंधं॥ चंदनचर्चितविशालबाहुं। अभयवरारिदरायुधबाहुं ॥ धृतकनकांगदकटकतोडरं । विदलितहरिकणप्रभनखरं ॥ श्रीवत्सश्रीहृदयकपाटं । विद्युत्पिञ्जरचित्रितशाटं॥ उरःपीठलुठदुरुतरहारं।त्रिबलि-बंधुरिततुंदिलजठरं ॥ पारिजातनवसुमनोमालं । नाभि-जातचतुराननबालं ॥ कटितटसुघटितपीतपटन्यासं ॥ नीराजये० ॥२॥ सौरभलुभ्यद्भ्रमरकदंबं । मणिशृंखल परिरंभिनितंबं॥ परमरुचिरपीवरोरुबंधं । जानुमतिपेशल जंघं॥वलयकलितघनकनकतोडरं। मंजुमंजुसिंजाननूपुरं॥ मृदुलपार्ष्णिसरजांगुलितरणं। दुस्तरतरभवसागरतरणं॥ विलसन्नखमणिपूर्णचंद्रिकं । निरस्तवनितानादितंद्रिकं ॥ श्रीभूदेवीचमरवीजितं। नारदसुखसनकादिपूजितम्॥ पंत विठ्ठलत्रासगणग्रासं । नीराजयेश्रीनिवासम् ॥ ३ ॥

अथ रघुनाथजीकी आरती

आज बनी छबि भारी श्रीराघवजीकी ॥टेक॥ सहित जानकी रत्नसिंहासन राजत अवध बिहारी ॥१॥ रवि शशि कोटि देखि छबि लाजे तिलक पटल द्युतिकारी॥ वदन मयंक ताप त्रयमोचन मंद हासरसन्यारी ॥ २ ॥ बांये अंग जानकीजी सोहैं हनुमत आज्ञाकारी । गौरी श्याम सुन्दर तनुसोहै चंद्रवदन उजियारी ॥ ३॥ रत्न जटित आभूषण सोहैं मोतिनकी छबि न्यारी ॥ कीट मुकुट मकराकृत कुंडल औ वनमाल सोहारी ॥४॥ बाहु विशाल विभूषण सुन्दर करगहि सारँगधारी । कटिपर पीत वसनकी शोभा मोहत मदननिहारी ॥५॥ मुनिजन चरणसरोरुह सेवत ध्यान धरत त्रिपुरारी ॥ चतुरसखी मिलिकरत आरती सज कंचनकीथारी ॥६॥ रामसेवक जयध्वनि उचरत गावत पुर नर नारी॥ मातु कौशिला करै आरती तुलसिदास बलिहारी ॥७॥

इति आरतीसंग्रह समाप्त

अथ रामजीकी गौरी

जानकीजीवनकी बलि जैहौं ॥टेक॥ चितकहै रामसियापदपरिहरि अब न कहुँ चलिजैहों ॥ १ ॥ उपजी उर प्रतीति प्रति सपने हरिपद विमुख न हैहों ॥ मनसमेत यह तनकेवासी यही सिखावनदैहों ॥२॥ श्रवणन और कथा नहिं सुनि हौं रसना और न गैहौं ॥ रोकिहौंनयन विलोकत औरहि शीश ईशपद नैहों ॥ ३ ॥ नातो नेह राम से करि सब नातो नेह निबैहों॥ यह छरभार ताहि को तुलसी जगतको दास कहैहों ॥४॥ इति॥

राग गौरी

अयोध्या राजत भूमिकन की ॥टेक॥ रंग भूमि राजत रघुनन्दन संगलिये सुता जनककी ॥ रविशशि कोटि उदित हम देखे जोड़ी बनीहै जनककी ॥ १ ॥ रघुवर लक्ष्मण भरत शत्रुहन सन्मुखहैं हनुमानबलीकी ॥ मातु कौशिला करत आरती जय जय श्रीरघुवरकी॥२॥ ठुमकि ठुमकि महलनमें विहरत झुमक झुमक नूपुरकी ॥ कृपा निवाज कहांलगि वरणौं महिमा अवध नगरकी ॥ ३ ॥

रागगौरी

बोलत मधुरीबानीरघुबर बो० ॥टेक॥ क्रीट मुकुट मकराकृत कुण्डल छबि नहिं जात बखानी। हम सरयू जल भरन जात रही बीच रामरस सानी ॥१॥ बाणकमानभ्रुकुटिके लोचन मारत तकि तकि तानी ॥ घूँघुट मेरो छूटगयोहै लाज छोड़ि मुसकानी ॥२॥ अमरनारिनरमिले अवधके ये सब फिरत हैं सानी ॥ लोग कुटुँब अब मोहिं नहिं भावै दशरथसुत रससानी ॥ ३ ॥ रघुवर लक्ष्मण भरत शत्रुहन दशरथ राजदुलारी ॥ राम सखी कौशलपुर जीवन रघुवर हाथ विकानी ॥४॥

अथ देवीअष्टकप्रारम्भ

ना कछु मन्त्रन यन्त्र ना अहै सु प्रार्थना ॥ ध्यान ज्ञान यज्ञ जाप साधना नहीं धना ॥ ना अहै सुशक्ति भक्ति ना तुम्हार थापना ॥ त्राहि मातु अम्बमोहि नहिं और कामना ॥१॥ नाविधी न अर्थ धर्म ज्ञानना सुवासना ॥ हों अशक्य कीन नाहिं मातु तौ उपासना ॥ सर्व पूज्यपाप पद्मराखती कृपाघना ॥ होतमा कुपुत्र अत्रकापिना सुनी कुमा ॥२॥ अत्र मा जगत्र बीच पुत्रऽनेक आपके॥ मैं न काजकरि देव पुत्र माय बापके ॥ त्याग

मोर नाहिं युक्त मातुयौं कथैंजना॥ होत मा कुपुत्र अत्र
क्वापिना सुनी कुमा ॥३॥ कामता न कीन जासु शक्ति
मुक्ति पाइ हौं ॥ द्रव्यनादियाकछूघमण्ड जासुलाइ हौं॥
लाज होत शोचि आप जो दयाकारी घना ॥ होतमा
कुपुत्र अत्रक्वापिना सुनी कुमा ॥४॥ भस्म तो चिता
कुलेप लेपते सदारहैं॥ त्रिक्खको अहार हार सर्प्पको गले
गहैं॥ भूत प्रेत साथ विक्कराल जो जटा गहैं॥ आपके
पती भयेजगत्रके पती अहैं ॥५॥ ज्ञानना मृगाक्षि भोग
मोहिमा सुहावता॥ मोक्षना चहूँ न वित्त चित्तको लुभा-
वता ॥ प्रार्थना यही भवानि शम्भुरानि जप्यते ॥ वीति
जाहु जन्ममोर हे महेशि झप्पते ॥६॥ दुःखके भये करौं
अराधना महेश्वरी ॥ नागनौ शठत्व जौ भिवातयान है
खरी ॥ बालभूखपाइके करै पुकार मातुमा ॥ होतमा
कुपुत्र अत्र क्वापिना सुनी कुमा ॥७॥ अत्र क्या विचित्र
अम्ब जो करौ कृपा घनी॥ जो करै अनेक दोष बालना
तजैजनी॥ पातकी कुपुत्र दोष आशुही छमै सुमा। होतमा
कुपुत्र अत्रक्वापिना सुनीकुमा॥८॥ देखि देवि अप्पराध
मंजनं स्तनं महत् ॥ कीन्ह अष्टपद्य देवि प्रार्थना भरी-

लसत्॥ जो पढ़ै सुनै सुभक्ति मुक्ति सो लहै बृहत्॥ यों विचारिकै कृपा बिहारि नम्रह्वै कहत् ॥९॥

इति देवीअष्टकसमाप्तम्

अथ रुद्राष्टकप्रारम्भः

॥छन्दभुजंगप्रयात॥ नमामीशमीशाननिर्वाणरूपम् । विभुंव्यापकंब्रह्मवेदस्वरूपम् ॥ निजंनिर्गुणंनिर्विकल्पंनिरीहम्। चिदाकारमाकाशवासंभजेहम्॥१॥ निराकारमोंकार मूलंतुरीयम् । गिराज्ञानगोतीतमीशंगिरीशम् ॥ करालं महाकालकालंकृपालुम्। गुणागारसंसारपारंनतोहम्॥२॥ तुषाराद्रिसंकाशगौरंगभीरम्। मनोभूतकोटिप्रभाश्रीशरीरम् ॥ स्फुरन्मौलिकल्लोलिनीचारुगंगा। लसद्भालबालेंदु कंठेभुजंगा ॥३॥ चलत्कुंडलंभ्रूसुनेत्रंविशालम्। प्रसन्नाननंनीलकंठंदयालुम् ॥ मृगाधीशचर्माम्बरंमुंडमालम् । प्रियंशंकरंसर्वनाथंभजामि ॥ ४ ॥ प्रचंडंप्रकृष्टंप्रगल्भंपरेशम् । अखंडंअजंभानुको।िप्रकाशम् ॥ त्रिशूलाग्निनिर्मूलनंशूलपाणिं। भजेहंभवानीपतिंभावगम्यम्॥५॥ कलातीतकल्यानकल्पांतकारिम्। सदासज्जनानंददातापुरारिम् ॥

चिदानंदसंदोहमोहापहारिम् । प्रसीदप्रसीदप्रभोमन्मथा-
रिम् ॥ ६ ॥ नयावदुमानाथपादारविंदम् । भजंतीहलो
केपरंवानराणाम् ॥ नतावत्सुखंशांतिसंतापनाशम् । प्रसी-
दप्रभो सर्व भूताधिवासम् ॥ ७ ॥ नजानामियोगंजपंनैव
पूजाम् । नतोऽहंसदासर्वदाशंभुतुभ्यम् ॥ जराजन्मदुःखौ
घतातप्यमानम् । प्रभोपाहिआपन्नमामीशशंभो ॥ ८ ॥ श्लोक ॥
रुद्राष्टकमिदंप्रोक्तंविप्रेणहरतुष्टये । येपठंतिनरोभक्त्यातेषां
शंभुःप्रसीदति ॥ ९ ॥

इतिरुद्राष्टकंसमाप्तम्

पेटरत्न-रोलाछन्द

तोले पांच सोंठ अजमोदा तोला तीन मँगावै । अज-
वायन दो तोला लैकै तोलानमक रलावै ॥ तोलाचार
पीपली कूटै हरडैं पन्द्रा तोला । कूट छान चूर्ण जो
फाँकै कटै पेटकागोला ॥ उदरा मयगुड़गुड़ अरु पीड़ा
विडको तुर्त घटावै । कृष्णविहारी नीत जो खावै निर्मल-
काया पावै ॥ इति ॥

भरणीदिक्शूलनिवारण

रविकोपान सोमकोदर्पन, मंगलको गुड़ करिये अर्पन ।
बुद्धैंधनियां, बेफैजीर ॥ शुक्रकहै मोहिं दहीकी पीर ॥

कहत शनैश्चर अदरख पावों ॥ सुख सम्पति निरोगघर-लावों । नामाने भरणी दिकशूल ॥ कहैं व्यास सब चकनाचूर ॥ इति ॥

स्तुति दयालु देवीजीकी-छंद

जय जय दयालुदेवी माता जयजयदयालुदेवीमाता। अष्टसिद्धि नवनिधिकीदाता अखिल लोकविख्याता ॥ जग भरनी मन आनँद करनी हरनी विपति वरूथिनी। मध्य भूमि शुचिठाम बदरका ग्राम विलसिनि महरानी॥ उत्तरदिशा वसै बहुवस्तीअंत अनंदीहैं माता । अष्टसिद्धि नवनिधिकी दाता अखिल लोक विख्याता ॥१॥ पासहि स्वच्छसरोवर सोभित घनी बाग छबि आलीहै । बना-शिवाला महादेवका रक्षा आप शम्हाली है ॥ पूरुबपुर निर्म्मल बस्तीहै कान्यकुब्जबालाके शुक्ल । पूजाकरते माता तुमरीतेहते पूजत हैं सब मुल्क ॥ जगजननीश्रीमातु कालिका राजतपुरपूरबख्याता । अष्टसिद्धिनवनिधि कीदाता अखिल लोक विख्याता ॥२॥ जगतवंदआनंद कंद रघुनंद धाम अति स्वच्छ बना । पूजत हित नर नारि सुचित चित लहत मनोरथ चित्त ठना ॥ कृष्णचंद्र आनंदकंद बलभद्र सुभद्राईश्वररूप । परमपवित्र पुरातन

प्रतिभा श्याम अङ्ग नहीं जगत्त द्रूप ॥ वंशीधरके दर्शनकरते करते सुख हैं अधिकाता । अष्टसिद्धि नवनिधिके दाता अखिल लोक विख्याता ॥३॥ जह्नुसुता गंगाकी धारा बहती दक्षिण द्वारेहै । भक्ततंतकी कौन कहै अधमोंको भी उद्धारे है ॥ विमलतड़ाग बाग सेवाला हैं हरदेव देव प्रतिपाल । कृष्णबिहारीशुक्ल पर कृपाकरते आप दयाल ॥ पश्चिम सुदर्शनी जग जननी इकलेही करती त्राता॥ अष्टसिद्धि नवनिधिकी दाताअखिल लोक विख्याता ॥ ४ ॥ इति ॥

हिंडोललीला

सघन वन झूलैं दोउ सुकुमार ॥ टेक ॥ हिय हरषत छबि निरख परस्पर छिनछिन बाढ़त प्यार । कबहुँ मुदित मन तान लेत मिल होत सखी बलिहार ॥ नारायण द्रुम बेलि सुहावनि हरी कियौश्रृंगार ॥

होरीलीला

डगर मोरी छाँड़ो श्याम बिंध जाओगे नयननमें । भूल जाओगो सब चतुराई लाला मारूंगी सैननमें ॥ जो

तेरे मनमें होरी खेलनकी तो लेचल कुंजनमें । चोवाचंदन और अर्गजा छिरकूं फागुनमें ॥ चन्द्रसखी भज बालकृष्ण छबि लागीहै तन मनमें ॥

अथ श्रीयुगलविहारलावनी प्रारम्भ

आधिरातकेविषे कृष्ण राधाकेभवनको जातेभये ॥ करसरोजसे जाय द्वारके पट कपाट खटकाते भये॥टेर॥ चौंक उठी वृषभानुनंदिनी कौन मेरे द्वारे आया ॥ नाम बतावोआयकर मुझकूंनींदसे जागाया । परस्थानमें धसे आन तुम जरा न मन धासतलाया ॥ फिरो दिवाना-दिवाना हो किसीका भरमाया । मधुर वचन सुनके राधेके श्रीकृष्ण समझातेभये ॥ कर० ॥ १ ॥ माधो नामहैमेरा जगतमें तेरे पास आया हूं अली कहै । राधिका शरदमें ऋतुवसंत नहिं लाग भली ॥ ऋतु वसंत नहिं जान प्रिया मैं चक्रीहूंतू जान अली । चक्री हो तो यहांसे सरको कुलालकी तुम पूछो गली ॥ धरणीधर कहतेहैं मुझको वेद नीतिमें गाते भये ॥ कर० ॥ २ ॥ जानगई तुम शेषनागहो सहस्रशीश तनकेकारा । शेष-नहींमैं प्रियाहूं सर्पनको मारनहारा ॥ शेष नहीं तो गरुड़ होगया विनताकी करो प्रतिपाला । प्रिया हरि हूँ मेराहै

सारे जगतमें उजियाला ॥ सूर्य होकर स्वर्ग छाड़के मेरे भवन क्यूं आतेभये ॥ कर० ॥ ३ ॥ कृष्णकृष्णको कृष्णचद्रने तीन बेर उच्चार किया । उठि राधिका दिये पट खोल गलेका हार किया ॥ मूलचंद्रपै कृपाकरो री जिसने ये बीहार किया । भक्त जनोंका हरीने छिनमें बेड़ा पार किया ॥ तुर्रांके सुनके जवाब कलँगीके होस उड़जाते भये ॥ क० ॥ ४ ॥

इति श्रीयुगलविहारलावनी समाप्त

अथ मनिहारिनलीला-लावनी

श्रीकृष्ण नन्दजीके नन्दनने धरावेष मनिहारनका । आप हरीजहँ गये तहाँपर बहुत झुंड ब्रजनारिनका ॥टेर॥ पहरजनानावेषहरीने रचिरचिकै शृंगार करो ॥ हंसुली और हमेलगलेबिच झल झल झलकत पनाहरो । ठटगुजराती सजाघांघरा ओढ़नदक्षिणी चीरखरो ॥ रविशशि कोटिबदनकीशोभाऐसाहरिने रूपधरो । कुचाग्रनायकै आटीचोली औरकुतरता। फुलक्यारिनका ॥आप०॥१॥ श्रीकृष्णजी फिरैंपूँछतेकोइचुरियापहनोगीखरी । काली पीली जरदजंगालीसुरखसोसन्याऔरहरी ॥ एकसखी

यूँबढ़करबोलीअरीआवतूमनिहारी ।चुड़िया मोतीचूरक-ड़ाबन्दल्याईतोपहनाज्यारी ॥ मुख मांगेलेवोदामहमेंकूं-मुठाबतारीमोलभारिनका ॥ आप० ॥२॥ श्रीकृष्णपहराने लागेपहरैराधासहेलनी । करछूतेतनुमारछिपैनहिंलखगइ राधापहेलनी ॥ राधामुखमुसकायकहैफेरपूछोरीसखियां अकेलनी । फिरीजांयचौफेरकृष्णकेजितनीथीं सबनवे-लनी ॥ हरलीयाइनमानकियाअमानसखीसबसारिनका । आप० ॥ ३ ॥ अनेकछल बलकियेकृष्णने सबसखियां छलनेखातर । कहांलगकोईसिफतकरैंगेतुमकन्नगिरिकहते चातुर । छलमनब्राह्मणधर्मांकहतेबैठोसायरमतहोआतुर ॥ जसूलालकेचंगकेऊपरनिरतकरै परवायातुर । लहैगुणीजै रामभारतीयचंगपरतुर्ग तारका ॥ आप० ॥ ४ ॥

॥ इतिमनिहारिनलीलासमाप्त ॥

पावस विरहिनी

कवित्त—आयो पुनि पावस अमावस निशा भोदिन छिन बिन प्यारे केहि भांतिन बिताय हौं किरचै करे-जाहूंकी कोकिलैं करनलागीं मोर शोर सुनि किमि चित्त

ठहरायहौं । बेदरदी बैरी बद बदरा बड़ेई बुरे नितप्रति तासों प्राण कैसेकै बचायहौं । परत न एको पल बिन कृष्णप्यारीकलहायकाकेगरेलागितपनिमिटायहौं॥ १२॥

विरहिनी विलाप

कैधों वहि देशमें घुमड़िघन घेरे नाहिं कैधों वहि देश दामिनीहू नाहिं दमकै।कैधों वहि देशमें न बरसत बारिदहूँ रामपरताप कैधों झिल्लिहू न झमकै॥ कैधों वहिदेशमें न बहति बयार कहूँ मन्द मन्द शीतल सुगंध भरी रमकै। कैधों वहि देशमें पपीहराहू पीउ पीउ टेर दैदै पीउको चितावै ना उधमकै ॥ १ ॥ इति ॥

पुरुषोपकारार्थ पशुबुद्धि

जयकरी छन्द

सिंह, बकुल, कुक्कुट, अरु काग श्वान गर्दभी बुद्धिविभाग । क्रमशः गुण इनके लैलेहु ॥ गुणग्राही अवगुण तजिदेहु । यकगुणहै उत्तम वनराज ॥ सब विधि सारत आपन काज । प्रबलशत्रुपर मारत धावा ॥ करन योगपर विलँब न लावा । बकुला में उत्तम गुण एक ॥ सीखहु सज्जन तजि अविवेक । सबइन्द्रिनकर संयम

करो ॥ देश कालबल हृदये धरो । बकुल समान काजको साधो ॥ मीन मिलनहितचुप्पी बाँधो। कुक्कुटचारिबात शिरताजा ॥ उचित समयजागतरणगाजा । बन्धुन भाग देत सुख पावै । आप आक्रमण करि २ खावै ॥ कागासे सीखहु गुण पंच । छिपकर मैथुन संग्रह रंच ॥ सावधान निशि वासर रहै । पर विश्वास क्षणक नहिं चहै ॥ कूकुर षटगुण माहिं प्रधाना । स्वामिभक्त शूरता निदाना ॥ भोजन शक्ति अधिक तनु माहीं । स्वल्पहु मिलि संतुष्ट रहाहीं ॥ गाढ़ीनिद्रा झटपट जागत मूत्र पुरीष मलिन-भुवत्यागत । तीनि बात गर्द्दभसे लेहु ॥ अतिश्रमपरभी बोझ सनेहु । शीत उष्ण पर दृष्टि न राखत ॥ अति संतुष्ट बिचर वन राजत ॥ दोहा–कृष्णबिहारी शुक्रकह, येगुण बीस प्रधान ॥ येहीनिश्चय उरधरै, सो विजयी जगजान ॥ इति ॥

चौमासा

विजयी छन्द लावनी

सखिआयो मासचौमास दहै नित छाती। गयो जबसे पिय परदेश लिखी ना पाती ॥ लागो है मास अषाढ़ घटा घन छाई बिजुली चमकै चहुओर जिया डरपाई।

सखि ऐसे निठुरको जरा दर्द ना आई ॥ लव दिलसे दिया उतार सुरति बिसराई । निशिदिन ताकों मैं राह रहीन जाती ॥ गयो जबसे पिय परदेश लिखी ना पाती । सावनमें सखी न सजन हमारा आया ॥ नाजानौ किस सवतीनने है बिलमाया । शिरपरमेरे त्योहार सनूनो आया ॥ सखि सबके पिय घर आये बलम कहँ छाया । सब सखी खुशी और ऐसमें सावन गाती ॥ गयो जबसे पिय परदेश लिखी ना पाती । भादौंमैं वरसता नीर पीर तनु भारी । विन पिया दुःख हुआ न जाय सम्हारी ॥ तकते निर्मोही राह हुआ जी आरी । सुन पपिहाके वैन नैन जलजारी ॥ जो होत पतामालूम बांह गहि लाती । गयो जबसे पिय परदेश लिखी ना पाती ॥ सखि क्वार कन्तने आय दरश मोहिं दीन्हा । जो लगा-हिज्रमें तीर पीर हरि लीन्हा ॥ भरके मोतियन का थार निछावर कीन्हा । नरपति तन मन धन वारि उसीपर दीन्हा ॥ कह कृष्णबिहारी शुक्ल करी मन भाती । गयो जबसे पिया परदेश लिखी ना पाती ॥ इति ॥

वियोगमें संयोग

स०-बालम लाल विदेशगये दुखऐसी जरीं हम काम

कराकैं। जे चुरियां कर आवत नाहिंरी ते चुरियां गईं ठौर फराकैं॥ आलमलाल विसूग्त बालमबोलतबोलतही पियद्वार धराकैं। कंचुर्कीमेंकुचयों हुलसे कि गये बन्द टूटि तड़ाक तड़ाकैं॥ १॥ इति॥

गंगानाममहिमा

भ०—जो जन गंगा गंगा कहै। जनम जनमके कोटि दुष्कृत सब क्षणही माँझ दहै॥ अस्नान करत सो मन वांछित फल तत्क्षण तुग्त लहै। ब्रजपतिकी प्यारी संगमते बहु सुख देनचहै॥ १॥

सखी बनविहार

क०—यमुना तट कुंजन बीन रहीं सखियां सब फूलोंकी कलियां। यक गावत ताल बजावत हैं करतीं मिलके रंगकी रलियां॥ मृगनैनींजु आयअनेक जुरीं छबिछाय रहीं ब्रजकी गलियां। हरिचंद तहां मनमोहनजू सखि याबन आय लख्यो अलियां॥ इति॥

जलविहारलीला

कवित्त–सोरहसहस्र ब्रजबाम श्याम श्यामा रस रास बिलसाने रससाने अरसाने हैं। अति श्रम मानि आनि

यमुना नहाने शत शशि शोभा हानि पंच बाण मान भाने हैं ॥ छरिकै मिलि छैभ ही छबीले जल छलकनि हलकनि कलकि ललकि मोदमाने हैं। कंचनके कंज पुँज मानो अलि रंजनको अंजलिनमंजुमकरंदवरसानेहैं ॥ इति ॥

वनविहारलीला

धारि नारि वेष पिय प्यारी जात मारगमें छाँड़िकै भवन-कुंज सदन सिधाये हैं। आवत निहारि सामुहेते चन्द्रा-वलीको यों पंथहि बचाइके बराय नहगयेहैं ॥ पायकै लखाव भाव चतुर सयानी सखी दांव लेन चित्तमें विचारि आंख पाये हैं। को है नोखी नारि देख्यो घूंघुट उघारि दोउ भौंहन चलाय मुसकाय सकुचाये हैं ॥ इति ॥

लक्ष्मीनायणकी ध्वनि

भज श्रीमल्लक्ष्मी नारयण भज श्रीमल्लक्ष्मी नारायण। अखिल लोक पूरण विख्याता ॥ भक्त सुखद दनुजन कुलघाता। विधि हर वंदित परम प्रतापा ॥ करुणामय श्रीनारायण ॥भज०॥ जात अनेक अधम बहुतारे तारन तरन कहत हैं सारे। कृष्ण बिहारीशुक्ल प्रचारे त्राहित्राहि श्रीनारायण ॥ भज श्रीमल्लक्ष्मी नारायण० ॥ इति ॥

अथ चंद्रप्रस्तावलीला

श्रीः॥चौपाई॥शोभामेरेहरिपैंसोहै।मैंबलिबलिपटतर-कोकोहै॥मेरेश्याममनोहरजीवन।विहँसिश्यामसुखदानी॥उदयभयोशशिशरदसुहावन।लगीतातकोमातदिखावन॥देखहुश्यामचंद्रयहआवत।अतिशीतलहगतापनशावत॥चितैरहेहरिइकटकताही।करतेनिकटबुलावतवाही॥मैया वहमीठोकैखारो।देखतलगतमोहिअतिप्यारो॥देहिमँ-गायनिकटमैंलैहौं।लागीभूखचंदमैंखैहौं॥देहिवेगमैंबहुत भुखानो।मांगतहीमाँगतबिरुझानो॥यशुमतिहँसतिक रतिपछितायो।काहेकोमैंचंदर्दिखायो॥रोवतहैंहरिविन-हितेजाने।अबधोंकैसेकरिकैमाने॥त्रिविधभाँतिकरिहरि-हिभुलावै।आनबतावैआनदिखावै॥दोहा॥कहतियशोदा कौनविधि, समझाऊंअबकान्ह।भूलिदिखायोचंद्रमैं, ताहि कहतहरिखान॥सोरठा॥अनहोनीक्योंहोय, तातसुनी यहबातकहुँ।याहिखातनहिंकोय, चंद्रखिलौनाजगतको॥चौपाई॥यहैदेतनितमाखनमोको।क्षणक्षणतातदेतसो तोको॥जोतुमश्यामचंद्रकोखैहो।बहुरोफिरमाखनकहँ पैहो॥देखतरहौखिलौनाचंदा।आरिनकीजैबालगोविंदा॥मधुमेवापकवानमिठाई।जोभावैसोलेहुकन्हाई॥पाला गौंहठअधिकनकीजे।मैंबलिरिसहीरिसतनुछीजे॥खसि

खसिकान्हपरतकनियांते। देशशिकहतनंदरनियांते॥ यशुमतिकहतिकहाधौंकीजे। मांगतचंद्रकहांतेदीजे॥ तब यशुमतिइकजलपुटलीनो। करमेंलैतेहिऊंचोकीनो॥ ऐसे करिश्यामहिंबहिकावैं। आवचन्दतोहिंलालबुलावैं॥ याहींमेंतूतनुधरिआवै। तोहिंदेखिलालासुखपावै॥ हाथ लियेतोहिंखेलतरहिहै। नेकनहींधरणीपरधरिहै॥ जल पुटआनिधरणिपरराख्यो। गहिआनोशशिजननीभाख्यो ॥दोहा॥ लेहिलालयहचन्दमैं, लीनोनिकटबुलाय। रोवै इतनेकेलिये, तेरीश्यामबलाय॥ सोरठा॥ देखहुश्याम निहारि, याभाजनमेंनिकटशशि। करीइतीतुमारि, जाका रणसुन्दरसुवन ॥चौपाई॥ ताहिदेखिमुसक्यायमनोहर। बारबारडारतदोऊकर॥ चन्दापकरतजलकेमाहीं। आव तकछूहाथमेंनाहीं॥ तबजलपुटकेनीचेदेखै। तहाँचद्रप्रति बिंबनपेखै॥ देखतहँसींसकलब्रजनारी। मगनबालछबि लखिमहतारी॥तबहिंश्यामकछुहँसिमुसकाने।बहुरोमाता सोंबिरुझाने॥ ल्योंगोरीमाचंदाल्योंगो। ताहीअपनेहाथ गहौंगो॥ यहतौकलमलातजलमाहीं। मेरेकरमेंआवत नाहीं॥ बाहरनिकटदेखियतवाही। कहैतोमैंगहिल्यावों ताही॥ कहतियशोमतिसुनहुकन्हाई। तवमुखलखिसकु-चतउडुराई॥ तुमतेहिपकरनचहतगुपाला। तातेशशि

भजिगयोपताला ॥ अबतुमतेशशिडरपतभारी । कहत अहोहरिशरणतुम्हारी ॥ बिरुझानेसोयेदैतारी । लियलगायछतियांमहतारी ॥दोहा॥ लैपौढ़ायेसेजपर, हर्षियशो मतिमाय ॥ अतिबिरुझानेआजुहरि, यह कहिकहिपछिताय ॥ सोरठा ॥ करसोंठोंकिसुवाय, मधुरेस्वरगावत कछुक । उठिबैठेअतुराय, चटपटायहरिचौंकिकै ॥ इति श्रीचंद्रप्रस्तावलीला समाप्त ॥

सामुद्रिकलक्षणकथन

दोहा

हस्त पहुँच अन्तर विषे, मीनरेख जो देख। तो प्राणी ज्ञानी धनी, पुत्रवंत शुभ वेष ॥१॥ तुला ग्राम अरु वज्र जो, करमध्ये दरशाहिं । सुखी होय वाणिज्यमें, यामें संशय नाहिं ॥ २ ॥ पद्म चाप करवाल कर, अष्टकोण दरशाय। नरनारी सुख पावहीं, जीवन सफल कराय॥३॥ शंख चक्र ध्वज नासिका, जो करमध्ये होहिं। सो पण्डित जानहु अवशि, धनीवंत सो होहिं ॥४॥ करमध्ये तिरशूल जो, परै भाग्यवश आय । राज्यचिह्न यह प्रगट है, निश्चय राज्य कराय ॥ ५ ॥ अंकुश कुंडल चक्र जो, पाणिमध्य परिजायँ । निश्चय भोगै राज्य सुख, वचन

अन्यथा नायँ ॥६॥ गिरि कंकण नरमुंड सम, पाणि मध्य दरशाय। राज्य मंत्रिकर चिह्न है, निश्चय सुख सरसाय ॥७॥ सूर्य्य चन्द्र गज अश्व गृह, लता नेत्र त्रयकोन। एकहु लक्षण कर परै, सुखी होय नरतौन ॥८॥ (दौवैछंद) चक्र एक वाचाल द्वितिय गुणवंत कहावे। तीन चक्र व्यापार माहिं लक्ष्मी नर पावे॥ चार चक्र निर्धनी पंच सर्वांग विलासा। छठा चक्र रस काम सप्त बहु सुखकी आशा॥ अष्टचक्र तनु रोग नवम नृपती कहलावे। परैं चक्र दश हस्त सिद्धपदवी सो पावे॥ कृष्णविहारी शुक्ल कह्यो शिवने जो गाया। नरका दहिना हाथ नारि बायां बतलाया॥

इति सामुद्रिकलक्षण।

स्तुति मुंबादेवीजीकी

लावनी

जय जय जगदंबे दे सुख अम्बे जय बम्बे बंबा माई।
आदिशक्ति उद्भव पालन लय करनि जानि शरणे आई॥
रक्तबीज महिषासुर मर्दिनि शुम्भ दैत्य मारनिहारी।
महिरावणको किया निपाता गो द्विज भक्तन हितकारी॥
वरदायिनि वर वेद बखानी सिंहवाहिनी जग गाई। जय जय जगदम्बे दे सुख अम्बे जय बम्बे बंबा माई॥१॥

हिन्दुस्तान दक्षिणी सीमा वारिधितट विश्राम लियो। योजन वेद बनाय बंबई अजब शहर आबाद कियो॥ त्रेतामें जस रही अयोध्या और द्वारका द्वापरमें। कलियुग माहिं बंबई तैसी जाकी समता नहिं भूमें॥ सप्तद्वीपकी सम्पति छाई ऋद्धि सिद्धिकी अधिकाई। जय जय जगदम्बे दे सुख अम्बे जय बम्बे बम्बा माई॥ २॥ सुंदर धवल धाम नभचुंबत ध्वजपताक शोभा न्यारी। बीथी हाट बजार चौपथा परमपुष्ट पविकी ढारी॥ वन उपवन सब भाँति सुहावन मनभावन सुख सरसाई। गलिन २ बाजत बर बाजा अतर अरगजा बू छाई॥ द्वीप द्वीपके बसैं आदमी महिमा तीन लोक गाई। जय जय जगदम्बे दे सुख अम्बे जय बम्बे बंबा माई॥३॥ मैं भी बड़ी आश कर आया मुंबापुर माकी नगरी। रत्न तख्त शोभित जगमाता गमन करै नगरी सगरी॥ भाव भक्ति रंचक नहिं जियमें पै हियकी जाननहारी। करहु अनुग्रह अवशि दासपर प्रणतारति मेरी बारी॥ कृष्णबिहारी शुक्ल बदरकावासी से भी लवलाई। जय जय जगदम्बे दे सुख अम्बे जय बम्बे बंबा माई॥ ४॥

इति स्तुति समाप्त।

पूर्व दिशाके सुख

पुरुषउवाच॥ दोहा–रूपविशेषविशेषधन, भूमिसुहावन देश। जायकरौंयातेअबै, पूरबकोपरदेश ॥१॥ कवित्त॥ ताफतारुवाफतासुसज्जर श्रीसाफमखमलरुमकेसीपटनाना सुखदाइये। सरसकृपाणतरकसरुकमानबाण जरकसीचीरा हीराजहाँजाइलाइये ॥ सुकविग्रुपालफुलवारी धामधाम अंबश्रीफलकदंबपौंडापाननकोखाइये। बड़ेहोतकेशमिलैं तंडुलअशेष प्यारीपूरबकेदेशमेंविशेषसुखपाइये ॥ १ ॥

पूर्व दिशाके दुःख–स्त्रीउवाच–खंडन

सोरठा–लगैं चोर ठगवाइ, पेट चलै पानी लगै ॥ कीजै कबहुं न जाइ, पूरबके परदेशको ॥ १ ॥ कवित्त ॥ पानी लगि जात बहु फूलि जात गात पुनि पेट चलि जात कछु खाइ जात जबहूँ। जादू करि करिकै संभोग सुखकाज पशु पक्षी करि राखैं नारि नारिनको अबहूँ॥ ब्राह्मण वणिक मीन मांस मधु खात तेल हरद लगाय न्हात नारी नर सबहूँ॥ फांसी देकै हाल मारि डारै ठगजाल याते जैये न ग्रुपाल दिशि पूरबकी कबहूँ ॥ १ ॥

दक्षिणदिशाकेसुख

पुरुषउवाच॥ दोहा–दयामानधनमान पुनि, लोगबड़े

गुणमान ॥ यातेदक्षिणदेशको, करिये सदापयान ॥१॥ कवित्त ॥ चीराचीरसालूसे लासमलाबहारदारजरकसी काम जहाँहोतनाना भाँतिहैं ॥ सुकविगुपाललालरतनप्रवालमणि माणिकविशालमोतीमहँगीसुजातिहैं ॥ मेवाऔ मिठाईफलफूलमूलमूलगजतरुणी अनूपरूपझलकतगातहैं ॥ देखेबनैबातसदाशोभासरसात प्यारीदक्षिणदिशा केगुणकहेनहिंजातहैं ॥१॥

दक्षिणदिशाके दुःख-स्त्रीउवाच-खंडन

दोहा-दक्षिणपियसुनिकानदे, दक्षिणदक्षिणजात ॥ लक्षणलक्षणगक्षिके, लक्षणहीलगिजात ॥१॥ कवित्त ॥ घोटूलोंउघारीनिरलज्जरहैंनारी मासमदिराअहारीद्विज होइँअनाचारीहै ॥ सुक विगुपालप्याजलहसुनखातबहु लूटैंठगचोरप्रजारहैनसुखारीहै ॥ लोगनिरहेतभानिजेको व्याहिबेटी देतरीतिबिपरीतिसबदेखतमैंन्यारीहै ॥ बढ़त अगारीहोतिबड़ीबड़ीख्वारीदिशिदक्षिण मझारीजातहोत दुःखभारीहै ॥

पश्चिमदिशाकेसुख

पुरुषउवाच ॥ दोहा-राखे दक्षिणते अबै, जोदिशि

पश्चिमजात॥ ताकेअबसुनिलीजिये, प्यारीसुखअवदात॥ कवित्त ॥ लोगदयावानतियसुंदरसुजानमीठी बोलनिनि दाननीरलगैनतहां कहूँ॥ वृषभविशालऊंचेपुलकारवस्त्र त्रिविध प्रकारनहैं सूतखेजहांकहूँ॥ सुकविगुपालताततरल तुरंगमिलैमधुरमनीरभूखलगतिजहांकहूँ॥ पारनहीं लहूँजियशोचतहीरहूँप्यारी पश्चिमदिशाके सुखवरणिकहाकहूँ ॥ १ ॥

पश्चिमदिशाके दुःख स्त्रीउवाच-खण्डन

दोहा-मरतरैनिदिनवारिविन, भटकिभटकि नरनारि॥ करियेनहींपयानपिय, पश्चिमओरनिहारि ॥१॥कवित्त॥ धूरिनकेथलसावैंढोलके ढमक्केजलतरुविनथलतहांशोभा नहींपामेंहैं॥ चानररूगेहूँरसगोरसनफूलफल मोठबाजरी कोखाय दिवसवितामेंहैं॥ रहतमलीनधर्मकर्मकरिहीन लोग पहरतपीनपटऊननकेजामें हैं॥ सुकविगुपालकछु कहतनआवेजातजेतेदुखहोतसदापश्चिमदिशामेंहैं

उत्तरदिशाकेसुख

पुरुषउवाच॥ दोहा॥ हरिद्वारतेकैपरशि, बदरीनाथ केदार॥ होतकृतारथजीवयह, उत्तरखंड मझार॥ १॥

कवित्त॥ लाइचीलवंगदाखदा डिमबदामसेवसालमअंगूर पिस्ताखैयैउठिभोरको कसतूरी केसरिजावित्रीजायफल दालचीनीदेवदारुकीसुगंधिचहुँवोरको ॥ सालऔदुसाल धुस्सा नानापसमीनाओढ़ि देखतरहतआछीतियनकी मोरको ॥ कहतगुपालप्यारीसुनियेनिहोरमोपै कह्योनहीं जातसुखउत्तकीओरको ॥ १ ॥

उत्तरदिशाकेदुख- स्त्रीउवाच-खंडन

दोहा-सदाशीतभयभीत नर, व्याघ्रसिंहवृषघोर कीजै नहींपयानपिय, उत्तरदिशिकीओर॥१॥कवित्त॥ विकट पहारझारघनेसिंहस्यारनिरबा हनहींहोतरथबहलकोजामें हैं॥ गिलटीरुगिल्लर अनेकरोगहोतजहाँचारहूवरणजीव सिंहकहरामेंहैं।सुकविगुपालसदाशीतभयभीतलोग बरफ केमारे दुरेरहतगुफामेंहैं॥ राहमेंनगामेंचल्योजातननिशा मेंयातेबहुदुखपावैंजातउत्तरदिशामेंहैं ॥ १ ॥

हुलासके सुख

दोहा-बढ़ैज्योतिनैननसदा, चलैसाफसबश्वास ॥

इतनेसुखनितहोतहै, सूँघतजबैहुलास ॥१॥ कवित्त॥ साफरहैमगजसरेखमानआवैपासज्योतिबढ़िजातिनैनहो-

तपरकासके॥ सुकवि गुपालकभूशीतनसतावै आइ जाको लेतदेतलोगरा जीरहैंपासके॥ अमलनआवैकोईरोगन घटावैवा यढिगनहींआवेदामथोरेलगैंतासके॥ रुकतन श्वासजातरहैकफखाँसएते होतहैंहुलास सदासूँघतहुलासके॥ १॥

लोभके लक्षण

दोहा-लोभहि उपजत क्रोधहै, द्वेष ईर्षा मान।
मत्सर लम्पट तस्करी, लोभहिसेपहिचान॥

प्रीतिवर्णन

प्रीतितो ऐसी कीजिये, जानिपरै कछुनायँ।
ज्यों मेहदीके पातमें, लाली लखी न जायँ॥

मूर्खता

मुईचामसों चामकटावैं, भुइँपरि सँकरे सोवें।
कहैं घाघ येतीनों भकुवा, उढ़रि जायँ फिरिरोवें॥

नीति

मनुषजन्म ह्वै ऊपजो, तीनि भांतिको योग।
द्रव्योपार्जन हरिभजन, अरु भामिनिकोभोग॥

कलियुगवर्णन-कवित्त

मतिभईभ्रष्टपापछायगयोसृष्टिमांझघरतियछोड़िपर-

तियधरने लगे॥ धनवारोदेखिगुरुचेलाकोकरनलागेझग-
रिझगरिबापबेटालरनेलगे ॥ धन रोजगारकीघटाईभई
जगमांझ विनाअन्ननरसबभूखेमरनेलगे ॥ कहतगुपाल
वरषै न मेघजालयाते कलिकीकुचालते अकालपरनेलगे
॥ १ ॥ इति ॥

गर्भिणीधर्म

पुंसवन कर्म होने उपरान्त गर्भिणीकोऊंचे नीचे स्थान पर चढ़ना, उतरना, भागकर चलना, नदी तैरना, गाड़ी पर बैठकर चलना, तीक्ष्ण अर्थात् गरम औषध निरस क्षार आदि खाना, मैथुनकरना; भार उठाना ये सर्व कर्म नहीं करना चाहिये किन्तुसावधानीसे रहै, जिस्से गर्भ रक्षा होवे।

गर्भिणीप्रश्न

यदि तुमसे गर्भिणी स्त्री प्रश्न करे तो उस स्त्रीके नामाक्षर ले उनमें घोड़ाके नामाक्षर और देशके अक्षर मिलाके वर्तमान तिथि मिलावे और आठका भाग देवे जो सम अंक शेष रहें तो कन्या और विषम रहें तो पुत्र होगा।

गृहस्थाश्रमके सुख

दोहा—चारिवर्ण आश्रमनमें है सबको शिरमौर।
गृहस्थाश्रमके सदृश, कोउ न जगमें और॥

कवित्त—चारिहू वरण चारि आश्रको मूल यही, याही ते सकल अवादानी होति वस्ती है। वंशबढ़वारि ब्याह सादी भोगराग सुख, रहत हैं यामें पुण्यदान जबर्दस्ती है॥ सुकवि गुपाल याते जगतके जीमें जीव, सदा सबही की भयो करै परस्ती है। तनकी दुरुस्ती रहै धनहूँकी सुस्ती तोपै पृथिवीके माँझ सब ऊपरि गृहस्थी है॥

गृहस्थीके दुःख

दोहा-कुटुम सुशील सुपूत सुत, अनगन धनप्रभु देइ।
करनी करतबकरि कछुक, तब गृहस्थ सुख लेइ

कवित्त-राति दिनयामें कोई खरच लगेई रहैं, आयो गयो ब्याह गौन गर्मा औ बधाई है। विषयके भोग कर्म योग के वियोग योग, जिकिरि फिकिरि मारे आपनी पराई है॥ सुकवि गुपास भावभजन बनै न वामें, परचोर है सदा मोहजालमें महाई है। करत कमाईतऊ रहै हायहाई या ते, सबते सवाई दुःखदाई गृहस्थाई है॥

खेतीके सुख

दो०—गाम इजारो छोड़िकै, खेती करिहौं बाम।
सब जग जाके करनते, खातपियत निजधाम॥

कवित्त—साँझहू सबेरे दधिदूधके रहत सुख, लीयो करे स्वाद ये रसाल नई नई को। नित प्रति रहै सातौ पौनिपै हुकुम, सरकारमें रहत भलो बस्सा ठकुराईको। जीवै जगजाते जीवजंतु को कनूका मिलै, मिलै भली बात यह काम मरदईको। कहत गुपाल बीस नहकी कमाई याते सबहीमें भलो पेशो यह किसनईको॥

खेतीके दुख

दोहा—खेती करत किसानके, मोतेदुख सुनिलेउ।
हरलैकै पिय खेतमें, भूलि पाउँ मति देउ॥

कवित्त—कारी होति देह सहे शीत घाममेह नित, रहै लेह देह सुख नहीं खान पानको। बरहेमेंबासराखेब्योहरेकी आश, ईति भीतिते उदास गिनै माननईमानको। राजै देत पोता हर जोता सुख सोता नाहिं, खोता दिन योंही रहै लेश न सयानको। देहमें न चाम रहै हाथमें न दाम याते, कहत गुपाल काम कठिन किसान को॥

कालिका स्तोत्र

छप्पै—एक रदन करि वदन सदन शुभ सुवन कपर्दन। शुभ्र भाल उर माल लाल शृंगीपति नंदन॥ लम्बोदर भुज चार गात सिंदूर सुचर्चित। मनुज देव ऋषि वृद्धि सिद्धि परसिद्धि सु अर्चित॥ ईश्वरी प्रसाद अष्टांगवत द्वार परो विनवत चरण। मुहिं देहु बुद्धि तम जड़ हरो द्वैमातुर अशरण शरण॥ कवित्त—बानी महारानी सानी दानी न जहानी बीच, ध्यावत पुरानी ज्ञानी ध्यानी चित लायकै। उदित उदारता कहानी न बखानी जात रसना सिरानी शेष रहे शीश नायकै॥ हरविधि विष्णु कृष्ण जिष्णुहू लजाय रहे, महिमा अपार पार भये नहीं गायके। ईश्वरी अयान जान करौ मात बान कान, दीजै वरदान बान दाहिने हो आयकै॥

प्रभाती—जागौ श्रीआदि मातु दधिजा सकुचानी। दधिसुत छबि क्षीण भई दधिसुत गण मोदमई दधिसुत धुनि छाय रही चक्री हरषानी॥ दधि सुत पै हो सवार दधि सुत कल हीयहार दधिसुत पति खड़े द्वार दधिसुत सम बानी। दधिसुत रिपु है तयार दधिसुत करलेव धार दधिसुत जिनको अहार नाशो महरानी॥ ईश्वरी गुण

करत गान दक्षिसुत जिनको सुपान दधिजासुत सुभग यान दम्पति सुखदानी। जागौ श्रीआदि मातु दधिजा सकुचानी ॥

जय जय जय मातुआद सेवहिं सुर असुर पाद अष्ट सिद्धिदायक निजजन दयालका। शीश स्वर्ग पद पताल श्याम गात सघन बाल चंद्र भाल मुंडमाल पान जालका॥ सोहै करवर कृपाण चक्रवज्र धनुष बाण मारे खल तान तान प्रणत पालका। अनुचर ईश्वरी अनाथ ठाढ़ो दर जोर हाथ माँगै बर मुक्तिभक्ति अटल कालका॥ जय जय जय मातु आद सेवहिं सुर असुर पाद अष्टसिद्धि दायक निज जन दयालका ॥

कुंडलिया-कालीरूप करालका, उर मुंडनकी माल। मेघवर्ण नग्नांगि पटु, दश दिशि बाहु विशाल॥ दश दिशि बाहु विशाल चन्द अवतंस त्रिलोचन। तूलकेश मन मुक्ति सदा वरदा भयमोचन॥ कह ईश्वरीप्रसाद मातु जन दीन दयाली। भक्ति मुक्ति वरदेव अटल जगदम्बा काली ॥

कवान॥ अर्द्ध अंग नर आज अर्द्ध अंग मृगराज नाद मनो घन गाज क्रोधवंत विकराल। बज्जें नख चट्ट चट्ट

बोलैं दंत कट्ट कट्ट फोरै मुंड भट्ट भट्ट बहै रुधिर पनाल॥ नरसिंही रूप धार परगटि खंभ फार हिरण्यकशिपु मार रक्षजन रक्षपाल। विनय ईश्वरीप्रसाद सुनि लीजै मातु आद इतौ दीजिये प्रसाद छूटै भ्रम भवजाल॥ (शिखरणी केवल एक चौक) नमो जननी आद्या हरहु बहु बाधा सुखकरी। नमो अम्बा काली जनन रक्षपाली अघहरी॥ नमो भव अर्द्धंगी करन खलभंगी जागरी। नमो रामाश्यामा जपत तुव नामा हर हरी॥

दोहा-नमो नमो श्रीकालिका, नमो नमो महकाल।
जयतिरूप अर्द्धांगिनी, जय जय गौरि कृपाल॥

छन्दभु०॥ चिता भस्मको लेप है अंग दांयें। सजो उबटनो केशरी रंग बायें॥ यहां कासमें वस्त्र छाला कुरंगा। वहां शीश सोहै सुसारी सुरंगा॥ इतै चर्णमें पद्मको चिह्न सज्जै। उतै पांवमें पैंजना शब्द बज्जै॥

(गजल सूक्ष्म)॥ दयाली दीन प्रणपाली महाकाली कृपाली है। अभय बरदान तत्काली बहाली देनवाली है॥ मनोहर गात छबि खुश्तर पयोधर रंग अति कमतर। बराबर द्युति छटा क्योंकर दमक आनन निराली है॥ लसै दृगपट स्रवै ओदक निलय मरघट लपट झरपट।

सुभट भैरों कटक बंकट लिये सँग देत ताली है॥ धिगत त्रय नैनमें ज्वाला लसै करवाल करवाला। हिये त्रयदेव शिरमाला युगल कंकण बयाली है॥ धरे बलपुष्ट दश भारी किये शव पुश्त आधारी। भयानक घोर चिक्कारी ललल रसना निकाली है॥ कमरमें मेखला शवकर सजे आयुध दशों करवर। खड़ी रणभूमिमें धक्कर भयंकर दुष्टशाली है॥ जनहिं संकट निरखि कटपट झपट धावति तुरत शरपट। बजावत मुंड अरि फटफट पटापट देत ताली है॥

रसनिरूपण

सुरहीके भार सूधे शबद सुकीरनके,
मंदिरन त्यागि करै अनत कहूँ न गौन।
द्विजदेव त्योंही मधुभारन अपारन सों,
नेक झुकि झूमि रहे मोगरे मरुअ दौन॥
खोलि इन नैननि निहारौं तौ निहारौं कहा,
सुखमा अभूत छाय रहि प्रति भौन भौन।
चाँदनीके भारन दिखात उनयो सो चंद,
गंदहीके भारन वहत मंद २ पौन॥

बागवर्णन

सवैया

झूमें झुके तरु पुंज रसाल तमालन जालनपै द्युति साजै।
त्यों ललिते कचनार अनार प्रसूनन भार अपार जु राजै॥
कोकिल कीर कपोतनके कुल बोलत सो मधुरी धुनि छाजै।
श्रीमिथिलाधिपके बर बागमें बारहु मास बसंत विराजै॥

श्रीरामचन्द्रजीके चरण वर्णन

कवित्त

मानस महेश मानसरके सरोज मञ्जु,
वेष मति शेषके सु आनँद धरन हैं।
कहै कवि ललित सजीवनि सुजन हीके,
नीके जगहीके चारु पोषण भरन हैं॥
विपति विदारन सु तारन अहिल्या,
सुख कारन हमेश जौन आवत शरन हैं।
दारिद दरन अघ हरन बरन बर,
मङ्गल करण रामचन्द्रजीके चरन हैं॥

श्रीजानकीजीके चरण वर्णन

कवित्त

भ्राजत सभामें भरे चारुता प्रभामें अति,
मञ्जु अरविन्दवत गति अधिकारीके।
नीके सुरतीके सती भारती रतीके चित,
दान विरतीके सुमतीके व्रत धारीके॥
लालजी कहत जग सेवित प्रशंसनीय,
नित्य सुखकर हर अवधविहारीके।
चन्द द्युति मंदकर सुरवृन्द सेवनीय,
अमल अमन्द पद जनकदुलारीके॥

श्रीराम नाम वैभव

सवैया

या तन सुन्दर पाय अरे मन मूरख क्यों न भजै रघुराई। जासु सनेह किये गणिका गज गीध अजामिलने गति पाई॥ और अधीनकी कौन कथा जग जानै तरे सदनासे कसाई। नाम न भूलो छनौ मथुरा नरदेह धरेको यहै फल भाई॥

श्रीरामचन्द्रजीका व्याह बानक

कवित्त

रामचन्द्र बदन विलोकी व्याह बानकमें,
मङ्गलीक औरई उछाह सरसत हैं।
दशरथ कौशिल्या सुमित्रा कैकयीके मन,
लछिराम औरई प्रकाश परसत हैं॥
विबुध वधूटी झारैं औरही सुमन हार,
औरही अदामें अमरेश दरशत हैं।
औरही खजाने खुले अवध नगर बर,
औरै भाँति हीरालाल मोती बरसत हैं॥

श्रीरामचन्द्रजीका नेजा वर्णन

कवित्त

कौशल कुमारके शिकारमें अजब धूम,
वार पार फैलत अतङ्क भट भीर को।
लछिराम साजैं वे सहमि घन वन बीच,
मन्दर दरीन दुरैं परिहरि धीर को।

अरना वराघ बाघ फारे अध फारे परे,
हरिन हजारे भरे गरद गँभीर को।
भेजा भाल रेजालों गिरत गज भूमैं जब,
चलत मजेदार नेजा रघुवीर को॥

श्रीरामसेनापयान

भारी भालु भीर वारी कारी कपिवीर वारी,
नन्दन समीर वारी सैना जितै जितै जात।
छूटै तरुतुंग औ उतङ्ग गिरि शृंग फूटे,
छूटे बड़े दुर्गम प्रवास गढ़के सँघात॥
यार कहै कोटिन निसान संग फहरात,
चिक्करत बीरनके घहरात वज्रपात।
हहलात हेम गिरि गिरा थम्भ थहरात,
दहलात दिग्गज कमठ लोल लहरात॥

शब्दालङ्कारछेकावृत्तिअनुप्रासआदिवर्णावृत्ति

कवित्त

चौंर चारु भूधर भरत क्षितिपाल छत्र,
शत्रुहन सामुहैं शरासन सुवेलेको।

सुमन सुकण्ठ हनूमान हाथ मणि मञ्जु,
व्यजन विभीषण विलास बगरेलेको ।
रङ्गराज मैथिली महीप रामचन्द्र राजैं,
शासन सुमन्त लछिराम लहरेलेको ।
परम प्रकाशन विलासन वलित सज्यो,
सुभग सिंहासन अवध अलबेलेको ॥

अन्तवर्णावृत्ति

कवित्त

वदन सदन गुनगन परमानै ज्ञानै,
सरसनि हँसनि सँवारो अवतारों मैं ।
लछिराम धूम धाम लोचन सकोचनसु,
भौंहनके सौंहन धनुष रुख टारों मैं ॥
मैथिली अमन्द रामचन्द्र यों सिंहासन,
विलासन बगर औध नगर निहारों मैं ।
सौज श्री मनोज कर भूपर अमङ्गलीक,
मङ्गलीक मौजपर जलधर वारों मैं ॥

वृत्त्यनुप्रास

कवित्त

पारस पुरन्दर परमहंस परवीन,
धरम धुरन्धर धनी त्यों धीर कल मैं।
लछिराम ललित लहे जे लाज लाहन मैं,
विरद विशाल बगरेले बांह हल मैं॥
अवध अमर अमरावती अमन्द ओज,
कामद कला है कमनीय करतल मैं।
मंङ्गलीक मैथिली लों मोहिनीनमण्डल मैं,
राव रामचन्द्रसों न राजा रसातल मैं॥

हेतु अलङ्कार

सवैया

श्री अवतार शिरोमणि यों विरदावलि वेद पुरान सुनी मैं। सेवरी गीध अजामिलकी लछिराम कथा रही फैलि गुनी मैं॥ कौल जवाहिरी सन्तनका कब लालकी चौकी की मोल चुनी मैं। राम जो तैं न गरीबनेवाज तौ कौन गरीब नेवाज दुनी मैं॥

द्वितीय हेतु अलङ्कार

कवित्त

कौशल कलश चारु चौदहों भुवन पति,
आरत कलपतरु ऐसो कत पाऊँ मैं ।
मैथिलि लषन हनूमान अंगदादि सों हैं,
लछिराम दूजो क्यों सभासद गनाऊँ मैं ।
असहन पीरके गँभीर ग्रह दोषन मैं,
वारन उवारन विरद गोहराऊँ मैं ॥
दानी दीनबन्धु रावरे सों कौन रामचन्द्र,
जाके दरबार दौरि दरद सुनाऊँ मैं ॥

विभावना अलंकार

भूषण वसन वारे वलकल डारे अङ्ग,
रोम रोम अनुरूपे रूपके शहर हैं ।
जटाजूट शिखर त्रिपुण्ड दरिमित भाल,
परम प्रतापवान जगर मगर हैं ।
दल दूब आसन सिंहासन सों भासमान,
लछिराम नाम रघुवीर ब्रह्मवर हैं ।

श्याम घन वरन अकेले आभरन भूमि,
परनकुटीमें ये कहांके कलाधर हैं ॥

असङ्गति अलंकार

कवित्त

दिग्गज नगारे देव गरजत आपही तैं,
सगुन शची त्यों गौरी पूजन करति हैं।
लछिराम सातों द्वीप सुन्दरी सँवारैं केश,
असुरकी बामैं बन दावालों जरति हैं।
छीर भरे सागर सरित सरितान मौलि,
मन्द मधु मालती समीरहीं हरति हैं।
अवध अमन्द रामचन्द्र अवतार हेत,
भाँवरे दिनेश की दिगङ्गना करति हैं ॥

अधिक अलंकार

कवित्त

उन्नत पहार नदी नदन अपारन को,
धौल करि बिरद बहाली बगरत है ॥

लछिराम देव नर देव सन्त घन बन,
पावन परम सिरो आनन्द भरत है ॥
बिरद बितानमें महीप रामचन्द्र दीप-
द्वीप कलाधरलों कुतूहल करत हैं ।
फैल्यो छीर-सागर-तरङ्ग-सो तिहारो यश,
छोरमें दिगन्तनके छलक्यो परत है ॥

अन्योन्यालंकार

सवैया

वै उनके धनुबान सँवारिकै राखत सामुहैं मौज गँभीरके। वै लछिराम उमाहन में कलकोरैं निहारत छोरैं मनीरके॥ वै उनके मुख हेरि भरैं गरे माल घने मुकताहल हीरके। भाग भरे सब लोग सराहत आनँद लक्खन श्रीरघुवीरके ॥

यथासंख्यालंकार

कवित्त

मङ्गलीक चरन करन अधरन चढ़ी,
लालिमा गहर गुण कोमल बटोरके ।
लछिराम जंघ भुजदंडन प्रचण्ड उर,
बिरचे कठोर सान अजब हिलोरके ॥

भुजमूल भाल चन्द्रवदन विलास हास,
परम प्रकाश पुञ्ज रस वीर बोरके।
भौंहैं भङ्ग लोचन तिरीछे जुलफनवारे,
बार घुँघुरारे कारे लखन किशोरके॥

परिसंख्याअलंकार

कवित्त

वन्दन वलित बेस बगर बिहद मौलि,
कुण्डलित शुण्ड रद मद के प्रचार में।
वरन गनेश मणिमण्डित रतन झूल,
झूमिकै चलत हैं मलिन्द झनकार मैं॥
लछिराम रावरे मतङ्गन पै रामचन्द्र,
वै रही प्रभा जो गज रथके अगार मैं।
विधि विकरार मैं न दिग्गज कुमार मैं,
न कज्जल पहार मैं न घन बन भार मैं॥

सन्देहालंकार

कवित्त

वार मैं तिरीछी द्वैपलाकै उतरति पार,
कैधों या फनाली पन्नगीकी झलाझल है।
लछिराम कैधौं प्रलै बाम्सर प्रणाली जोर,
जौहर जमाली पाली काल करतल है॥

रावण समर मैं महीप रामचन्द्र कर,
कैधौं या कृपाण ज्वालामुखीकी सकल है ।
असल कुमारी बडवानल प्रचण्ड कैधौं,
बारहो कलाके मारतण्डकी नकल है ॥

सम्भावना अलंकार

बरवै

रामचन्द्र दल-महिमा, तब कहि जात ।
जो कहुँ शारद कोटिन, मुख जल जात ॥

लोकोक्ति अलंकार

बरवै

छोड़ि मानसर मञ्जुल, लघु सर जात ।
राजहंस तजि मोती, कांकर खात ॥ १ ॥

अमृतध्वनि

सजत चारु चतुरंगिनी रामचन्द्र भूपाल ।
खलभल फैलत असुरपुर छुट्टत गढ़ विकराल ॥
छुट्टत गढ़ विकरालद्दश दिगपालह्लकत ।
फुट्टत खलदल भालग्गज मतवालह्लकत ॥
सग्गस्सुवन समीर लग्वन गम्भीरग्गज्जत ।
बज्जत नवल निसानस्सुभट कृपानस्सज्जत ॥

श्रीकृष्णचन्द्रजीका नखशिख वर्णन

कवित्त

नखन पै नखत तरुणकञ्ज पायन पै,
रम्भखम्भ जानु पै मृगेन्द्रलोनी लक पै ।
उदर पै पान कण्ठ पै कपोत रंगपाल,
चिबुक रसाल छटा दंतन दमंक पै ॥
बानि बिम्ब मुकुर कपोलन पै नासा कीर,
नैनन पै खञ्जन कमान भौंह बंक पै ।
भाल पै मयंक भाग कोटि मारतण्ड वारौं,
मुकुट छबानि झला झलकी झमंक पै ॥

श्रीकृष्णचन्द्रछबिवर्णन

कवित्त

नव घन वारि डारौं श्याम रंग अंगन पै,
वारौं छबि पुञ्ज मोर चन्द्रकी छटान पै ।
नैनन पै कञ्ज खञ्ज मीन मृग वारि डारौं,
जगत लोनाई वारौं लाल अधरान पै ॥
नासिका पै कीर अलि अवलि सु भौंहन पै,
वारौं अहिवृन्द केश वेष लहरान पै ।
सातौ स्वर तीनि ग्राम बांसुरीकी तानन पै,
कोटि काम वारि डारौं मृदु मुसक्यान पै ॥

श्रीराधिकाजीका ध्यान

सवैया

भूषन भारे सँवारे जराऊ जिन्हैं लखि तारे लगैं अति फीके। त्यों द्विजदेव जू आननकी छबि अंग सबै सरसाय शशीके॥ ताहू पै भानु प्रभा निदरे लसैं चञ्चल कुंडल कानन नीके। मोहमई तम क्यों न मिटै इमि ध्यान धरे वृषभानु ललीके॥

श्रीराधाकृष्ण सनेहवर्णन

सवैया

दोऊ दुहुँनको हेरत हैं मुख, दोऊ दुहूँन हरा पहिरावैं।
दोऊ दुहूँनको साजैं शृंगार, दुहूँनपै दोऊ सुगन्ध लगावैं॥
यों अनुराग दुहूँ उमड़चो, लछिराम दुहूँनपै आनँद भावैं।
राधिका गोकुलचंदकी रीति, प्रतीति औ प्रीति लखे बनि आवैं॥

अधर वर्णन

दोहा

तेरस दुतिया दुहुँन मिलि, एक रूप निज ठानि।
भोर सांझ गहि अरुणता, भये अधर तुव आनि॥

रदन वर्णन

सवैया

केते कहैं मुकताहलकी लरैं, कोऊ सुहीरकनी सनमाने।
कोऊ कहैं कछु टोनेके बीज ये, चन्द्रिका चूर किते परमाने॥
ये लछिराम न मो मनमें बसैं, शारद या समता अनुमाने।
शोधिके मार मनोहर मंत्र, धरे अरविन्द अनारके दाने॥

प्रेमतरंग

कवित्त

एरी आजु कालिह सब लोक लाज त्यागि,
दोऊ सीखैं हैं सबै विधि सनेह सरसाइबो।
यह रसखानि दिन द्वैमें बात फैलि जैहै,
कहांलों सयानी चन्द हाथन छिपाइबो॥
आजु हौं निहार्‌यो वीर निप कालिन्दितीर,
दोउन सों दोउनको मुख मुसक्याइबो।
दोऊ परैं पैयां दोऊ लेत हैं बलैयां उन्हैं,
भूलि गईं गैयां उन्हैं गागरी उठाइबो॥

उद्योग

दोहा

भरत पेट नट निरत कै, डरत न करत उपाय।
धरत बरतपर पायँ अरू, परत बरत लपिटाय॥

पुरुषार्थ

दोहा

दुख सुख सब कहँ परत है, पौरुष तजहु न मीत ।
मनके हारे हार है, मनके जीते जीत ॥

शिक्षा

कवित्त

याहि मति जानौ है सहज कहै रघुनाथ,
अतिही कठिन रीति निपट कुढंगकी ।
याहि करि काहू काहू भांतिसों न कलपायो,
कलपायो तन मन मति बहुरंगकी ॥
औरहू कहौं सो नेक कान देके सुनि लीजे,
प्रगट कही है बात वेदनके अंगकी ।
तब कहूँ प्रीति कीजे पहिले तैं सीख लीजे,
बिछुरन मीनकी औ मिलन पतंगकी ॥

बसन्तबिरहनी

कवित्त

कुञ्जनमें खञ्जनकी चलनि विलोकतहीं,
दृग अरविन्दनकी आभा दरसाय जात ।

देवकीनंदन कोंरैं फिरि नहिं भूलैं मोहिं,
वाही बानिहीमें कोर कठिन सताय जात ॥
कैसे जियों आली बनमाली बिन फागुनमें,
देखतहीं रंग अंग अंग पियराय जात।
भाय जात श्यामसुधि कालिंदी विलोकतही,
छाय जात मैन पीर आंसू नैन आय जात ॥

विषाद

कवित्त

दारिद विदारिबेकी प्रभुको तलास तौ,
हमारे इहां अनगन दरिदकी खानि है।
अघके शिकारी जो है नजरि तिहारी तौ पै,
हौंहूँ मन पूरन अघन राख्यो ठानि है ॥
दास निज सम्पति सुसाहेबके काज आये,
होत हरषित पूरो भाग अनुमानि है।
अपनी विपतिको हुजूर हौं कहत लरि,
रावरेकी विपति विदारिबेकी बानि है ॥

निर्वेद

सवैया

या लकुटी अरु कामरियापर, राज तिहूँ पुरको तजि डारौं। आठहु सिद्धि नवो निधिके सुख, नन्दकी गाय चराय बिसारौं॥ नैननसों "रसखानि" जबै, ब्रजके बन बाग तड़ाग निहारौं। कोटिक वे कलधौतके धाम, करीलकी कुञ्जन ऊपर वारौं॥

समाप्त.

हमारी सभी पुस्तकें मिलने के स्थान :—

१. खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेंकटेश्वर प्रेस, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, सातवीं खेतवाड़ी, खम्बाटा लेन, बम्बई–४०० ००४.

२. गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास, लक्ष्मीवेंकटेश्वर स्टीम् प्रेस व बुकडिपो, अहिल्याबाई चौक, कल्याण जि. ठाणे (महाराष्ट्र)

३. खेमराज श्रीकृष्णदास चौक, वाराणसी (उ. प्र.)

मुद्रक एवं प्रकाशकः
खेमराज श्रीकृष्णदास,
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, बम्बई-४०० ००४